हिंदी पुस्तक–4

(प्रथम भाषा)

(चौथी कक्षा के लिए)

H4I6H9

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ

ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर

© पंजाब सरकार

संस्करण 2022-23................................ 4,000 प्रतियां

All rights, including those of translation, reproduction
and annotation etc., are reserved by the
Punjab Government.

सम्पादक : शशि प्रभा जैन
डॉ॰ सुनील बहल

चित्रकार : गुरदीप सिंह दीप

चेतावनी

1. कोई भी एजेंसी-होल्डर अधिक पैसे लेने के उद्देश्य से पाठ्य-पुस्तकों पर जिल्दबंदी नहीं कर सकता। (एजेंसी-होल्डरों के साथ हुए समझौते की धारा नं. 7 के अनुसार)
2. पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों के जाली और नकली प्रकाशन (पाठ्य-पुस्तकों) की छपाई, प्रकाशन, स्टॉक करना, जमाखोरी या बिक्री आदि करना भारतीय दंड प्रणाली के अंतर्गत गैरकानूनी जुर्म है।

   (पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की पाठ्य-पुस्तकें बोर्ड के 'वाटर मारक' वाले कागज़ के ऊपर ही मुद्रित की जाती हैं।)

ਸਮੱਗਰ ਸਿੱਖਿਆ ਅਭਿਆਨ
ਪੜ੍ਹੋ ਸਾਰੇ ਵਧੋ ਸਾਰੇ

ਸਿੱਖਿਆ ਅਤੇ ਭਲਾਈ ਵਿਭਾਗ, ਪੰਜਾਬ ਦਾ ਸਾਂਝਾ ਉਪਰਾਲਾ

ਇਹ ਪੁਸਤਕ ਵਿਕਰੀ ਲਈ ਨਹੀਂ ਹੈ।

सचिव, पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड, विद्या भवन, फेज-8, साहिबज़ादा अजीत सिंह नगर-160062 द्वारा प्रकाशित एवं **मैस. न्यू सिमरन ऑफसैट प्रिंटर्ज़,** जालन्धर द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

गत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के ढाँचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के विभिन्न प्रयास हो रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के अनुसार बाल-केंद्रित शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी प्रयत्न को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूल के जीवन को सामाजिक जीवन से जोड़ा जाये। इसके लिए ज़रूरी है कि हम सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को भागीदार बनायें, उसकी कल्पनाशीलता को विकसित करें तथा वह सीखे हुए ज्ञान को जीवन से जोड़कर अनुभव करे।

पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड ने अपने इस उत्तरदायित्व को समझते हुए आधुनिक शैक्षिक आवश्यकताओं के आधार पर हिंदी (प्रथम भाषा) के प्राइमरी स्तर की पाठ्य-पुस्तकों के नवीकरण की योजना प्रवेश वर्ष 2007 से बनायी हुई है। पहली, दूसरी और तीसरी कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए नई पाठ्य-पुस्तकें लागू की जा चुकी हैं।

हस्तीय पाठ्य-पुस्तक हमारा चतुर्थ प्रयास है। इस पाठ्य-पुस्तक में तृतीय प्रयास को आगे बढ़ाया गया है। पाठों का चयन बच्चों के मानसिक एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप किया गया है। पाठ्य-पुस्तक के विस्तृत अभ्यास भाषायी ज्ञान देने के साथ-साथ बच्चों की सूझ-बूझ, रचनात्मक क्षमता एवं कल्पनाशीलता को विकसित करने में सहायक होंगे। अभ्यास और प्रयोग के माध्यम से बच्चों को व्याकरण के बिंदु रोचक ढंग से समझाये गये हैं।

पाठ्य-पुस्तक को आकर्षक रूप देने में चित्रकार श्री अमरजीत सिंह वालीया ने अपनी कलात्मक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए खूबसूरत चित्र तैयार किये हैं जो बच्चों में पुस्तक के प्रति रोचकता बढ़ाने में सहायक होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमें पूर्ण आशा है कि यह पुस्तक भाषा शिक्षा के मापदंडों पर खरी उतरेगी और विद्यार्थियों में मातृभाषा का ज्ञान बढ़ाने में सहायक होगी। फिर भी, पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए क्षेत्र से आए सभी सुझाव बोर्ड द्वारा सादर स्वीकार किये जायेंगे।

चेयरमैन
पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड

सीखने के संप्राप्तियाँ
सुनना और बोलना

- दूसरों द्वारा कही जा रही बात को ध्यान से सुनने में दिलचस्पी दिखाते हैं। जैसे-सिर हिलाकर समझ में आने को संकेत देते हैं।
- चित्रों और रचनाओं को देखकर अनुमान लगाते हुए अपनी प्रतिक्रिया देने की कोशिश करते हैं।
- हिंदी में सुनी गई बातों को अपनी भाषा में कहने का प्रयास करते हैं।
- छोटी-छोटी कविताओं, कहानियों को आनंदपूर्वक सुनते हैं। अपनी यात्रा में कविताओं, कहानियों को कहने की कोशिश करता हैं।
- पंजाबी तथा हिंदी ध्वनियों की समानता-भिन्नता को सुनकर बोलने की कोशिश करते हैं।
- सरल शब्दों को बोलने की कोशिश करते हैं।
- पंजाबी तथा हिंदी की मात्राओं के अंतर को समझकर बोलने की कोशिश करते हैं।
- पंजाबी तथा हिंदी में प्रयुक्त होने वाले समान शब्दों की समानता एवं भिन्नता को समझने की कोशिश करते हैं।
- रिक्त स्थानों की पूर्ति द्वारा बोलकर शब्द बनाते हैं। जैसे- क.........म = कलम आदि।
- छोटे-छोटे सरल वाक्यों को सोचकर धीरे-धीरे बोलते हैं।
- पाठ्य-सामग्री को सुनकर बोलने की कोशिश करते हैं।

पढ़ना और लिखना

- हिंदी पढ़ने के प्रति उत्साहित रहते हैं।
- चिंत्रों के आधार पर हिंदी वर्णो को पहचानकर पढ़ते हैं।
- सरल शब्दों को जोड़कर पढ़ने की कोशिश करते हैं।
- वर्णो से मिलकर बने शब्दों को धीरे-धीरे पढ़ते हैं।
- हिंदी तथा पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को पढ़कर समझने की कोशिश करते हैं।
- छोटे-छोटे सरल वाक्यों को पढ़ते हैं।
- पाठ्य-सामग्री में दिए गए वाक्यों को देखकर अनुमान लगाते हुए पढ़ते हैं।
- रिक्त स्थानों की पूर्ति करके शब्द-निर्माण करते हैं। जैसे-ई .... = ईख।
- पाठ्य-सामग्री को पढ़ने की कोशिश करते हैं।
- हिंदी लिखने में उत्साह दिखाते हैं।
- चित्रों, दी गई रेखाओं/ आकृतियों को देख-पहचानकर वर्णो को लिखने की कोशिश करते हैं।
- शब्दों को लिखने की कोशिश करते हैं। वर्णो से मिलकर बने शब्दों को धीरे-धीरे लिखते हैं।
- हिंदी-पंजाबी की समान ध्वनियों, मात्राओं को लिखकर समझने की कोशिश करते हैं। जैसे-ग-**ग**, ट-**ट**, ठ-**ठ**, आदि ध्वनियाँ और ि-ि, ी-ी, े - े, ै -ै आदि मात्राएं।
- छोटे-छोटे सरल वाक्यों को धीरे-धीरे लिखने की कोशिश करते हैं।
- पाठ्य-सामग्री को देखकर और समझकर लिखते हैं।

विषय- सूची

पाठ संख्या	पाठ	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	सुबह (कविता)	संकलित	1
2.	अम्मा-अम्मा	'तेनालीराम के रोचक किस्से' से संकलित	5
3.	काबुली वाला	रवीन्द्रनाथ टैगोर	10
4.	मदन लाल ढींगरा	संकलित	17
5.	बरगद- सा पिता (कविता)	सुधा जैन 'सुदीप'	23
6.	सच-झूठ का निर्णय	'जीवन की झाँकियाँ' से संकलित	26
7.	जल-संरक्षण	डॉ॰ सुनील बहल	31
8.	बलिदान की लाली	संकलित	36
9.	अगर न नभ में बादल होते? (कविता)	संकलित	42
10.	रक्षा में हत्या	संकलित	45
11.	पेंसिल की आत्मकथा	कंचन जैन	53
12.	भाषा की रेल	'चुने हुए बाल-एकांकी' से संकलित	60
13.	मैं भी पढ़ने जाऊँगी (कविता)	विनोद शर्मा	69
14.	भगत पूरण सिंह	संकलित	73
15.	दो बैलों की कथा	प्रेमचन्द	77
16.	रक्षा-बंधन	डॉ. सुनील बहल	83
17.	शहीद (कविता)	कंचन जैन	87
18.	टेलीविज़न	शिव शंकर	90
19.	हृदय परिवर्तन	डॉ. मीनाक्षी वर्मा	94
20.	प्रिय लोक-खेलें (कविता)	तरसेम	99
21.	जीवन का लक्ष्य	डॉ. मीनाक्षी वर्मा	105

पाठ-1

सुबह

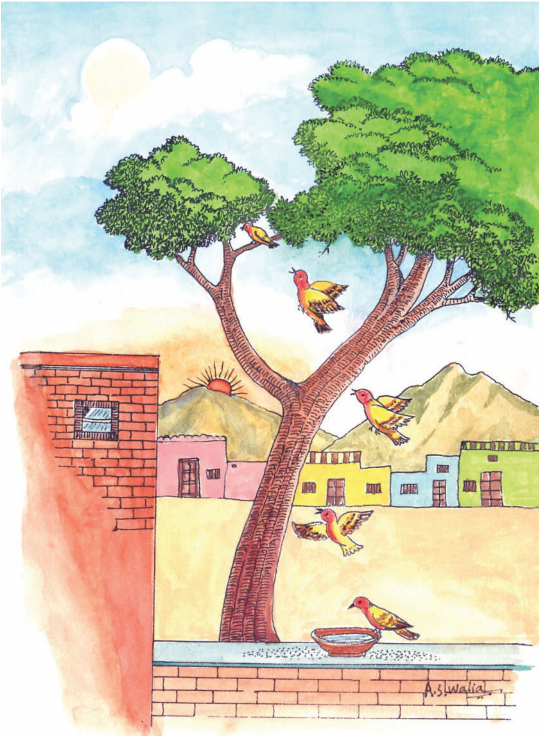

सूरज की किरणें आती हैं,
सारी कलियाँ खिल जाती हैं,
अंधकार सब खो जाता है,
सब जग सुंदर हो जाता है।

चिड़ियाँ गाती हैं मिलजुल कर,
बहते हैं उनके मीठे स्वर,
ठंडी-ठंडी हवा सुहानी,
चलती है जैसे मस्तानी।

यह प्रातः की सुख-बेला है,
धरती का सुख अलबेला है,

नई ताज़गी, नई कहानी,
नया जोश पाते हैं प्राणी।

खो देते हैं आलस सारा,
और काम लगता है प्यारा,
सुबह भली लगती है उनको,
मेहनत प्यारी लगती जिनको।

मेहनत सबसे अच्छा गुण है,
आलस बहुत बड़ा दुर्गुण है,
अगर सुबह भी अलसा जाए,
तो क्या जग सुंदर हो पाए!

अभ्यास

शब्दार्थ

अंधकार	=	अँधेरा	जग	=	संसार
सुहानी	=	अच्छी लगने वाली	मस्तानी	=	मस्त होकर
अलबेला	=	अनोखा	आलस	=	आलस्य
दुर्गुण	=	बुराई, बुरा गुण			

बताओ

1. सूरज निकलने पर क्या होता है?
2. सुबह के समय चिड़ियाँ क्या करती हैं?
3. सुबह के समय लोगों को कैसा लगता है?
4. मेहनती लोगों को सुबह क्यों अच्छी लगती है?
5. सुबह के बारे में अपने शब्दों में पाँच वाक्य लिखो।

पंक्तियाँ पूरी करो

मेहनत सबसे अच्छा गुण है,
__________ बहुत बड़ा _________है,
अगर सुबह भी ____________,
जो क्या _______________ !

वाक्यों में प्रयोग करो

अंधकार : ____

जग : ____

अलबेला : ____

दुर्गुण : ____

मेहनत : ____

सरलार्थ करो

यह प्रातः की सुख-बेला है,
धरती का सुख अलबेला है,
नई ताज़गी, नई कहानी,
नया जोश पाते हैं प्राणी।

बहुवचन रूप लिखो

कली = कलियाँ

चिड़िया = ____________

कहानी = ____________

उल्टे अर्थ वाला शब्द मिलाओ

सुख	कुरूप
अंधकार	अवगुण
आलस	सद्गुण
सुंदर	दु:ख
गुण	प्रकाश
दुर्गुण	मेहनत

दिये गये शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द सुबह के चित्र में से ढूँढ़कर लिखो

सूरज = रवि

अंधकार = __________

जग = __________

हवा = __________

प्रातः = __________

कहानी = __________

धरती = __________

'दुर्गुण', 'अलबेला' शब्द क्रमशः दुर् + गुण और अल + बेला से मिलकर बने हैं। 'दुर्' और 'अल' शब्दांश लगाकर नये शब्द बनाओ

दुर् + गति =	__________	अल + बत्ता =	__________
दुर् + दशा =	__________	अल + गरज़ =	__________
दुर् + जन =	__________	अल + मस्त =	__________

कुछ करिए : 1. 'सुबह' के बारे में कोई अन्य कविता ढूँढ़कर कक्षा में सुनाओ।

2. सुबह का दृश्य दर्शाता चित्र बनाओ और उसमें रंग भरो।

अध्यापन संकेत : अध्यापक विद्यार्थियों को विद्या के महत्व के बारे में बताए कि विद्यार्थिनः कुतो सुखं, सुखार्थिनः कुतो विद्या अर्थात् विद्यार्थी को सुख कहाँ और सुखार्थी (सुख चाहने वाले) को विद्या कहाँ।

पाठ-2

अम्मा-अम्मा

एक दिन राजा कृष्ण देव राय के दरबार में कोई विद्वान आया। वह विद्वान अपनी विद्वता के लिए दूर-दूर तक मशहूर था। उसने राजा को पहले अपना परिचय दिया, फिर यह कहा कि- ''मैंने सुना है- आपके दरबार में विद्वानों की कमी नहीं है।''

''जी हाँ ! मैं अपने विद्वानों की बुद्धिमत्ता पर गर्व करता हूँ।'' महाराजा ने कहा।

''महाराज ! मैं कई भाषाओं का प्रकांड पंडित हूँ। क्या आपका कोई विद्वान मेरी मातृभाषा के बारे में बता सकता है?''

इतना कहते ही उसने मराठी, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ जैसी कई भाषाओं में अपना भाषण दिया। राजा को उसकी योग्यता पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने सोचा कि इसका तो कई भाषाओं पर पूर्ण अधिकार है। ऐसे में इसकी मातृभाषा के बारे में क्या कहा जा सकता है ?

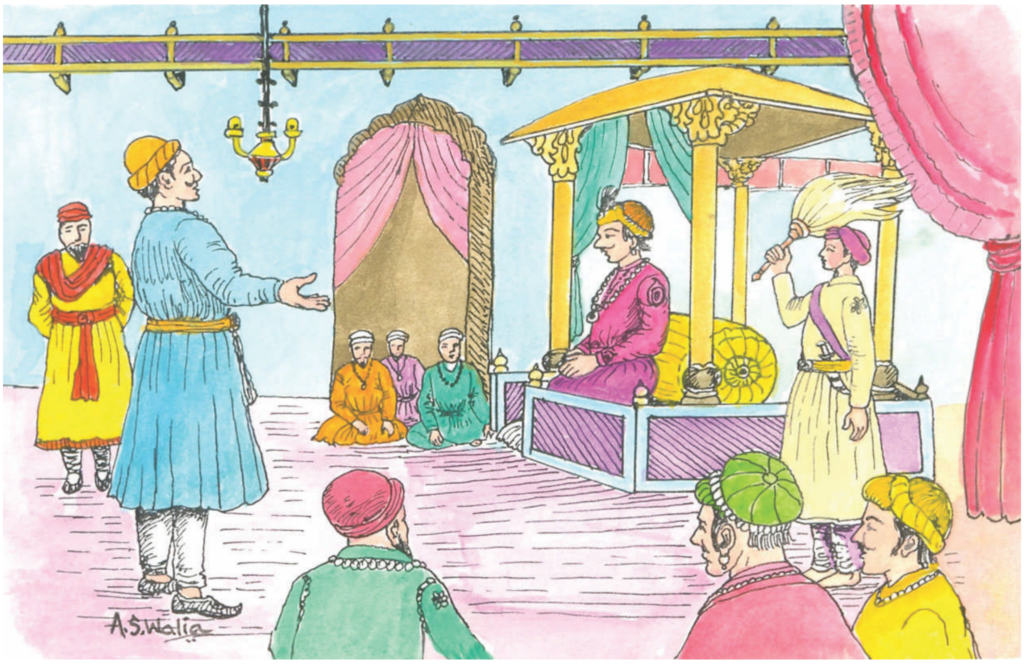

''बताइये महाराज! मेरी मातृभाषा क्या है?'' उस विद्वान ने राजा से कहा। दरबार में कुछ देर तक खामोशी छाई रही। राजा ने अपने एक विद्वान तेनालीराम की ओर देखा। तेनालीराम ने विनयपूर्वक राजा से कहा- ''महाराज! दरबार में आये विद्वान अतिथि की सेवा करने का मुझे एक मौका प्रदान करें और उन्हें अतिथि गृह में ठहराने की अनुमति दें।''

तेनालीराम के कथनानुसार राजा ने वैसा ही किया। विद्वान को अतिथि-गृह में ठहराया गया। तेनालीराम उनकी सेवा में जुट गया।

एक दिन विद्वान किसी वृक्ष के नीचे आसन जमाकर बैठ गये। तेनालीराम उनका पैर स्पर्श करने आया और उसने उनके पैर में काँटा चुभो दिया। विद्वान छटपटाते बोला- "अम्मा-अम्मा!" दर्द के मारे वह कराहने लगा था। तेनालीराम ने उसके उपचार के लिए वैद्य जी को बुलाया। वैद्य जी ने उसे दवा दी। जब दरबार लगा तो विद्वान को वहाँ उपस्थित होना पड़ा। उसने महाराज से कहा- "मुझे मेरे सवाल का जवाब कब मिलेगा महाराज? कौन बतायेगा कि मेरी मातृभाषा क्या है?"

इतने में तेनालीराम अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ-"महाराज! हमारे विद्वान अतिथि की मातृभाषा तमिल है।"

"ये आपको कैसे पता चला?" महाराज के बोलने से पहले ही वह विद्वान बोल पड़ा।

"अतिथि महोदय! व्यक्ति जब दुःख अथवा संकट में होता है, तो उसकी ज़ुबान पर मातृभाषा के शब्द आ ही जाते हैं। जैसे कल मैंने जब आपके पैर में काँटा चुभाया तो दर्द से कराहते हुए आपने अम्मा-अम्मा कहा। इसी से मैंने अनुमान लगा लिया कि आपकी मातृभाषा तमिल है।" तेनालीराम ने कहा।

"लेकिन आपने मेरे पैर में काँटा क्यों चुभाया था?"

"यही जानने के लिए। मुझे माफ़ कर देना अतिथि महोदय।"

"मैं मान गया कि आप बहुत बड़े विद्वान हैं।"

इतना कहने के बाद अतिथि ने राजा से कहा- "महाराज! तेनालीराम ने मेरे प्रश्न का सही जवाब दिया है। मैं उनके जवाब से संतुष्ट हूँ।"

यह सुनते ही महाराज की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने पुरस्कार स्वरूप तेनालीराम को अपने गले का हार भेंट किया। दरबार में उपस्थित सभी लोग तेनालीराम के बुद्धि चातुर्य की प्रशंसा करने लगे।

अभ्यास

शब्दार्थ

विद्वता	=	लियाकत, पांडित्य	मातृभाषा	=	अपने घर में बोली जाने वाली भाषा
प्रकांड	=	उत्तम, श्रेष्ठ	कराहना	=	आहें भरना

पंडित	=	विद्वान	पुरस्कार	=	इनाम
गृह	=	घर	उपस्थित	=	हाज़िर
उपचार	=	इलाज	चातुर्य	=	चतुराई

बताओ

(क) राजा कृष्णदेव के दरबार में कौन आया?

(ख) विद्वान अपनी किस बात के लिए मशहूर था?

(ग) विद्वान ने राजा से क्या प्रश्न किया?

(घ) तेनालीराम ने विद्वान के पैर में काँटा क्यों चुभाया?

(ङ) तेनालीराम ने कैसे पता लगाया कि विद्वान की मातृभाषा तमिल है?

(च) तेनालीराम को राजा से क्या इनाम मिला?

विपरीत अर्थ वाले शब्द चुनकर लिखो

अनुमान	–	**यकीन**	प्रशंसा	–	________
खामोशी	–	________	उपस्थित	–	________
संतुष्ट	–	________	पंडित	–	________
सवाल	–	________	पुरस्कार	–	________

ये वाक्य किसने, किससे कहे

		किसने कहा	किससे कहा
1.	मैंने सुना है– ‘‘आपके दरबार में विद्वानों की कमी नहीं है।’’	________	________
2.	‘‘जी हाँ, मैं अपने विद्वानों की बुद्धिमत्ता पर गर्व करता हूँ।’’	________	________
3.	‘‘बताइए महाराज ! मेरी मातृभाषा क्या है? ’’	________	________
4.	‘‘महाराज ! हमारे विद्वान अतिथि की मातृभाषा तमिल है।’’	________	________
5.	‘‘लेकिन आपने मेरे पैर में काँटा क्यों चुभाया था?’’	________	________

बच्चों! आप जानते हो कि बोलते समय अपने भावों को व्यक्त करने के लिए वाक्य के बीच में अथवा अंत में हम कुछ समय के लिए रुकते हैं। इस रुकने को ही ‘विराम’ कहते हैं। अत: विराम को प्रकट करने के लिए हम जिन ‘चिह्नों’ का प्रयोग करते हैं, उन्हें ‘विराम चिह्न’ कहते हैं।

ऊपर लिखे वाक्यों में बॉक्स में दिये चिह्नों को ध्यान से देखो

(।) पूर्ण विराम का चिह्न है, जो वाक्य के समाप्त होने पर लगाया जाता है।

(,) अल्प विराम का चिह्न है। जहाँ हम थोड़े समय के लिए रुकते हैं, वहाँ यह चिह्न लगाया जाता है।

(?) प्रश्न वाचक चिह्न है। यह चिह्न पूर्ण विराम के स्थान पर उन वाक्यों के अन्त में लगता है जहाँ प्रश्न पूछा गया हो।

(" ") उद्धरण चिह्न है। जब हम किसी के कथन या वाक्य या उक्ति को ज्यों का त्यों लिखते हैं तब यह चिह्न कथन/वाक्य के पूर्व तथा बाद में लगता है।

(-) निर्देशक चिह्न है। वाक्य में कहा के बाद, उदाहरण या जैसे के बाद इसका प्रयोग किया जाता है।

(!) विस्मयादि बोधक चिह्न है। हर्ष, शोक, भय आदि मन के भावों को प्रकट करने के लिए यह चिह्न संबोधन के बाद लगाया जाता है।

इन शब्दों के समानार्थी शब्द चुनकर लिखो

1.	राजा	–	**महीप**	**नरेश**	**नृप**
2.	गर्व	–	________	________	________
3.	वृक्ष	–	________	________	________
4.	पैर	–	________	________	________
5.	पुरस्कार	–	________	________	________
6.	दु:ख	–	________	________	________
7.	अतिथि	–	________	________	________

मेहमान, कष्ट, पाँव, वेदना, मान, पादप, नाज़, उत्कर्ष, पेड़, चरण, अभ्यागत, तरु, इनाम, पग, आगंतुक, सम्मान, पीड़ा, पारितोषिक

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. **कृष्णदेव विजयनगर** में रहते थे।
2. **तेनालीराम** को **हार** भेंट में दिया गया।
3. **दर्द** के मारे वह कराहने लगा।

ऊपर लिखे वाक्यों में '**कृष्णदेव**', '**तेनालीराम**' व्यक्तियों के नाम हैं। '**विजयनगर**' एक स्थान का नाम है। '**हार**' एक वस्तु का नाम है तथा '**दर्द**' एक भाव का नाम है। **अत: किसी व्यक्ति, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।**

इस पाठ में 'राजा', 'भाषा', 'मराठी', 'तमिल', 'वृक्ष', 'पैर', 'काँटा', 'योग्यता', 'खुशी' आदि शब्द भी किसी न किसी के नाम को प्रकट कर रहे हैं। **ऐसे शब्द जो किसी के नाम को बताते हैं, संज्ञा कहलाते हैं।**

इन वाक्यों में से ऐसे शब्दों को रेखांकित करो जो संज्ञा शब्द हों

1. तेनालीराम उनकी सेवा में जुट गया।
2. आपने मेरे पैर में काँटा क्यों चुभाया?
3. उसने मराठी, तमिल, तेलुगु और कन्नड़ भाषाओं में अपना भाषण दिया।
4. व्यक्ति जब दु:ख अथवा संकट में होता है, तो उसकी जुबान पर मातृभाषा के शब्द आ ही जाते हैं।

सोचिए और लिखिए

1. क्या आप तेनालीराम द्वारा विद्वान को दिए गए जवाब से संतुष्ट हैं?
2. यदि आप तेनालीराम की जगह होते तो विद्वान के सवाल का क्या जवाब देते?

अध्यापन संकेत : 1. अध्यापक विद्यार्थियों को तेनालीराम, अकबर, बीरबल आदि की कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करे ताकि उनकी बौद्धिक एवं तार्किक शक्ति का विकास हो सके।

2. अध्यापक विद्यार्थियों को ऐसी ही कोई पहेली बताए फिर उसका हल उन्हीं से करवाने की कोशिश करे।

पाठ-3

काबुली वाला

मेरी पाँच वर्ष की लड़की मिनी से घड़ीभर भी बोले बिना नहीं रहा जाता। एक दिन वह सवेरे-सवेरे ही बोली, ''बाबूजी रामदयाल दरबान है न, वह 'काक' को 'कौआ' कहता है। वह कुछ जानता नहीं न, बाबूजी?'' मेरे कुछ कहने से पहले ही उसने दूसरी बात छेड़ दी। ''देखो, बाबू जी, भोला कहता है-आकाश में हाथी सूँड से पानी फेंकता है, इसी से वर्षा होती है। अच्छा बाबू जी, भोला झूठ बोलता है, न?'' और फिर वह खेल में लग गई।

मेरा घर सड़क के किनारे है। एक दिन मिनी मेरे कमरे में खेल रही थी। अचानक वह खेल छोड़कर खिड़की के पास दौड़ी गई और बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगी, ''काबुली वाले, ओ काबुली वाले।''

कंधे पर मेवों की झोली लटकाए, हाथ में अंगूर की पिटारी लिए एक लम्बा-सा काबुली धीमी चाल से सड़क पर जा रहा था। जैसे ही वह मकान की ओर आने लगा, मिनी जान लेकर भीतर भाग गई। उसे डर लगा कि कहीं वह उसे पकड़ न ले जाए। उसके मन

में यह बात बैठ गई थी कि काबुली वाले की झोली के अंदर तलाश करने पर उस जैसे और भी दो-चार बच्चे मिल सकते हैं।

काबुली ने मुस्कुराते हुए मुझे सलाम किया। मैंने उससे कुछ सौदा खरीदा। फिर वह बोला, ''बाबू साहब, आपकी लड़की कहाँ गई?''

मैंने मिनी के मन से डर दूर करने के लिए उसे बुलवा लिया। काबुली ने झोली से किशमिश और बादाम निकालकर मिनी को देने चाहे पर उसने कुछ न लिया। डरकर वह मेरे घुटनों से चिपट गई। काबुली से उसका पहला परिचय इस तरह हुआ। कुछ दिन बाद, किसी ज़रूरी काम से मैं बाहर जा रहा था देखा कि मिनी काबुली से खूब बातें कर रही है और काबुली मुस्कुराता हुआ सुन रहा है। मिनी की झोली बादाम-किशमिश से भरी हुई थी। मैंने काबुली को अठन्नी देते हुए कहा, ''इसे यह सब क्यों दे दिया? अब मत देना।'' फिर मैं बाहर चला गया।

कुछ देर तक काबुली मिनी से बातें करता रहा। जाते समय वह अठन्नी मिनी की झोली में डाल गया। जब मैं घर लौटा तो देखा कि मिनी की माँ काबुली से अठन्नी लेने के कारण उस पर खूब गुस्सा हो रही है।

काबुली प्रतिदिन आता रहा। उसने किशमिश, बादाम दे-दे कर मिनी के छोटे से हृदय पर काफी अधिकार जमा लिया। दोनों में वही-वही बातें होतीं और वे खूब हँसते। रहमत काबुली को देखते ही मेरी लड़की हँसती हुई पूछती, काबुली वाले, ओ काबुली वाले! तुम्हारी झोली में क्या है?

रहमत हँसता हुआ कहता, ''हाथी।'' फिर वह मिनी से कहता, ''तुम ससुराल कब जाओगी?''

इस पर उलटे वह रहमत से ही पूछती, ''तुम ससुराल कब जाओगे?''

रहमत अपना मोटा घूँसा तानकर कहता, ''हम ससुर को मारेगा।'' इस पर मिनी खूब हँसती।

हर साल सर्दियों के अंत में काबुली अपने देश चला जाता। जाने से पहले वह सब लोगों से पैसा वसूल करने में लगा रहता। उसे घर-घर घूमना पड़ता, मगर फिर भी प्रतिदिन वह मिनी से एक बार मिल जाता।

एक दिन सवेरे मैं अपने कमरे में बैठा कुछ काम कर रहा था। ठीक उसी समय सड़क पर बड़े ज़ोर का शोर सुनाई दिया। देखा तो अपने उस रहमत को दो सिपाही बाँधे लिए जा रहे हैं। रहमत के कुरते पर खून के दाग हैं और सिपाही के हाथ में खून से सना हुआ छुरा।

कुछ सिपाही से और कुछ रहमत के मुँह से सुना कि हमारे पड़ोस में रहने वाले एक आदमी ने रहमत से एक चादर खरीदी थी। उसके कुछ रुपये उस पर बाकी थे, जिन्हें देने से उसने इंकार कर दिया था। बस, इसी पर दोनों में बात बढ़ गई और काबुली ने उसे छुरा मार दिया।

इतने में ''काबुली वाले, काबुली वाले,'' कहती हुई मिनी घर से निकल आई। रहमत का चेहरा क्षणभर के लिए खिल उठा। मिनी ने आते ही पूछा, ''तुम ससुराल कब जाओगे?'' रहमत ने हँसकर कहा, ''हाँ, वहीं तो जा रहा हूँ।''

रहमत को लगा कि मिनी उसके उत्तर से प्रसन्न नहीं हुई। तब उसने घूँसा दिखाकर कहा, ''ससुर को मारता, पर क्या करूँ हाथ बँधे हुए हैं।''

छुरा चलाने के अपराध में रहमत को कई साल की सज़ा हो गई।

काबुली का ख्याल धीरे-धीरे मन से बिल्कुल उतर गया और मिनी भी उसे भूल गई।

कई साल बीत गए।

आज मेरी मिनी का विवाह है। लोग आ जा रहे हैं। मैं अपने कमरे में बैठा हुआ खर्चे का हिसाब लिख रहा था। इतने में रहमत सलाम करके एक ओर खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान ही न सका। उसके पास न तो झोली थी और न चेहरे पर पहले जैसी खुशी। अंत में उसकी ओर ध्यान से देखकर पहचाना कि यह रहमत है।

मैंने पूछा, ''क्यों रहमत कब आए?''

''कल ही शाम को जेल से छूटा हूँ,'' उसने बताया।

मैंने उससे कहा, आज हमारे घर में एक ज़रूरी काम है, मैं उसमें लगा हुआ हूँ। आज तुम जाओ, फिर आना।

वह उदास होकर जाने लगा। दरवाज़े के पास रुककर बोला, ''ज़रा बच्ची को नहीं देख सकता?''

शायद उसे यही विश्वास था कि मिनी अब भी वैसे ही बच्ची बनी है। वह अब भी पहले की तरह ''काबुली वाले, ओ काबुली वाले'' चिल्लाती हुई दौड़ी चली आएगी। उन दोनों की उस पुरानी हँसी और बातचीत में किसी तरह की रुकावट न होगी। मैंने कहा, ''आज घर में बहुत काम है। आज उससे मिलना न हो सकेगा।

वह कुछ उदास हो गया और सलाम करके दरवाज़े से बाहर निकल गया।

मैं सोच ही रहा था कि उसे वापस बुलाऊँ। इतने में वह स्वयं ही लौट आया और बोला, '' यह थोड़ा-सा मेवा बच्ची के लिए लाया था। उसे दे दीजिएगा।''

मैंने उसे पैसे देने चाहे पर उसने कहा, ''आपकी बहुत मेहरबानी है बाबू साहब, पैसे

रहने दीजिए। ''फिर ज़रा ठहरकर बोला,'' आपकी जैसी मेरी भी एक बेटी है। मैं उसकी याद कर-करके आपकी बच्ची के लिए थोड़ा-सा मेवा ले आया करता हूँ। मैं यहाँ सौदा बेचने नहीं आता।''

उसने अपने कुरते की जेब में हाथ डालकर कागज़ का एक टुकड़ा निकाला। देखा कि कागज़ पर छोटे-से हाथ के नन्हे-से पंजे की छाप है। हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगाकर कागज़ पर उसकी छाप ले ली गई है। अपनी बेटी की इस याद को छाती से लगाकर रहमत हर साल कलकत्ते के गली-कूचों में सौदा बेचने आता है।

देखकर मेरी आँखें भर आईं। सब कुछ भूलकर मैंने उसी समय मिनी को बाहर बुलाया। विवाह की पूरी पोशाक और गहने पहने मिनी शर्म से सिकुड़ी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसे देखकर रहमत काबुली पहले तो सकपका गया। उससे पहले जैसी बातचीत करते न बना। बाद में वह हँसता हुआ बोला, लल्ली, सास के घर जा रही है क्या?

मिनी अब सास का अर्थ समझती थी। मारे शर्म के उसका मुँह लाल हो उठा।

मिनी के चले जाने पर एक गहरी साँस भरकर रहमत वहीं ज़मीन पर बैठ गया। उसकी समझ में यह बात एकाएक स्पष्ट हो उठी कि उसकी बेटी भी इतने दिनों में बड़ी हो गई होगी। इन आठ वर्षों में उसका क्या हुआ, कौन जाने? वह उसकी याद में खो गया।

मैंने कुछ रुपए निकालकर उसके हाथ में रख दिए और कहा रहमत तुम अपनी बेटी के पास देश चले जाओ।

अभ्यास

शब्दार्थ

सौदा	=	चीज़ें, खरीदने या बेचने की वस्तु	अधिकार	=	हक
स्पष्ट	=	साफ़	कालिख	=	स्याही (काली)

बताओ

(क) काबुली वाला कौन था? वह मिनी के घर क्यों आया?

(ख) मिनी के साथ काबुली वाले की मित्रता कैसे हो गई? वह मिनी को इतना क्यों चाहता था?

(ग) मिनी को विवाह की पोशाक पहने देख काबुली वाला क्यों सकपका गया? उस समय उसने क्या सोचा?

(घ) मिनी के पिता ने रहमत से अपने घर जाने को क्यों कहा?

इन वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ो

(क) रहमत को देखकर लेखक दु:खी हो गया। **(साधारण तरीके से कही गई बात)**

(ख) रहमत को देखकर लेखक की **आँखें भर आयीं (विशेष तरीके से कही गई बात)**

उपरोक्त उदाहरण में 'क' वाक्य साधारण तरीके से तथा 'ख' वाक्य विशेष तरीके से कहा गया है। इसी कारण 'ख' वाक्य 'क' वाक्य की अपेक्षा अधिक सशक्त व प्रभावशाली बन गया है।

अतः इस प्रकार विशेष शब्द प्रयोग को मुहावरा कहते हैं। मुहावरे सीधी-साधी बात को अनोखे ढंग से प्रकट करते हैं।

निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ दिए गए हैं, इनके वाक्य बनाओ

1.	मुँह लाल हो उठना	शरमा जाना	____________________
2.	मन में बात बैठना	एक ही बात को सोचने में लगे रहना	____________________
3.	अधिकार जमाना	हक जताना	____________________
4.	मन से उतरना	प्रभाव खत्म होना	____________________
5.	छाती से लगाना	बहुत प्यार करना	____________________
6.	सकपका जाना	घबरा जाना	____________________
7.	याद में खो जाना	बहुत याद करना	____________________

शुद्ध शब्द पर गोला लगायें

बादाम/बदाम

सुसराल/ससुराल

सूँड/सुँड

कौया/कौआ

चिल्लाना/चिलाना

मुस्कराना/मुस्कुराना

परिचय/परीचय

छुरा/छूरा

जरूरी/ज़रूरी

हँसी/हंसी

सोदा/सौदा

प्रत्येक शब्द के सामने समानार्थक शब्द लिखो

स्वतंत्र	=	आज़ाद	दृष्टि	=	________
दुर्बल	=	________	विश्वास	=	________
अपराध	=	________	वधू	=	________
चकित	=	________	समीप	=	________
पलभर	=	________	साहस	=	________
प्रशंसा	=	________	बलवान	=	________
विवाह	=	________	दंड	=	________

पढ़ो और लिखो

काबुल	=	काबुली	नेपाल	=	________
चीन	=	________	हिन्दुस्तान	=	________
जापान	=	________	पाकिस्तान	=	________
तिब्बत	=	________	ईरान	=	________

पढ़ो, समझो और लिखो

मछली	=	मछलियाँ	बुढ़िया	=	बुढ़ियाँ
टोपी	=	________	गुड़िया	=	________
बेटी	=	________	डिबिया	=	________

प्रयोगात्मक व्याकरण

निम्नलिखित शब्दों को उचित खाने में लिखो

लड़की, घर, अंगूर, मिनी, सड़क, पिटारी, किशमिश, बादाम, कलकत्ता, रहमत, हाथी, कौआ, कमरा, काबुल, रुपये

व्यक्ति (प्राणी)	स्थान	वस्तु

विराम चिह्न लगाओ

1. मेरा घर सड़क के किनारे है
2. अच्छा बाबू जी भोला झूठ बोलता है न
3. वह सवेरे सवेरे ही बोली
4. मैंने पूछा क्यों रहमत कब आए
5. उसने कहा आपकी बहुत से मेहरबानी है बाबू साहिब पैसे रहने दीजिए

पाठ-4

मदन लाल ढींगरा

मदन लाल ढींगरा का नाम देश के महान् सपूतों में गिना जाता है। उन्होंने 22 वर्ष की अल्प आयु में ही देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये थे। इनका जन्म अमृतसर के एक धनी परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम साहब दित्ता ढींगरा था। मदन लाल ने अपनी आरंभिक शिक्षा पहले अमृतसर और फिर लाहौर में प्राप्त की। इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वे लंदन चले गए।

जब वे लंदन में थे, उस समय भारत की आज़ादी का आंदोलन पूरे ज़ोर से चल रहा था। कई भारतीय संगठन इंग्लैंड में भी भारत को स्वाधीन करवाने के लिए काम कर रहे थे। इन संगठनों में भारत से इंग्लैंड में शिक्षा प्राप्त करने आये अनेक नवयुवक भी शामिल थे। भारत में ब्रिटिश शासन समाप्त करने के लिए वे अपनी जान की बाजी लगा देने को भी तैयार थे। उन्हीं दिनों मदन लाल ढींगरा भी ऐसे ही एक क्रांतिकारी संगठन 'अभिनव भारती' के संपर्क में आए। उनमें देश प्रेम की भावना प्रबल हो गई। वे पूरी लगन से आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़े।

उनके लंदन प्रवास के दिनों में कई भारतीय युवकों को क्रांतिकारी कार्यों में भाग लेने के कारण फाँसी पर चढ़ा दिया गया था। यह जान कर ढींगरा को बहुत दु:ख हुआ। उन्होंने

इन शहीदों के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए अपने कोट पर एक बैज लगाना शुरू कर दिया। इस बैज पर लिखा हुआ था- ''शहीदों की याद में।'' कॉलेज जाते समय भी वे यह बैज अपने कोट पर लगा कर रखते। कालेज के अधिकारियों ने उन्हें यह बैज लगाने से रोका। ब्रिटिश सरकार ऐसे बैज लगाने वाले को देशद्रोही मानती थी। उनके कई मित्रों और रिश्तेदारों ने भी उन्हें यह बैज लगाने से मना किया। पर ढींगरा बड़ी निडरता और साहस से यह बैज लगाते रहे।

एक बार पंजाब केसरी लाला लाजपतराय इंग्लैंड आए। मदन लाल ढींगरा भी उनसे मिलने गए। लाला लाजपतराय युवकों से कहा करते थे-- ''नौजवानों तुम्हारा लहू गर्म है, राष्ट्र रूपी वृक्ष तुम्हारे लहू की माँग करता है।'' लाला जी की इस बात का मदन लाल ढींगरा पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे 'अभिनव भारती' संस्था के कार्यकर्ता के रूप में और भी उत्साह से कार्य करने लगे। सरकार ने इस संगठन को सरकार-विरोधी घोषित कर दिया। इस संगठन के कुछ कार्यकर्त्ताओं को फाँसी पर लटका दिया। इस घटना से मदनलाल ढींगरा के तन-मन में आग की ज्वाला भड़क उठी। उन्होंने महसूस किया कि यदि इस घटना का बदला न लिया गया तो भारत का सिर सारे संसार के सामने झुक जायेगा। दुनिया भारतीयों को कायर समझेगी। उन्होंने अपने साथियों के साथ इस बारे में विचार किया। अन्त में एक उच्च अंग्रेज़ अधिकारी की हत्या करने की योजना तैयार कर ली गई। जुलाई सन 1909 को इम्पीरियल स्कूल के जहाँगीर हाल में भारतीय राष्ट्रीय सभा द्वारा एक सभा आयोजित की गई। इसमें सर विलियम कर्जन बाइली निमंत्रित थे। सभा की समाप्ति पर जब सर बाइली लोगों से मिल रहे थे तो मदन लाल ढींगरा ने निश्चित योजना के अनुसार उन पर गोली चला दी। गोली की आवाज़ सुनते ही सभा में भगदड़ मच गई। ढींगरा चाहते तो इस अफरा-तफरी में भाग सकते थे। मगर वे भागे नहीं। उन्होंने अंग्रेज़ अधिकारियों के हाथों गिरफ्तार होने की अपेक्षा स्वयं ही अपना जीवन समाप्त करना चाहा। सिर पर पिस्तौल रखकर गोली चला दी। किन्तु पिस्तौल खाली थी। उन्हें पकड़ लिया गया। अदालत में उन पर मुकद्दमा चला और उनको फाँसी की सज़ा सुना दी गई। 17 अगस्त, 1909 को उन्हें फाँसी दे दी गई। भारत का यह वीर सपूत हँसते-हँसते फाँसी के रस्से से लटक गया।

पंजाब के इस शहीद को भारत सरकार ने विशेष सम्मान दिया। उनके बलिदान के 67 वर्ष बाद 1976 में उनकी अस्थियाँ भारत लाई गईं। लोगों ने हर स्थान पर इन अस्थियों का स्वागत किया। मदन लाल ढींगरा भारत का वीर था। उसने फाँसी की डोरी चूमते हुए कहा था, ''मुझे मातृभूमि के लिए प्राण देने पर गर्व है।''

अभ्यास

शब्दार्थ

आरंभिक = शुरू में होने वाला

संगठन = बिखरी शक्तियों को इकट्ठा करना

प्रबल = तेज़

उत्साह = उमंग, हौसला

बैज = बिल्ला, निशान, परिचय चिह्न

अफरा-तफरी = हड़बड़ी

मुकद्दमा = दावा, अदालत में पेश किया गया मामला

अस्थियाँ = मृत व्यक्ति की हड्डियाँ

इंजीनियरिंग = यंत्र विद्या, इंजीनियर का कार्य या पद

बताओ

1. (क) मदन लाल ढींगरा का जन्म कहाँ हुआ था?
   (ख) मदन लाल ढींगरा के पिता का क्या नाम था?
   (ग) मदन लाल ढींगरा इंग्लैंड में किस क्रांतिकारी संगठन के कार्यकर्त्ता बने?
   (घ) मदन लाल ढींगरा की अस्थियाँ कब भारत लायी गयीं?
2. मदन लाल ढींगरा द्वारा अंग्रेज़ अधिकारी को गोली मारने की घटना अपने शब्दों में लिखो।
3. मदन लाल ढींगरा ने अपने कोट पर बैज क्यों लगाया? इस बैज पर क्या लिखा हुआ था?

वाक्य बनाओ

स्वाधीनता = ____

क्राँतिकारी = ____

राष्ट्रीय = ____

कार्यकर्ता = ____

संगठन = ____

विपरीत शब्दों के साथ मिलान करें

सपूत	देशभक्त
धनी	कायरता
उच्च	गुलामी
स्वाधीन	अपमान
सम्मान	कपूत
देशद्रोही	निम्न
निडरता	निर्धन
आज़ादी	पराधीन

इन मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करें

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
प्राण न्योछावर कर देना	जान दे देना	______________________
जान की बाज़ी लगा देना	जान की परवाह न करना	______________________
आग की ज्वाला भड़क उठना	क्रोध उत्पन्न होना	______________________
लहू की माँग करना	बलिदान चाहना, सहयोग चाहना	______________________

बहुवचन के अलग-अलग रूपों को पढ़ो, समझो व लिखो

1.	मित्रो	:	**मित्रो** ! आज हमें वीरता का परिचय देना है।
	मित्रों	:	हमें **मित्रों** को धोखा नहीं देना चाहिए।
2.	भारतीयो	:	____
	भारतीयों	:	____
3.	नौजवानो	:	____
	नौजवानों	:	____
4.	वीरो	:	____
	वीरों	:	____
5.	लोगो	:	____
	लोगों	:	____
6.	अंग्रेज़ो	:	____
	अंग्रेज़ों	:	____
7.	युवको	:	____
	युवकों	:	____

इन अक्षरों से नया शब्द बनाओ

शब्द	अक्षर	नया शब्द
उच्च	च्च	बच्चा
सम्मान	म्म	________
उत्साह	त्स	________
निश्चित	श्च	________
स्वाधीन	स्व	________
समाप्ति	प्त	________
राष्ट्रीय	ष्ट्र	________
तुम्हारा	म्ह	________

पढ़ो, समझो और लिखो

राष्ट्र + ईय	=	राष्ट्रीय	वीर + ता	=	__________
भारत + ईय	=	________	स्वतंत्र + ता	=	__________
आज़ाद + ई	=	________	निडर + ता	=	__________
अधिकार + ई	=	________	स्वाधीन + ता	=	__________
विरोध + ई	=	________	कायर + ता	=	__________

अंतर समझो और लिखो

1. समान	:	बराबर	:	हम सब **समान** हैं।
सम्मान	:	इज्ज़त	:	हमें बड़ों का **सम्मान** करना चाहिए।
सामान	:	चीज़ें	:	मैंने अपना **सामान** गाड़ी में रख लिया है।
2. सजा	:	अलंकृत	:	________________________________
सज़ा	:	दण्ड	:	________________________________
सज्जा	:	साज़-सामान	:	________________________________
3. ओर	:	तरफ	:	________________________________
और	:	तथा	:	________________________________
4. सर	:	सिर	:	________________________________
सर	:	तालाब	:	__________________________
सर	:	महाध्यक्ष, सर्वोच्च अधिकारी	:	__________________________
5. भाग	:	हिस्सा	:	__________________________
भाग	:	संख्या विशेष को कई अंश में बाँटने की क्रिया	:	____________________
भाग	:	भागना	:	__________________________

प्रयोगात्मक व्याकरण

मदन लाल ढींगरा एक सच्चे देशभक्त थे। इनका जन्म अमृतसर में हुआ था। इनमें देशप्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी थी। वे बहुत ही निडर थे। इन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिये। उनके बलिदान को भारतीय जनता हमेशा याद रखेगी।

उपरोक्त गद्यांश में '**इनका**', '**इनमें**', '**वे**', '**इन्होंने**' तथा '**उनके**' शब्द मदनलाल ढींगरा के स्थान पर प्रयुक्त हुए हैं। मदन लाल ढींगरा एक संज्ञा शब्द है। **अतः ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा के स्थान पर प्रयोग में आते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं।**

अन्य उदाहरण : **यह, वह, मैं, हम, तू, तुम, आप, इस, इन, उस** आदि।

इन वाक्यों में से सर्वनाम शब्द चुनो

1. उन्हें पकड़ लिया गया।
2. वे बहुत ही साहसी थे।
3. इनके पिता का नाम साहब दित्ता ढींगरा था।
4. यह जानकर ढींगरा को बहुत दुःख हुआ।
5. लोगों ने हर स्थान पर इन अस्थियों का स्वागत किया।
6. अदालत में उन पर मुकद्दमा चला।

पाठ-5

बरगद - सा पिता

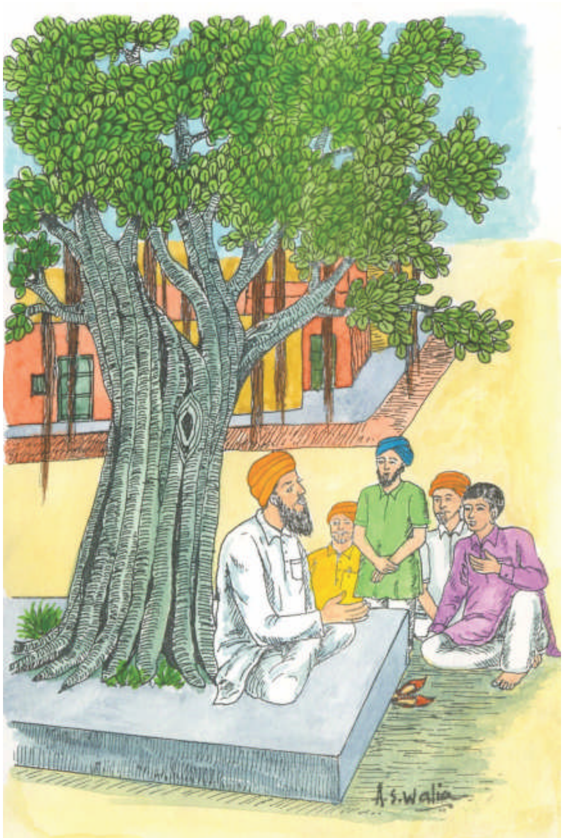

बरगद के तरु जैसा बापू, तेरा संघना साया,
मैं हूँ तेरी प्यारी लाडो, तू मेरा सरमाया।

बाँहों के झूले में लेकर तूने लाड लडाए,
लालन-पालन में अम्मा संग, तूने हाथ बँटाए।

हम आपस में भाई-बहन जब, नोक-झोंक थे करते,
तेरी लोक अदालत में, तब सही फैसले होते।

आदर, संयम, प्रेम-प्यार का तूने पाठ पढ़ाया,
कभी प्यार से, कभी डाँट से जीना हमें सिखाया।

बरगद के पत्तों-सम तेरे हाथ हैं रक्षा करते,
देते-देते बेटियों को, हाथ कभी न थकते।

बरगद बापू तेरी दाढ़ी की, सौगंध मैं खाऊँ,
दाग न लगने दूँगी इसको, हरदम लाज बचाऊँ।

बरगद-सी ठण्डी छाया को, सदा-सदा हम पाएँ,
तेरे शुभ संस्कारों से, जीवन सफल बनाएँ।

अभ्यास

शब्दार्थ

तरु	=	पेड़	सम	=	समान, बराबर
संघना	=	घना	साया	=	छाया
बापू	=	पिता	फैसला	=	निर्णय
नोक-झोंक	=	छेड़खानी, झड़प	अदालत	=	न्यायालय

बताओ

1. इस कविता में बरगद की तुलना किससे की गई है?
2. भाई-बहनों की नोक-झोंक का फैसला कहाँ होता?
3. पिता ने अपनी लाडली को क्या सिखाया?
4. पिता के हाथों की तुलना किससे की गई है?
5. बेटी क्या सौगंध खाती है?

अर्थ समझते हुए वाक्यों में प्रयोग करो

हाथ बँटाना	=	सहायता करना	=	________________________________
सौगंध खाना	=	कसम खाना	=	________________________________
लाज बचाना	=	इज्जत का ध्यान रखना	=	________________________________

सरलार्थ करो

आदर, संयम, प्रेम-प्यार का तूने पाठ पढ़ाया,
कभी प्यार से, कभी डाँट से जीना हमें सिखाया।

समान अर्थ वाले शब्द लिखो

तरु = पेड़, ____________

हाथ = हस्त, ____________

बापू = पिता, ____________

सौगंध = कसम, ____________

अम्मा = माँ, ____________

सर्वनाम भरो

______ हूँ ______ प्यारी लाडो, _________ मेरा सरमाया

________ आपस में भाई-बहन जब, नोक-झोंक थे करते।

देते-देते बेटियों को, __________ हाथ कभी न थकते।

नये शब्द बनाओ

प्‌य = प्य = प्यारा, _________

म्‌म = म्म = अम्मा, _________

त्‌त = त्त = पत्‌ता, _________

न्‌ध = न्ध = सौगन्ध, _________

स्‌क = स्क = संस्कार, _________

अपने पिता के बारे में पाँच वाक्य लिखो

____

____

____

____

____

पाठ-6

सच-झूठ का निर्णय

रात का समय था। जोधपुर नगर का हलवाई दुकान बंद करने से पहले अपनी दिनभर की कमाई जोड़ने बैठा। उसने गिनना शुरू भी नहीं किया था कि कहीं से दो आदमी आ गये। वे थोड़ी-थोड़ी मिठाई लेकर कुछ दूरी पर बैठ गए और धीरे-धीरे खाने लगे। हलवाई अपने पैसों को गिन रहा था और वे दोनों बैठे-बैठे ध्यान से उसे देख रहे थे।

दुकान बंद करने के बाद जब वह रुपयों की थैली लेकर चलने लगा तो उन दोनों ने कहा-''भाई, हमारी थैली अब हमें दे दो।''

हलवाई को उनकी बातों पर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला- ''कैसी थैली? यह तो मेरी रुपयों की थैली है।''

दोनों ने फिर कहा- ''भाई, बीच शहर में इस तरह डाका मत डालो। लाओ, हमारी थैली हमारे हवाले करो।''

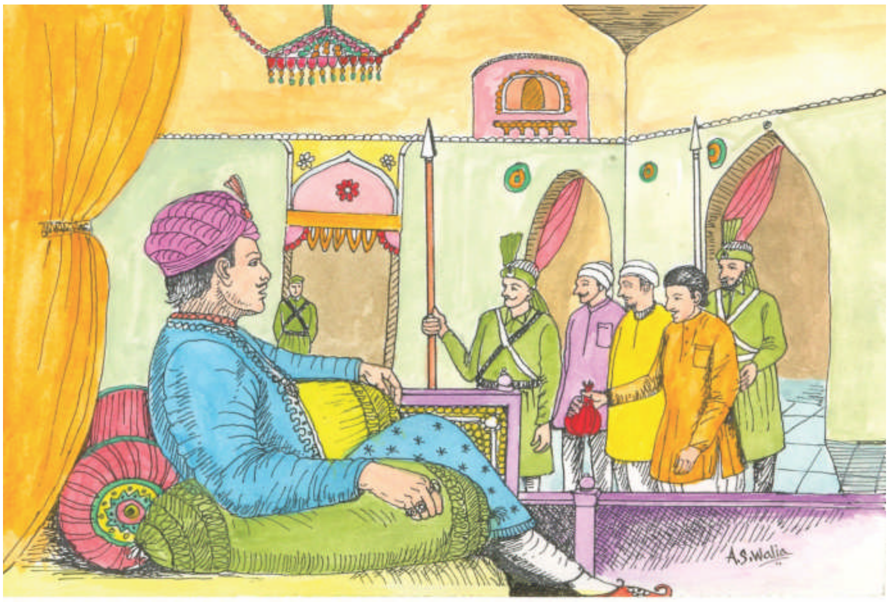

यह कहते-कहते दोनों उसके हाथ से थैली छीनने लगे। हलवाई उसे क्यों देता! दोनों ओर से छीना-झपटी होने लगी। उनका हल्ला-गुल्ला सुनकर बहुत से लोग जमा हो गए, उनके आगे हलवाई कहता था कि यह मेरी दिनभर की कमाई है, इसे ये दोनों ठग मुझसे ज़बरदस्ती छीनना चाहते हैं। इसके विपरीत ये दोनों आदमी उसमें रखे हुए पैसों की ठीक-ठीक संख्या बताकर कहते थे कि इस थैली में हमारे इतने रुपये हैं, आप लोग गिनकर देख

लीजिए.... हम लोग यह थैली इसी के पास रखकर मिठाई खाने लगे, इसने उसे उठा लिया, अब माँगने पर देता ही नहीं।

सुनने वालों के लिए इसका निर्णय करना कठिन हो गया कि वह थैली वास्तव में हलवाई की है या उन दोनों आदमियों की। वे लोग तीनों को पकड़कर जोधपुर नरेश राजा बखत सिंह के पास ले गये। राजा बड़े नीति-कुशल थे। दोनों पक्षों की बातों से जब सच-झूठ का निर्णय नहीं हो पाया तो उन्होंने एक कड़ाही में पानी गर्म करके थैली के रुपये-पैसे उसी में डलवा दिए। पानी में डालते ही उनमें लगी हुई चिकनाई ऊपर आ गई। उसी से राजा को विश्वास हो गया कि वे अवश्य ही हलवाई के पैसे होंगे। उन्होंने उसी को थैली देकर उन दोनों धूर्तों को कारागार में बन्द करवा दिया।

अभ्यास

शब्दार्थ

दिनभर	=	पूरा दिन	निर्णय	=	फैसला
आश्चर्य	=	हैरानी	कठिन	=	मुश्किल
छीनना	=	खींच कर ले लेना	वास्तव में	=	सच में
नीति-कुशल	=	न्याय करने में चतुर	विश्वास	=	यकीन
कारागार	=	जेल	विपरीत	=	उल्टा
अवश्य ही	=	सचमुच ही	धूर्त	=	धोखेबाज

बताओ

1. हलवाई दुकान बन्द करने से पहले क्या कर रहा था?
2. ठग दुकान में आकर क्या करने लगे?
3. हलवाई को किस बात पर आश्चर्य हुआ?
4. हलवाई की दुकान के पास लोग क्यों जमा होने लगे?
5. ठगों ने रुपयों की थैली पर हक जताते हुए क्या कहा?
6. राजा बखत सिंह कैसे राजा थे?
7. राजा ने सच-झूठ का निर्णय कैसे किया?
8. राजा ने ठगों को क्या सज़ा दी?

ठीक शब्द चुन कर खाली स्थान भरो

1. हलवाई अपने पैसों को _________ रहा था। जोड़/गिन
2. हलवाई को ठगों की बातों पर _________हुआ। आश्चर्य/यकीन

3. उनका _________ सुनकर लोग जमा हो गए। गाना/हल्ला-गुल्ला
4. सुनने वालों के लिए _________करना कठिन हो गया। निर्णय/मिन्नतें
5. उबलते पानी में डालते ही _________ऊपर आ गई। मलाई/चिकनाई
6. राजा ने धूर्तों को _________ में बन्द करवा दिया। कारागार/दुकान

ये शब्द किसने और किसे कहे?

	किसने कहे	किससे कहे
"भाई हमारी थैली अब हमें दे दो।"	_________	_________
"भाई, बीच शहर में इस तरह डाका मत डालो।"	_________	_________
"यह तो मेरी रुपयों की थैली है।"	_________	_________
"लाओ हमारी थैली हमारे हवाले करो।"	_________	_________

दिए कोष्ठक में (✓) या (x) का चिह्न लगाएँ

1. हलवाई सुबह-सुबह दुकान खोल रहा था। ( )
2. ठगों ने आकर हलवाई के रुपये छीन लिए। ( )
3. ठगों ने तरस खाकर थैली वापिस कर दी। ( )
4. राजा ने हलवाई के पक्ष में फैसला दिया। ( )
5. ठगों को जेल की सज़ा हुई। ( )

वाक्य बनाओ

मुहावरा	अर्थ	वाक्य
डाका डालना	लूट लेना	_______________________
हवाले करना	लौटा देना	_______________________
हल्ला-गुल्ला होना	शोर होना	_______________________
छीना-झपटी करना	दोनों पक्षों का अपनी-अपनी तरफ खींचना	_______________________

वचन बदलो

मिठाई	-	मिठाइयाँ	रात	-	रातें
कड़ाही	-	_______	दुकान	-	_______
थैली	-	_______			

मिलान करो

छीना	गुल्ला
हल्ला	पैसे
रुपये	झूठ
सच	झपटी

दोहरे शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करो

थोड़ी-थोड़ी, धीरे-धीरे, कहते-कहते, ठीक-ठीक, बैठे-बैठे

शुद्ध शब्द पर गोला लगाओ

दुकान	दूकान	ध्यान	धियान
जोदपुर	जोधपुर	आशाचरय	आश्चर्य
दिनबर	दिनभर	संखआ	संख्या
मिठायी	मिठाई	निरनय	निर्णय
हलवाई	हलवायी	नीतीकुशल	नीतिकुशल
विशवास	विश्वास	कड़ाही	कडाई

निम्नलिखित शब्दों में ड या ड़ लगा कर सार्थक शब्द बनाएं

जो __ ने　　　　क__ाही　　　　थो__ी-थो__ी

__लवा　　　　__ा का　　　　पक__कर

शब्द में से अलग-अलग अक्षरों और मात्राओं के प्रयोग से नए शब्द बनते हैं, ध्यान से देखो।

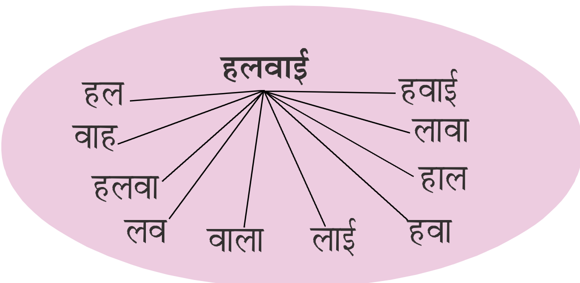

इन शब्दों में से नए शब्द ढूँढ़ कर लिखो

दिनभर　　　　कारागार　　　　चिकनाई　　　　नीति-कुशल

दिन　भर

श्रुतलेख

ध्यान	आश्चर्य	ज़बरदस्ती
संख्या	निर्णय	नीति-कुशल
धूर्तों	कारागार	

वर्ग पहेली में दस मिठाइयों के नाम छिपे हैं। उन पर गोला लगाओ और दिए गए खाली स्थान पर लिखो

क	र	प	ल	गु	ठ	ट
र	स	गु	ल्ल	ला	पे	ठा
च	म	च	म	ब	र	फी
म	ला	ख	ग	जा	घ	ज
ल	ई	छै	ना	मु	र्गी	ले
ड्	चा	बे	स	न	र	बी
डु	प	ज	पि	न्न	नी	च

1. ________________
2. ________________
3. ________________
4. ________________
5. ________________
6. ________________
7. ________________
8. ________________
9. ________________
10. ________________

हलवाई की दुकान का चित्र

चित्र देखकर पाँच पंक्तियाँ लिखो

1. ____
2. ____
3. ____
4. ____
5. ____

पाठ-7

जल-संरक्षण

जल प्रकृति का अमूल्य उपहार है। इसका कोई अन्य विकल्प नहीं है। जीवन-रक्षा के लिए हवा के बाद पानी ही सबसे महत्वपूर्ण प्राणदायक तत्व है। सभी जीव-जंतुओं तथा समस्त वनस्पति जगत को जल चाहिए। इसीलिए जल को अमृत कहा गया है। बिना जल के तो जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। यदि जल न हो तो इस सुंदर खुशहाल धरती के चारों ओर उजाड़ ही उजाड़ हो जाएगा। जहाँ पानी की किल्लत होती है, वहाँ के निवासियों से पूछो कि उनके लिए पानी का जीवन में कितना महत्व है। राजस्थान में तो पानी की बहुत किल्लत रहती है। वहाँ के लोग पानी को बहुत अमूल्य समझते हैं तभी तो वहाँ के लोगों के मुख से पानी के संबंध में एक बात सुनने को मिलती है --

घी ढुल्याँ म्हारो की नी जासी
पाणी ढुल्याँ म्हारो जी बले

अर्थात् घी के ढुलने (गिरने) से हमारा कुछ नहीं बिगड़ता परंतु पानी के गिरने से हमारा मन जलने अर्थात् दुखने लगता है।

हिंदी में एक कहावत प्रसिद्ध है-- ''घर की मुर्गी दाल बराबर'' अर्थात् आसानी से मिलने वाली चीज़ का मोल न मानना। यह कहावत पानी के संबंध में बिल्कुल ठीक बैठती है। एक ओर तो हम पानी की तलाश में सौर मंडल के कई ग्रहों पर माथापच्ची कर रहे हैं तो दूसरी ओर अपनी ही धरती पर मौजूद पानी की कद्र ही नहीं कर रहे हैं। आज जल की बर्बादी एक मुख्य समस्या है। जल की बर्बादी लापरवाही से जल का प्रयोग करने से होती है। हमें जल का सजगता व समझदारी से प्रयोग करना चाहिए। जहाँ पर भी जल की बचत होती हो वहीं हमें जल को

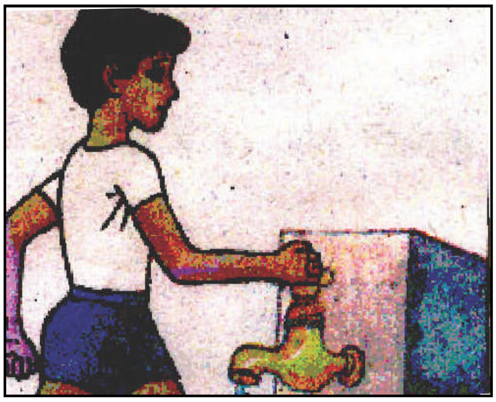

बचाना चाहिए। ब्रुश करते समय, मुँह, हाथ व पैर आदि धोते समय नल को लगातार खुला न रखकर संयम से प्रयोग करना चाहिए। नहाते समय नल से सीधे तौर पर न नहाकर बाल्टी में पानी भरकर मग से पानी लेकर नहाना चाहिए। इससे पानी की अवश्य बचत

होगी। अपने घर–आँगन की सफ़ाई पाइप द्वारा पानी से नहीं करनी चाहिए अपितु झाड़ू का प्रयोग करना चाहिए। पेड़–पौधों को भी पाइप की अपेक्षा मग अथवा फव्वारे से पानी देना चाहिए। यदि घर, स्कूल अथवा कहीं सार्वजनिक स्थान पर पानी व्यर्थ बह रहा हो तो तुरंत उसे बंद करें। यदि वह इसलिए व्यर्थ बह रहा है कि नल खराब है तो तुरंत नलसाज को बुलाकर ठीक करवायें। इसमें तनिक भी लापरवाही नहीं बरतनी चाहिए। नल के बहते हुए पानी में कपड़े न धोकर बाल्टी में भिगोकर धोयें। बर्तन साफ़ करते समय जूठे बर्तनों की जूठन पहले छुड़ा दें तथा फिर डिटर्जेंट आदि लगाकर बड़ी किफ़ायत से बर्तन साफ़ करें। काम खत्म होने पर नल बंद करना न भूलें। जितनी प्यास हो उस मुताबिक ही गिलास में पानी डालना चाहिए इस तरह करके भी आप पानी की बचत कर सकते हैं। यदि आप पानी से कोई भी काम कर रहे हैं कोई बीच में आपको बुला ले या कोई आपका टेलिफ़ोन आ जाये तो उसकी बात सुनने के लिए नल को खुला छोड़कर न दौड़ पड़ें। म्युनिसिपल कमेटी द्वारा निश्चित समय पर ही पानी की सप्लाई की जाती है। चाहे नल में पानी न भी आ रहा हो, उसे बंद करके ज़रूर रखें अन्यथा जब पानी की सप्लाई का समय होगा और मान लीजिए उस वक्त आपने नल खुला छोड़ रखा है और आप घर पर नहीं हैं तो पानी व्यर्थ ही बहता रहेगा। वाहनों को भी पाइप लगाकर पानी से धोने की अपेक्षा बाल्टी में पानी भरकर मग से वाहन को धोयें।

लापरवाही के अलावा वहम के कारण भी पानी की बर्बादी होती है। कुछ लोगों को वहम की बीमारी होती है। ऐसे लोग एक बार हाथ धोने के बाद बार–बार हाथ धोते रहते हैं। यही नहीं बर्तनों, कपड़ों और यहाँ तक कि नल को भी बाहर से बार–बार धोते रहते हैं जिसके कारण काफी पानी खर्च होता है और पानी की बर्बादी होती है।

अत: जल संकट की समस्या से उभरने के लिए केवल बातें करने से नहीं बल्कि जल को बचाने के लिए हमें अधिक व्यावहारिक बनना पड़ेगा। हमें जल का कम प्रयोग करके, जल का दोबारा प्रयोग करके व कम जल बहाकर पानी को बचाना चाहिए। पानी की समस्या का सामना सभी को करना पड़ता है अत: गरीब–अमीर सभी को पानी की बचत का प्रयास करना चाहिए। यह बात सीधे तौर पर वातावरण से जुड़ी है, स्वास्थ्य से जुड़ी है, विकास से जुड़ी है। अत: आओ, जल संरक्षण पर जागरूकता फैलायें, जल की बर्बादी रोकें, जल बचाव का संकल्प लें और दुनिया में संभवत: सबसे बड़ी हो सकने वाली दुर्घटना से बच सकें और आने वाली पीढ़ी को हम मुँह दिखा सकें।

अभ्यास

शब्दार्थ

अमूल्य	कीमती	सजगता	चुस्ती
वनस्पति	पेड़-पौधे	सार्वजनिक	सभी लोगों का
किल्लत	कमी, अभाव	नलसाज	नल ठीक करने वाला, पलम्बर
मौजूद	होना	किफायत	संभलकर
संरक्षण	बचाना, रक्षा करना	संकल्प	दृढ़ निश्चय

बताओ

1. पाठ में लेखक ने अमृत किसे कहा है?
2. यदि जल नहीं होगा तो यह धरती कैसी होगी?
3. पेड़-पौधों को पानी किस तरह से देना चाहिए?
4. वाहनों को किस प्रकार धोना चाहिए?
5. वहम से पानी की बर्बादी कैसे होती है?

मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करो

	मुहावरा		अर्थ	वाक्य
1.	घर की मुर्गी दाल बराबर	-	आसानी से मिलने वाली चीज़ का मोल न मानना	_________
2.	माथापच्ची करना	-	सिर खपाना, बहुत ज्यादा कोशिश करना	_________
3.	मुँह दिखा सकना	-	सामना करना	_________

निम्नलिखित वाक्यों में सही पर ✓ तथा गलत पर X का चिह्न लगायें

1. राजस्थान में पानी की कमी नहीं है। ☐
2. यदि जल नहीं होगा तो भी हमारे पास जल के अनेक विकल्प हैं। ☐
3. नल से सीधे तौर पर न नहाकर बाल्टी में पानी भरकर मग से पानी लेकर नहाना चाहिए। ☐
4. पेड़-पौधों में पानी लम्बी पाइप लगाकर ही देना चाहिए। ☐
5. कारों को पाइप लगाकर पानी से धोना चाहिए। ☐

6. यदि हम पानी से बर्तन धो रहे हैं तो टेलीफ़ोन आ जाने पर नल को खुला छोड़कर टेलीफ़ोन सुनना ज़रूरी है। ☐

7. जल की बर्बादी केवल अमीर लोग ही करते हैं। ☐

8. हम पानी का बिल देते हैं अतः हमें पानी का संयम से नहीं बल्कि मनमर्जी से प्रयोग करना चाहिए। ☐

9. बूँद-बूँद करके जल टपकने से कोई नुकसान नहीं होता। ☐

10. फल-सब्ज़ी आदि धोने के बाद उस जल को पौधों में डाल देना चाहिए। ☐

नीचे पानी बचाव सम्बन्धी नारा लिखा गया है। इसी तरह से आप दो नारे लिखो।

जल है जीवन का अनमोल रत्न
इसके बचाव का मिलकर करो यत्न

नारा : 1 ____

____

नारा : 2 ____

____

समान अर्थ वाले शब्दों को बहते पानी में से चुनकर सही जगह लिखो

अमूल्य	**अनमोल**
तलाश	________
धरती	________
संकट	________
आसानी	________
टेलिफ़ोन	________
व्यर्थ	________
कपड़ा	________
स्वास्थ्य	________
दोबारा	________
वातावरण	________

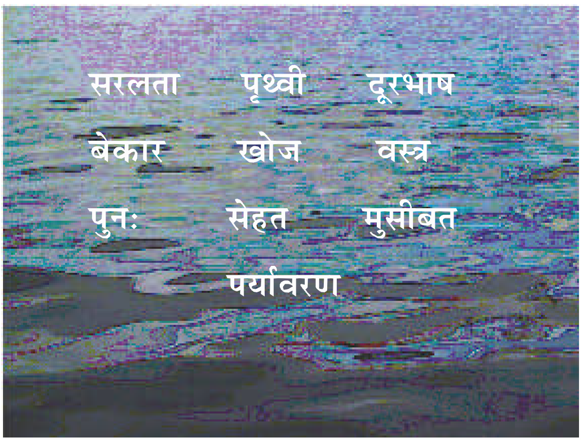

सोचिए और लिखिए

1. जल-संकट से निपटने के लिए आप क्या-क्या कर सकते हो?
2. जल-संकट की रोकथाम के लिए कुछ सुझाव प्रकट करने वाले चित्र बनाएँ जैसे : फव्वारे से पौधों को पानी देना, बाल्टी में पानी भरकर नहाना आदि।
3. क्या आपने कभी वर्षा जल-संचयन के बारे में सुना है। यदि हाँ तो स्वयं अन्यथा अध्यापक की मदद से इसके बारे में दो-तीन पंक्तियाँ लिखें।
4. अपनी कक्षा में जल की बचत संबंधी नारे अथवा पंक्तियाँ चार्ट पर लिखकर लगायें।

अध्यापकों के लिए : अध्यापक बच्चों को वर्षा जल-संचयन के बारे में बताये जो कि जल-संकट के समाधानों में से एक समाधान है।

पाठ-8

बलिदान की लाली

आज सरहिंद में बड़ी चहल-पहल है। नवाब की ख़ुशी का ठिकाना नहीं है। सम्राट औरंगज़ेब उसके कारनामे पर कितने खुश होंगे, यह सोचकर ही नवाब फूलकर कुप्पा हो रहा है। उसे विश्वास नहीं हो रहा है कि उसने सिंह-शावकों को कैद कर लिया है। उसकी इस सफलता का समाचार पाकर बादशाह उछल पड़ेगा और उसे मुँह माँगा इनाम मिलेगा। मन के लड्डू फीके क्यों? नवाब इनाम में एक बहुत बड़ी जागीर के सपने में डूबकर जाम पर जाम चढ़ा रहा है।

बात यह हुई कि आनंदपुर की लड़ाई में गुरु गोबिंद सिंह जी हज़ारों देश-भक्तों का बलिदान देकर चुने हुए वीर साथियों और परिवार के साथ रात के अन्धेरे में दुर्ग से बाहर निकल आए। रात का गहन अन्धकार, चारों ओर रक्त के प्यासे मुगल सैनिक उनका पीछा कर रहे थे इसी बीच माता गुजरी अपने दो पोतों के साथ भटक गई। गंगू नामक व्यक्ति ने उन्हें धोखा दिया और वे शत्रुओं के हाथ में पड़ गए। उन्होंने उन्हें सरहिंद के नवाब के हाथों सौंप दिया। बिना माँगी सफलता से नवाब उछल पड़ा।

नवाब इस ख़ुशी को सहेज नहीं पा रहा था।

अगले दिन काज़ी को बुलवाया। काज़ी की सम्मति से यह तय हुआ कि अगर दोनों अपना धर्म-परिवर्तन कर लें तो उनकी जान बख़्श दी जाए। सम्राट औरंगज़ेब को भी इससे इंकार नहीं हो सकता था।

* * * * * *

''तुमको पता है कि तुम दोनों शाही कैद में हो। यहाँ से छुटकारा पाना आसान नहीं। हाँ, एक मौका है।''

''क्या ?''

''हमारा धर्म स्वीकार कर लो।''

''नहीं तो?''

''नहीं तो ! नहीं तो सज़ा-ए-मौत। ज़िदां दीवार में चिनवा दिए जाओगे।''

''हमें यह मंजूर है।''

''सोच लो। इतनी जल्दी फैसला मत करो।''

''सोच लिया।''

''फिर सोच लो। कहीं पछताना न पड़े। अभी तुम बच्चे हो।''

''सोच लिया। हम गुरु के बेटे हैं।''

''जैसे तुम्हारी मर्ज़ी।'' काज़ी मुँह लटका कर चल दिया। उसकी आँखें भी भीग आईं। मन-ही-मन उसने दोनों बालकों की प्रशंसा की। 'सबको अपना धर्म प्यारा होता है। क्यों बदलें अपना धर्म?' काज़ी मन ही मन बुदबुदाया।

* * * * * * * *

सरहिंद में उस दिन मानो जन-समुद्र उमड़ पड़ा। गुरु के दोनों लाडले, फतेह सिंह और ज़ोरावर सिंह दीवार में चिनवाए जा रहे हैं। लोग भय से और आश्चर्य से यह दृश्य देख रहे हैं। सभी की आँखें बरस रही हैं। दीवार चिनने वाला मिस्त्री भी रह-रहकर काँप उठता है। दोनों सिंह-शावक निर्भय मुद्रा में खड़े हैं, मानो यह भी एक खेल हो।

''भैया !''

''हाँ, वीर !'' काँपते गले से आवाज़ आती है। बड़े की बाईं आँख से एक मोती टपक पड़ता है।

''यह क्या ! गुरु का बेटा मौत से डर गया ।''

''नहीं वीर ! तू नहीं समझेगा । मेरी पीड़ा और ही है ।''

''पर आँखों में ये आँसू कैसे ? उदय और अस्त के समय सूर्य एक-सा रहता है।

हम भी सूर्य-पुत्र हैं।''

''फतेह सिंह, तू नहीं समझेगा ।''

''बिना बताए कैसे समझूँगा भैया ?''

''मेरे वीर, मैं बड़ा हूँ, पहले जाने की मेरी बारी है, पर तू मेरे से पहले जा रहा है और यह मुझे देखना पड़ेगा।''

अपार संतोष और गर्व से छोटे की आँखें चमक उठीं। बात जन-समूह तक पहुँची तो लोग हाहाकार कर उठे।

दीवार छोटे के गले तक आ गई। बड़े ने कहा, ''जा रहे हो वीर !'' उसकी आँखों से मोती की तरह आँसू टपकने लगे।

''हाँ, भैया ! आशीष दो ! वाहेगुरु ! फिर मिलेंगे।'' छोटे की आँखों में गर्व की चमक थी और मुँह पर बलिदान की लाली।

अभ्यास

शब्दार्थ

इनाम	=	पुरस्कार	होनहार	=	होशियार
सहेज न पाना	=	संभल न पाना, सहन न कर पाना	सम्मति	=	राय
जन-समुद्र	=	भारी भीड़	पीड़ा	=	दर्द, तकलीफ।

बताओ

(क) गुरु गोबिंद सिंह जी के कौन-से दो बेटे नवाब के हाथों में पड़ गए थे, उनके नाम बताओ?

(ख) नवाब को किस बात की खुशी थी?

(ग) काज़ी की सम्मति से क्या तय हुआ?

(घ) धर्म परिवर्तन न करने पर गुरु जी के पुत्रों को क्या सज़ा दी जानी थी?

(ङ) दोनों ने किस बात को मंजूर किया?

(च) बड़े भाई की आँखों से आँसू क्यों गिरा?

2. (क) काज़ी ने फतेह सिंह और ज़ोरावर सिंह से क्या कहा और उन्होंने क्या उत्तर दिया, इसे अपनी भाषा में लिखो।

(ख) बड़े और छोटे भाई के वार्तालाप को पाँच वाक्यों में लिखो।

(ग) फतेह सिंह और ज़ोरावर सिंह की भाँति धर्म पर बलिदान होने वाले किन्हीं दो और शहीदों के नाम बताओ।

(घ) इस पाठ से मिलने वाली शिक्षा को चार वाक्यों में लिखो।

वाक्य पूरे करो

1. शहंशाह आलमगीर उसके ________________ पर कितने खुश होंगे।
2. मन के लड्डू __________ क्यों ?
3. माता गुजरी अपने ________ के साथ भटक गई।
4. ज़िन्दा ________ में ________दिए जाओगे।
5. काज़ी मन ही मन ________________।
6. दोनों ________निर्भय ________ में खड़े हैं।
7. हम भी ________ हैं।
8. मैं बड़ा हूँ पहले _________ की ________ मेरी है।
9. छोटे की आँखों में __________ की __________ थी और मुँह पर _______ की लाली।

हाँ या नहीं में उत्तर दो

(क) सरहिंद का नवाब यह सोचकर उदास था कि उसने गुरु के बेटों को पकड़ लिया है।

(ख) आनंदपुर की लड़ाई में हज़ारों देश भक्त बलिदान हो चुके थे।

(ग) काज़ी ने गुरु के बेटों का धर्म-परिवर्तन कराने से मना किया।

(घ) दोनों ने ज़िंदा दीवार में चिनवाया जाना मंज़ूर किया।

(ङ) फतेह सिंह को अपनी मृत्यु के दु:ख से आँखों में आँसू आए।

वाक्य बनाओ

फूल कर कुप्पा होना = ____

सिंह-शावक = ____

धर्म-परिवर्तन = ____

मुँह लटकाना = ____

लाडला = ____

पीड़ा = ____

हाहाकार = ____

विपरीत शब्द लिखो

सफलता =	________	शत्रु =	________	धर्म =	________
कठिन =	________	बड़ा =	________	अस्त =	________

शब्द में से कम से कम दो शब्द ढूँढ़कर लिखो

सफलता — फल, सफल, लता, लत

समाचार

बादशाह

चिनवाए

बलिदान

डूबकर

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. रात का <u>गहन</u> अंधकार छाया था।
2. वहाँ <u>हज़ारों</u> देशभक्तों ने बलिदान दिया।
3. वे <u>निर्भय</u> मुद्रा में खड़े हैं।
4. उसने <u>दोनों</u> बालकों की प्रशंसा की।
5. वे <u>निडर</u> थे।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गहन' शब्द अंधकार (संज्ञा) की, 'हजारों' शब्द देशभक्तों (संज्ञा) की, 'निर्भय' शब्द मुद्रा (संज्ञा) की, 'दोनों' शब्द बालकों (संज्ञा) की तथा 'निडर' शब्द वे (सर्वनाम) की विशेषता बता रहे हैं इसीलिए ये विशेषण शब्द हैं। **अतः जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।**

इन शब्दों में से विशेषण और विशेष्य शब्दों को अलग करके लिखो

वीर साथी, क्रूर सैनिक, दोनों पुत्र, यह दृश्य, अपार संतोष, बहादुर बच्चे, निडर बालक, दो पोतों, शाही कैद।

विशेषण	विशेष्य
वीर	साथी
------	------
------	------
------	------
------	------
------	------
------	------
------	------

पाठ-9

अगर न नभ में बादल होते ?

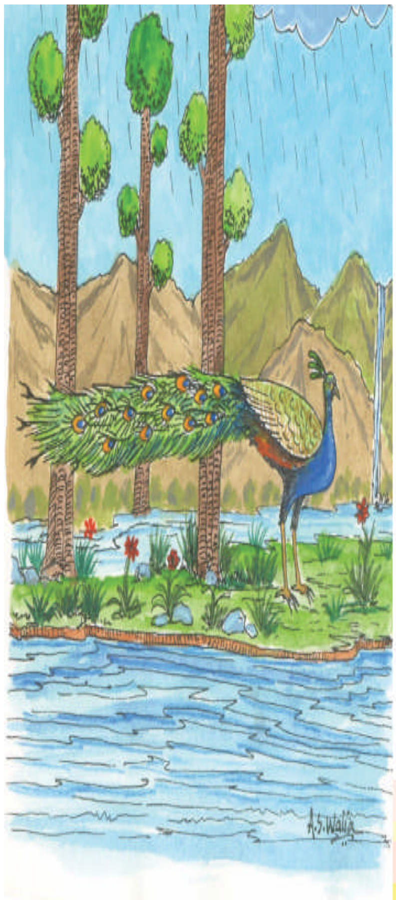

कौन सिंधु से जल भर लाता,
उमड़-उमड़ जग में बरसाता?
गर्मी में तप-खप दिन खोते
अगर न नभ में बादल होते?

कभी न बिजली चमक दिखाती,
दुनिया में क्या दमक दिखाती?
कभी न बहते झरने-सोते
अगर न नभ में बादल होते?

मोर न खुश हो शोर मचाते,
मेंढक कभी न टर-टर्राते।
प्यासे मरते चिड़ियाँ-तोते
अगर न नभ में बादल होते?

सूखी होतीं नदियाँ-नहरें
होतीं कहीं न सुंदर लहरें।
कहाँ नहाते, खाते गोते
अगर न नभ में बादल होते?

अभ्यास

शब्दार्थ

सिंधु	=	सागर	दमक	=	चमक
जग	=	संसार	गोते खाना	=	डुबकी लगाना
तप-खप	=	गर्मी से परेशान होना	खोते	=	गँवाना, खोना
नभ	=	आकाश	सोते	=	पानी के स्रोत जैसे चश्मा, झरना आदि

बताओ

1. पानी कौन बरसाता है?
2. बादलों में पानी कहाँ से आता है?
3. बिजली की चमक कहाँ दिखाई देती है?
4. झरने पानी कहाँ से प्राप्त करते हैं?
5. बादलों के न होने पर प्राणी जगत पर क्या प्रभाव पड़ता?

समान तुक वाले शब्द लिखो

तप	=	खप	नहरें	=	__________
चमक	=	__________	मचाते	=	__________

सरलार्थ करो

सूखी होतीं नदियाँ–नहरें,
होती कहीं न सुंदर लहरें।
कहाँ नहाते, खाते गोते
अगर न नभ में बादल होते?

समान अर्थ वाले शब्द मिलाओ

सिंधु	सरिता
जल	विश्व
जग	सागर
बादल	सलिल
नदी	विद्युत
बिजली	मेघ
मोर	मयूर

'अ' और 'ना' शब्दांश लगाकर विपरीत अर्थ वाला शब्द लिखो

सुंदर	=	असुंदर	खुश	=	नाखुश
संभव	=	__________	लायक	=	__________
योग्य	=	__________	जायज़	=	__________

कविता में उमड़-उमड़, तप-खप, झरने-सोते, चिड़ियाँ-तोते, नदियाँ-नहरें शब्द युग्म के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। इनसे वाक्य बनाओ।

रचनात्मक अभिव्यक्ति

यदि बादल न हों तो क्या होगा? दिये गये शब्द-संकेतों की सहायता से लिखो।

____

____

____

____

____

____

____

____

____

शब्द संकेत

वर्षा नहीं
नदियाँ-नाले सूख जाते
पेड़-पौधे सूख जाते,
भोजन नहीं
पीने योग्य पानी नहीं
गर्मी अधिक
भूमि का जल स्तर कम
समस्त प्राणी जगत परेशान

योग्यता विस्तार

बादल कैसे बनते हैं?

झीलों, नदियों, समुद्रों का जल सूर्य की गर्मी से निरंतर भाप बनकर ऊपर उठता रहता है। यह भाप आसमान में इकट्ठी होती रहती है। जब यह ऊपर उठकर ठंडी हो जाती है तो बादल का रूप धारण कर लेती है। बादलों का भार जब अधिक हो जाता है तो ये जल-कणों के रूप में बरस जाते हैं।

पाठ-10

रक्षा में हत्या

केशव के घर में छज्जे पर एक कबूतरी ने अंडे दिए थे। केशव और उसकी बहन श्यामा, दोनों बड़े गौर से कबूतरी को वहाँ आते-जाते देखा करते। प्रातः काल दोनों आँखें मलते छज्जे के सामने पहुँच जाते और कबूतर या कबूतरी को या दोनों को वहाँ बैठा पाते। उनको देखने में दोनों बच्चों को बड़ा मज़ा आता। उनके मन में भाँति-भाँति के प्रश्न उठते- अंडे कितने बड़े होंगे? किस रंग के होंगे? घोंसला कैसा होगा? उनमें से बच्चे कैसे निकल आएँगे? बच्चों के पंख कैसे निकलेंगे? पर इन प्रश्नों का **उत्तर** देने वाला कोई न था। अम्मा को घर के काम-धंधों से फुरसत न थी और बाबू जी को पढ़ने-लिखने से। दोनों बच्चे आपस में ही बातचीत करके अपने मन को संतुष्ट कर लिया करते थे।

श्यामा कहती, ''क्यों भैया, बच्चे निकल कर फुर्र-से उड़ जाएँगे?''

केशव अभिमान से कहता, ''नहीं री पगली, पहले पंख निकलेंगे, बिना परों के बेचारे कैसे उड़ेंगे ?''

श्यामा- ''कबूतरी बच्चों को क्या खिलाएगी?''

केशव इस प्रश्न का **उत्तर** कुछ न दे पाता। इस तरह तीन-चार दिन बीत गए। दोनों बच्चों की अंडों को देखने की इच्छा बढ़ती जाती थी। उन्होंने अनुमान लगाया कि अब अवश्य बच्चे निकल आए होंगे। बच्चों के चोगे का सवाल अब उनके सामने आ खड़ा हुआ। कबूतरी बेचारी इतना दाना कहाँ से लाएगी कि सारे बच्चों का पेट भरे। बच्चे भूख के मारे चूँ-चूँ करके मर जाएंगे।

इस **विपत्ति** की कल्पना करके दोनों व्याकुल हो गए। दोनों ने निश्चय किया कि छज्जे पर थोड़ा-सा दाना रख दिया जाए। श्यामा प्रसन्न होकर बोली, ''तब तो कबूतरी को दाने के लिए कहीं उड़कर न जाना पड़ेगा।''

केशव- ''तब क्यों जाएगी?''

श्यामा- ''क्यों भैया, बच्चों को धूप न लगती होगी?''

केशव का ध्यान इस कष्ट की ओर न गया था....अवश्य कष्ट हो रहा होगा, बेचारे गर्मी के मारे तड़पते होंगे, ऊपर कोई छाया भी नहीं है।

आखिर यह निश्चय हुआ कि घोंसले के ऊपर कपड़े की छत बना देनी चाहिए। घोंसले के पास ही पानी की प्याली और थोड़े-से चावल रख देने चाहिए।

दोनों बच्चे बड़े उत्साह से काम करने लगे। श्यामा मटके से चावल निकाल लाई। केशव ने पत्थर की प्याली को खूब साफ़ करके उसमें पानी भरा।

अब छत बनाने के लिए कपड़ा कहाँ से आए? फिर, ऊपर बिना तीलियों के कपड़ा ठहरेगा कैसे और तीलियाँ खड़ी कैसे होंगी?

केशव बड़ी देर तक इसी उधेड़बुन में रहा। अन्त में उसने यह समस्या भी हल कर ली। श्यामा से बोला, ''जाकर कूड़ा फेंकने वाली टोकरी उठा ला।''

श्यामा- ''वह तो बीच में टूटी हुई है।''

केशव ने झुँझलाकर कहा, ''तू टोकरी तो ला, मैं उसका सुराख बंद करने का कोई तरीका निकाल लूँगा।''

श्यामा दौड़ कर टोकरी उठा लाई। केशव ने उसके सुराख में थोड़ा-सा कागज़ ठूँस दिया और तब टोकरी को एक टहनी से टिकाकर बोला - ''देख, ऐसे ही घोंसले पर इसकी आड़ कर दूँगा। तब कैसे धूप जाएगी?''

श्यामा ने मन में सोचा, ''भैया, कितने चतुर हैं !''

गर्मी के दिन थे। बाबू जी दफ़्तर गए हुए थे। अम्मा जी दोनों बच्चों को कमरे में सुलाकर खुद सो गई थी । पर बच्चों की आँखों में आज नींद कहाँ? अम्मा जी को बहकाने के लिए दोनों दम साधे, आँखें बन्द किये मौके की प्रतीक्षा कर रहे थे। ज्यों ही मालूम हुआ कि अम्मा जी अच्छी तरह सो गईं हैं, दोनों चुपके से उठे और बहुत धीरे-से द्वार की चिटकनी खोलकर बाहर निकल आए। अंडों की रक्षा करने की तैयारियाँ होने लगीं।

केशव कमरे से एक बड़ा स्टूल उठा लाया और डरते-डरते स्टूल पर चढ़ा। श्यामा दोनों हाथों से स्टूल को पकड़े हुए थी। स्टूल के चारों पाये बराबर नहीं थे। ज़रा-सा दबाव इधर-उधर होने से वह हिल जाता था। उस समय केशव को कितना संयम करना पड़ता था, यह उसी का दिल जानता था। वह दोनों हाथों से दीवार का सहारा लेता और श्यामा को दबी आवाज़ से डाँटता, ''अच्छी तरह पकड़, नहीं तो उतरकर बहुत मारूँगा ।'' मगर बेचारी श्यामा का मन तो ऊपर छज्जे पर था। बार-बार उसका ध्यान उधर लग जाता और हाथ ढीले पड़ जाते।

केशव ने जैसे ही दीवार के बढ़े हुए छज्जे पर हाथ रखा, दोनों कबूतर उड़ गए। केशव ने देखा कि छज्जे पर थोड़े-से तिनके बिछे हुए हैं और उस पर अंडे पड़े हैं।

श्यामा ने पूछा, ''कितने बच्चे हैं, भैया?''

केशव – ''तीन अंडे हैं। अभी बच्चे नहीं निकले।''

श्यामा – ''ज़रा हमें दिखा दो, भैया। कितने बड़े हैं ?''

केशव – ''दिखा दूँगा पहले ज़रा चीथड़े ले आ, नीचे बिछा दूँ। बेचारे अंडे तिनकों पर पड़े हुए हैं।''

श्यामा दौड़ कर एक पुरानी धोती फाड़कर एक टुकड़ा लाई और केशव ने झुककर कपड़ा ले लिया। उसकी कई तहें करके उसने एक गद्दी बनाई। उसे तिनकों पर बिछा कर तीनों अंडे धीरे से उस पर रख दिए।

श्यामा ने फिर कहा, ''हमको भी दिखा दो, भैया।''

केशव – ''दिखा दूँगा, पहले ज़रा वह टोकरी तो दे दे, ऊपर छाया कर दूँ।''

श्यामा ने टोकरी नीचे से थमा दी और बोली, ''अब तुम उतर आओ तो मैं भी देखूँ।''

केशव ने टोकरी को एक टहनी से टिकाकर कहा, ''जा, दाना और पानी की प्याली ले आ। मैं उतर आऊँ तो तुझे दिखा दूँगा ।''

श्यामा प्याली और चावल भी लाई। केशव ने टोकरी के नीचे दोनों चीज़ें रख दीं और वह धीरे से उतर आया।

श्यामा ने गिड़गिड़ा कर कहा, ''अब हमको भी चढ़ा दो, भैया।''

''तू गिर पड़ेगी ।''

''न, मैं नहीं गिरूँगी, तुम पकड़े रहना।''

''कहीं तू गिर पड़ी तो अम्मा जी मेरी चटनी ही बना डालेंगी। कहेंगी कि तूने ही चढ़ाया था। क्या करेगी देखकर ? अब अंडे बड़े आराम से हैं। जब बच्चे निकलेंगे तो उनको पालेंगे।''

दोनों पक्षी बार-बार छज्जे पर आते और बिना बैठे ही उड़ जाते। केशव ने सोचा कि हम लोगों के भय से ये नहीं बैठ रहे। धीरे-से स्टूल उठाकर वह कमरे में रख आया।

श्यामा ने आँखों में आँसू भर कर कहा, ''तुमने मुझे नहीं दिखाया, मैं अम्मा से कह दूँगी?''

''अम्मा जी से कहेगी तो बहुत मारूँगा, कहे देता हूँ।''

''तो तुमने मुझे दिखाया क्यों नहीं?''

''और गिर पड़ती तो चार सिर न हो जाते तेरे?''

''हो जाते, तो हो जाते। देख लेना, मैं कह दूँगी।''

इतने में कोठरी का द्वार खुला और अम्मा जी ने कहा, ''तुम दोनों बाहर कब निकल आए? मैंने मना किया था कि दोपहर में न निकलना। किसने किवाड़ खोला?''

किवाड़ केशव ने खोला था, पर श्यामा ने यह बात नहीं कही। उसे भय हुआ कि भैया पिट जाएँगे। केशव दिल में काँप रहा था कि कहीं श्यामा कह न दे कि उसने अंडे नहीं दिखाए थे। श्यामा केवल प्रेम वश चुप थी या इस अपराध में सहयोग के कारण, इसका निर्णय नहीं किया जा सकता। शायद दोनों ही बातें थीं।

अम्मा ने दोनों बच्चों को डाँट-डपट कर फिर कमरे में लिटा दिया और आप धीरे-धीरे पंखा करने लगी। अभी केवल दो बजे थे। बाहर तेज़ लू चल रही थी। अब की बार दोनों बच्चों को नींद आ गई।

चार बजे एकाएक श्यामा की नींद खुली। किवाड़ खुले हुए थे। वह दौड़ी हुई छज्जे के पास आई और ऊपर की ओर ताकने लगी। कबूतरों का पता न था। सहसा उसकी निगाह नीचे गई और वह उल्टे पाँव बेतहाशा दौड़ी। दौड़ती हुई कमरे में जाकर ज़ोर से बोली, ''भैया अंडे तो नीचे पड़े हैं। बच्चे उड़ गए।''

केशव घबराकर उठा और दौड़ता हुआ बाहर आया। क्या देखता है कि तीनों अंडे नीचे टूटे पड़े हैं। उनमें से कोई पीली-सी चीज़ निकल आई है। पानी की प्याली भी एक तरफ टूटी पड़ी है।

उसके चेहरे का रंग उड़ गया। डरे हुए नेत्रों से भूमि की ओर ताकने लगा। श्यामा ने पूछा, ''बच्चे कहाँ उड़ गए, भैया?''

केशव ने रुँधे हुए स्वर में कहा, ''अंडे तो फूट गए।''

''अरे, बच्चे कहाँ गए?''

तेरे सिर में। देखती नहीं अंडों से वह पीला-पीला पदार्थ निकल आया है। इसी से तो बच्चे बनते हैं। केशव ने क्रुद्ध होकर जवाब दिया।

अम्मा ने सूई हाथ में लिए हुए पूछा, ''तुम दोनों धूप में क्या कर रहे हो?''

श्यामा ने कहा, ''अम्मा जी, कबूतरी के अंडे टूटे पड़े हैं ।''

अम्मा ने आकर टूटे अंडों को देखा और गुस्से से बोली, ''तुम लोगों ने अंडों को छुआ होगा।''

अब की श्यामा को भैया पर ज़रा भी दया न आई। उसी ने शायद अंडों को इस तरह रख दिया था कि वे नीचे गिर पड़े। इसका उसे दण्ड मिलना चाहिए। वह बोली, ''भैया ने अंडों को छेड़ा था, अम्मा जी।''

अम्मा ने केशव से पूछा, ''क्यों रे?''

केशव भीगी बिल्ली बना खड़ा रहा।

अम्मा - ''तू वहाँ पहुँचा कैसे?''

श्यामा - ''स्टूल रखकर चढ़े थे, अम्मा जी।''

अम्मा - ''इसीलिए इतनी धूप में तुम दोनों दोपहर को बाहर निकले थे।''

श्यामा - ''यही ऊपर चढ़े थे, अम्मा जी !''

केशव - ''तू स्टूल थामे नहीं खड़ी थी?''

श्यामा - ''तुम्हीं ने तो कहा था।''

अम्मा – ''तू इतना बड़ा हुआ, पर तुझे अभी इतना नहीं मालूम कि छूने से कबूतरी के अंडे गंदे हो जाते हैं। कबूतरी फिर उन्हें नहीं सेती।''

श्यामा ने डरते-डरते पूछा, ''तो क्या कबूतरों ने अंडे गिरा दिए, अम्मा जी?''

अम्मा – ''और क्या करते? हाय ! हाय ! तीन जानें ले लीं तुमने ।''

केशव रुआँसा होकर बोला, ''मैंने तो केवल अंडों को गद्दी पर रख दिया था, अम्मा जी।''

अम्मा जी को हँसी आ गई।

मगर केशव को कई दिनों तक अपनी भूल पर पश्चाताप होता रहा। अंडों की रक्षा करने के भ्रम में उसने उनका सर्वनाश कर डाला था। उसे याद करके वह कभी-कभी रो भी पड़ता था। दोनों पक्षी वहाँ फिर न दिखाई दिए।

अभ्यास

शब्दार्थ

छज्जा	=	छत का दीवार के बाहर निकला हुआ भाग	विपत्ति	=	मुसीबत
उधेड़बुन	=	उलझन	बेतहाशा	=	बहुत तेज़ी से, बिना सोचे विचारे
चोगा	=	चिड़ियों का चारा	किवाड़	=	दरवाज़ा
रुआँसा	=	रोनी सूरत बनाना			

बताओ

1. कबूतरी ने कितने अंडे दिये थे?
2. केशव और श्यामा के मन में क्या-क्या प्रश्न उठ रहे थे?
3. दोनों बच्चों ने कबूतरी के बच्चों की भूख का क्या हल निकाला?
4. दोनों बच्चों ने कबूतरी के बच्चों की सुरक्षा के क्या-क्या उपाय किये?
5. कबूतरी ने अंडे क्यों गिरा दिये?
6. केशव को किस बात का पश्चाताप हुआ?

अर्थ समझते हुए मुहावरों को वाक्यों में प्रयोग करो

चटनी बना डालना	=	बहुत मारना	=	____________________
चार सिर होना	=	टुकड़े-टुकड़े होना	=	____________________
उल्टे पाँव भागना	=	तेज़ दौड़ना	=	____________________
चेहरे का रंग उड़ना	=	घबरा जाना	=	____________________
भीगी बिल्ली बनना	=	डर जाना	=	____________________
पश्चाताप होना	=	पछतावा होना	=	____________________

ये वाक्य किसने कहे ?

	किसने कहे
''अब अंडे बड़े आराम से हैं।''	_________________
''तीन जानें ले ली तुमने।''	_________________
''छूने से कबूतरी के अंडे गंदे हो जाते हैं।''	_________________
''मैंने तो केवल अंडों को गद्दी पर रख दिया था, अम्मा जी।''	_________________

विराम चिह्न समझो

श्यामा ने पूछा, '' कितने बच्चे हैं, भैया ? ''

लिंग बदलो

टोकरी	=	____________	भैया	=	____________
प्याली	=	____________	अम्मा	=	____________
कबूतर	=	____________			

वचन बदलो

तिनका	=	तिनके	तीली	=	तीलियाँ
अंडा	=	____________	टोकरी	=	____________
प्याला	=	____________	बिल्ली	=	____________
घोंसला	=	____________	प्याली	=	____________
छज्जा	=	____________	टहनी	=	____________

नये शब्द बनाओ

क् + ष	=	क्ष	=	रक्षा	,	_________
ष् + ट	=	ष्ट	=	_________	,	_________
श् + च	=	श्च	=	_________	,	_________

च् + छ = च्छ = _________ , _________
द् + व = द्व = _________ , _________
र् + म = र्म = _________ , _________
र् + थ = र्थ = _________ , _________

अंतर समझो और वाक्य बनाओ

चोगा : चिड़ियों का चारा : ____

चोग़ा : घुटनों तक का लंबा ढीला-ढाला पहनावा, लबादा : _________________________

चोंगा : बाँस की खोखली नली जिसका एक सिरा बंद होता है :______________________

हल : सवाल का जवाब : ____

हल : खेत जोतने का एक यंत्र : ____

गौर : गोरा : ____

ग़ौर : सोच-विचार : ____

निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम शब्द ढूँढ़कर उन्हें रेखांकित करें

(क) ''मैं नहीं गिरूँगी, तुम पकड़े रहना।''

(ख) ''मैंने मना किया था कि दोपहर में न निकलना ।''

(ग) ''तू गिर पड़ेगी''

(घ) उसे याद करके वह कभी-कभी रो भी पड़ता था ।

(ङ) उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

पाठ 11

पेंसिल की आत्मकथा

बच्चो! मैं पैंसिल हूँ, जो कि हर बच्चे के बस्ते में ज़रूर होती है। क्या आपने यह जानने की कोशिश की कि यह नन्ही- सी पेंसिल बनी कैसे? नहीं मालूम, कोई बात नहीं आज मैं आपको अपने बारे में सब कुछ बताऊँगी।

बच्चो, बात है सन 1564 की। इंग्लैंड के एक शहर 'बोरोडेल' में एक रात एक भयंकर तूफान आया। तूफान इतना भंयकर था कि पेड़ अपनी जड़ों से बुरी तरह उखड़ गए। दूसरे दिन जब चरवाहे अपने जानवरों को चराने जंगल में गए तो उन्होंने देखा कि वृक्षों की जड़ों के साथ-साथ ज़मीन के निचले हिस्से से कुछ काला पत्थर-जैसा पदार्थ भी उखड़ कर बाहर आ गया है। तो बच्चो इसी दिन मेरा जन्म हुआ।

चरवाहों ने समझा यह काला पदार्थ कोयला है अतः वे इसके छोटे-छोटे टुकड़े करके घर ले आए। **परंतु** जलाने पर वह न तो जला और न ही पिघला। इस सारे काम में चरवाहों के हाथ-पैर काले ज़रूर हो गए। उन्होंने सोचा इसका प्रयोग जानवरों पर निशान लगाने में किया जा सकता है। इसका नाम 'वैड' रख दिया गया। इस तरह चरवाहों को अपनी भेड़-बकरियाँ पहचानने में आसानी होने लगी। समस्या यह थी कि इसका इस्तेमाल करने पर

हाथ, मुँह और कपड़े आदि काले हो जाते थे। बच्चो! मानव ने कभी मुश्किलों से हार नहीं मानी बल्कि उस पर हिम्मत से जीत प्राप्त की है।

उन चरवाहों ने 'वैड' के आधे हिस्से में सूत का धागा लपेट दिया। इस तरह जन्म के बाद मुझे कपड़े पहनने का मौका भी मिल गया। बच्चो, मेरा शुरू का रूप कुछ ऐसा ही था।

धीरे-धीरे पूरे इंग्लैंड में कई कामों में मेरा प्रयोग तेज़ी से बढ़ने लगा। सन् 1565 में 'वैड' के लम्बे-पतले टुकड़े को लकड़ी में फँसा कर लिखने और चित्रकारी करने की शुरूआत हुई फिर तो मेरा प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा। धीरे-धीरे सूतली की जगह लकड़ी ने ले ली और आजकल प्रयोग होने वाली पैंसिल का **प्रारंभिक** रूप तैयार हो गया।

इंग्लैंड की ज़रूरतें तो अपने ही देश के 'वैड' से पूरी हो जाती थीं परंतु यूरोप के पास यह कम मात्रा में था। बच्चो! कहते हैं न आवश्यकता आविष्कार की जननी है। यूरोप वालों ने थोड़े से वैड में गंधक और गूँद मिलाकर मुझे बनाया। परंतु इस तरह मेरी लिखाई फीकी हो गई। बाद में लिखाई को गूढ़ा करने का भी हल निकाला गया। अब 'वैड' का नाम 'ग्रेफाईट' पड़ गया।

जब फ्राँस और इंग्लैंड में युद्ध हुआ तो इंग्लैंड ने ग्रेफाईट भेजना बंद कर दिया। तब फ्राँस के राजा ने इंजीनियर 'निकोलस' को ग्रेफाईट का कोई और हल ढूँढ़ने का आदेश (हुक्म) दिया। निकोलस ने बहुत प्रयोग किए और काफी मेहनत के बाद उसे पता चला कि ग्रेफाईट के चूरे में मिट्टी मिलाकर बारीक-बारीक टुकड़े बनाए जा सकते हैं जिन्हें भट्ठी में पका कर मज़बूत भी किया जा सकता है। इस तरह फ्राँस में ग्रेफाईट की कमी को पूरा किया जाने लगा। धीरे-धीरे और प्रयोग होते गए। अब मिट्टी की मात्रा को घटा-बढ़ा कर मेरा गूढ़ा-फीका रूप बनने लगा। बच्चो! आप भी बाज़ार से चित्रकारी के लिए फीकी और लिखने के लिए गूढ़ी पेंसिल लाते हो न।

सन् 1950 में तरल ग्रेफाईट से मुझे बनाने के प्रयोग किए गए। इस तरह से तो मेरी लिखाई और फीकी हो गई और लिखने वाले को बहुत दबा-दबा कर लिखना पड़ता था। अगर गलत लिखा भी जाता तो मेरा लिखा मिटाना बहुत कठिन हो जाता। इसलिए मेरा पुराना रूप ही सबको पसंद आया।

देखा बच्चो! कैसे सन् 1564 (मेरे जन्म) से लेकर आज 21 वीं सदी (शताब्दी) तक मैंने कितना लम्बा सफर तय किया है। अलग-अलग प्रयोगों से निकलकर मैंने कितने

सुंदर, रंग-बिरंगे और आकर्षक रूप धारण कर लिए हैं। आजकल मैं और भी नए रूपों में मिलने लगी हूँ। जैसे क्लिक वाली, छोटे-छोटे तीखे सिक्कों वाली, रंगदार सिक्कों वाली।

स्कूल में नए दाखिल होने वाले छोटे बच्चों के लिए तो मेरा खासतौर पर शृंगार किया जाता है। सुंदर सजीले रंग-बिरंगे रूप में मुझे देखकर बच्चे खुशी-खुशी लिखना सीखते हैं और जीवन की बुलंदियों की राह पर चल पड़ते हैं।

प्यारे बच्चो! अब मैं अपने बारे में जो दिलचस्प बातें बताने लगी हूँ उसे सुनकर तुम हैरान हो जाओगे। मैं एक बार में (एक साधारण पेंसिल) 45000 शब्द लिख सकती हूँ अगर आप मेरे से एक लम्बी रेखा (लकीर) खींचोगे तो लगभग 34 मील लम्बी रेखा बन जाएगी। आपने देखा मुझे बनाने में बहुत धन और मेहनत लगती है इसलिए ज़रूरत पड़ने पर ही मुझे छीला करो। कई शरारती बच्चे मुझे बेकार में ही छील-छील कर फैंकते रहते हैं। मेरा उचित इस्तेमाल करके आप जो भी चाहो जैसे चित्रकार, लेखक, इंजीनियर आदि बनने का सपना पूरा करना, यही मेरी शुभकामनाएँ हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

नन्ही	-	छोटी	चरवाहा	-	भेड़ बकरियाँ चराने वाला
इस्तेमाल	-	प्रयोग	जननी	-	जन्म देने वाली, माँ
मुश्किल	-	कठिन	शताब्दी	-	सौ साल
आवश्यकता	-	ज़रूरत	आदेश	-	हुक्म
शृंगार	-	सजावट	मज़बूत	-	पक्का
दिलचस्प	-	मज़ेदार	आकर्षक	-	मन को मोह लेने वाला
कामनाएँ	-	इच्छाएँ	उचित	-	सही, ठीक

पढ़ो समझो और लिखो

लिखना	-	पढ़ना	घटाना	-	________
मुश्किल	-	________	गूढ़ा	-	________
हार	-	________	लम्बी	-	________
पक्की	-	________			

बढ़ाना	जीत	फीका
आसान	कच्ची	छोटी

बताओ

1. पेंसिल का आविष्कार कब और कहाँ हुआ?
2. तूफ़ान आने के बाद चरवाहों ने जंगल में क्या देखा?
3. चरवाहों ने हाथों-पैरों को काला होने से बचाने के लिए क्या किया?
4. वैड से लिखने और चित्रकारी करने की शुरूआत कब और कहाँ हुई?
5. पेंसिल की लिखाई को गूढ़ा या फीका करने के लिए क्या किया जाता है?
6. तरल ग्रेफाईट से बनी पेंसिल पसंद क्यों न की गई?
7. आजकल बाज़ार में किस प्रकार की पेंसिल मिलती हैं?

ठीक शब्द को चुनकर खाली स्थान भरें

1. इंग्लैंड में एक रात भयंकर ________आया। **तूफ़ान/भूचाल**
2. ज़मीन के निचले हिस्से से ________पत्थर भी उखड़ कर बाहर आ गया। **सफेद/काला**
3. वैड का प्रयोग________ को निशान लगाने में किया जाने लगा। **जानवरों/पक्षियों**
4. वैड के ________ हिस्से में सूत लपेट दिया गया। **पूरे/आधे**
5. वैड में गंधक और________ मिला कर प्रयोग किया। **फैवीकोल/गूँद**
6. ग्रेफाईट में मिट्टी की मात्रा को बढ़ा कर लिखाई _______की जा सकती है। **फीकी/गूढ़ी**
7. एक साधारण पेंसिल________ शब्द लिख सकती है। **450/45000**

वाक्य बनाओ

पेंसिल : ____

भयंकर : ____

जंगल : ____

पदार्थ : ____

कोयला : ____

समस्या : ____

शताब्दी : ____

रंग-बिरंगे : ____

ठीक (✓) गलत (x) का निशान लगाएँ

1. वैड से हाथ नीले-पीले हो जाते थे। ( )
2. वैड के टुकड़े को लकड़ी में फँसाकर भेड़-बकरियों पर निशान लगाए जाते थे। ( )
3. पेंसिल को बनाने में कोई खास प्रयोग नहीं करने पड़े । ( )
4. पेंसिल को छील-छील कर सुंदर - सुंदर फूल बनाने चाहिए। ( )
5. एक साधारण पैंसिल 13 मील लम्बी रेखा खींच सकती है। ( )

मिलान करें

हाथ	फीका
गूढ़ा	मुँह
रंग	बढ़ा
सुंदर	बिरंगे
घटा	सजीले

वचन बदलो

जड़	-	जड़ें	जानवर	-	जानवरों
हिस्सा	-	______	प्रयोग	-	______
टुकड़ा	-	______	वृक्ष	-	______
मुश्किल	-	______	पत्थर	-	______
ज़रूरत	-	______			

जब एक ही शब्द का प्रयोग दो बार हो तो ऐसे शब्दों को पुनरुक्त शब्द कहते हैं ऐसा शब्द विशेष पर अधिक बल देने के लिए किया जाता है। नीचे दिए ऐसे शब्दों के वाक्य बनायें ताकि अर्थ स्पष्ट हो जाये

साथ-साथ : ______________________________

अलग-अलग : ______________________________

छोटे-छोटे : ______________________________

खुशी-खुशी : ______________________________

धीरे–धीरे	:	________________________________
छील–छील	:	________________________________
बारीक–बारीक	:	________________________________

जब किसी अक्षर में एक अक्षर आधा और दूसरा वही अक्षर पूरा हो तो ऐसे शब्दों को द्‌वित्व शब्द कहते हैं, जैसे बच्चों में एक 'च्' आधा और दूसरा च पूरा है। ऐसे ही 5 द्‌वित्व शब्द पाठ में से ढूँढ़कर लिखें।

1 __________ 2__________ 3__________ 4__________ 5__________

इन शब्दों में बिंदु (ं) या चंद्रबिंदु (ँ) लगाकर शुद्‌ध रूप लिखें।

पेसिल	______	चरवाहो	______	इग्लैड	______
मै	______	नही	______	फ्रास	______
मे	______	गधक	______	इजीनियर	______
हू	______	गूद	______	कामनाए	______

इन शब्दों में से संयुक्त अक्षर पर गोला लगायें

फ्राँस, प्रयोग,चित्रकारी, ग्रेफाईट, शृंगार, प्राप्त

शब्द में से नए शब्द बनायें

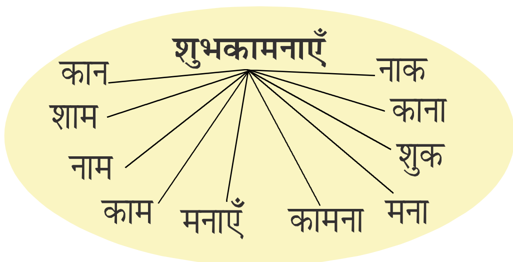

करें

1. पेंसिल को छील कर निकले फूलों से कॉपी में फूलों का गुलदस्ता बनायें।
2. बाज़ार में मिलने वाली अन्य पेंसिलों के नाम कापी में लिखें।

वर्ग पहेली में बस्ते में होने वाली 10 वस्तुओं के नाम छिपे हैं, उन्हें ढूँढ़कर दिए गए स्थान पर लिखें

अ	्	या	क	र	ण	प
2	य	पै	न	ल	व	म
या	कि	ि	ट	स्	के	ल
स	ता	स	कॉ	के	टि	ज
पु	बें	ल	पि	च	फि	र
सि	रं	ग	याँ	पै	न	च
त	र	ब	ड़	न	छ	य
का	पु	स्	त	कें	ट	प

1. स्केचपैन
2. _____
3. _____
4. _____
5. _____
6. _____
7. _____
8. _____
9. _____
10. _____

पाठ 12

भाषा की रेल

पात्र-परिचय

शिक्षक

रमेश	नजमा	सभी छात्र-छात्राएँ
सुधा	रहमान	
गुड़िया		

कुछ अन्य छात्र

[परदे पर ककहरा का चार्ट। कक्षा में बच्चे बैठे हुए हैं। एक छात्र हर अक्षर पर उँगली रखकर गाता है और सभी छात्र दोहराते हैं-]

'क' से करें काम हम जमकर,
'ख' से खेलें रोज़ समय पर।
'ग' से नहीं करेंगे गलती,
'घ' से घड़ियाँ टिक-टिक चलतीं।
'च' से चलता चक्र समय का,
'छ' से छोड़ें चक्कर भय का।
'ज' से जल जैसा जीवन हो,
'झ' से झगड़ा न अनबन हो।

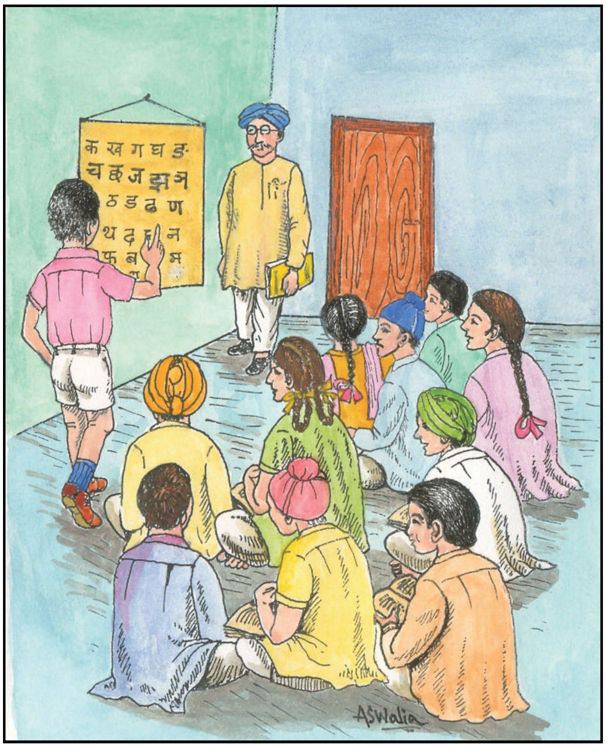

[तभी कक्षा में शिक्षक का प्रवेश। सभी छात्र खड़े हो जाते हैं। शिक्षक उन्हें इशारा कर बैठने को कहते हैं। फिर मॉनीटर की ओर मुखातिब होते हैं।]

शिक्षक : हाँ तो रमेश,क्या पढ़ रहे थे?

रमेश : सर, हम लोग ककहरा याद कर रहे थे।

शिक्षक : शाबाश! बहुत अच्छी तरकीब है यह। आज मैंने भी एक नई तरकीब सोची है।

सभी छात्र : (समवेत स्वर में) वह क्या, सर?

शिक्षक : किताबों की दुनिया से अलग हटकर क्यों न हम गीतों के माध्यम से भाषा-ज्ञान **प्राप्त** करें! तुम्हें गीत अच्छे लगते हैं न?

सभी छात्र : (खुश होकर तालियाँ बजाते हुए) जी सर, बहुत अच्छे लगते हैं।

शिक्षक : तो आज किताबें बंद और गीतों का खेल शुरू-

हँसी-खुशी की है अभिलाषा,
पढ़ें-लिखें, सीखेंगे भाषा।
भाषा में हैं खेल-खिलौने
जादूगर, सर्कस के बौने।
कथा-कहानी और पहेली,
संगी-साथी, सखी-सहेली।
भाषा की हम रेल चलाएँ,
गीत खुशी के हिल-मिल गाएँ।

शिक्षक : अच्छा बच्चो, तुमने रेल देखी है?

सभी छात्र : जी, सर!

शिक्षक : तो फिर तुम सभी खड़े होकर फटाफट रेल बन जाओ। रमेश, तुम इंजन बनो, रहमान गार्ड बनेगा और बाकी सभी डिब्बे।

[सभी लड़के-लड़कियाँ रेलगाड़ी की शक्ल में एक-दूसरे को पकड़कर खड़े हो जाते हैं।]

शिक्षक : तुम्हें अपनी किताब की 'रेल' कविता याद है न?

छात्र : जी, सर! हमारी हिंदी की पाठ-पुस्तक में है।

शिक्षक : तो वही कविता गाते हुए रेलगाड़ी को आगे बढ़ाओ। हाँ, तो शुरू हो जाओ।

[रमेश मुँह से सीटी बजाता है। सुधा दाहिना हाथ मुँह के पास रखकर 'छुक-छुक' की आवाज़ निकालने लगती है। सभी गाते और झूमते हुए आगे बढ़ते हैं।]

आओ भाई, खेलें खेल,
चलती है अब अपनी रेल।
हम इंजन है भक-भक करते,
हम डिब्बे हैं छक-छक करते।
सीटी देती अपनी रेल,
कैसा बढ़िया है यह खेल!
दिल्ली जाने वाले आएँ,
तनिक देर में हम पहुँचाएँ,
चाहें तो हम इसी रेल में
झटपट कलकत्ता हो आएँ।

टिकट-विकट का काम नहीं है,
लगता कुछ भी दाम नहीं है।
स्टेशन पर रुक गई रेल,
हुआ खत्म अब अपना खेल।

[शिक्षक हाथ उठाकर इशारा करते हैं। सभी बच्चे अपने-अपने स्थान पर आ बैठते हैं।]

शिक्षक : बच्चो! रेल का खेल तो खत्म हो गया, मगर हमारा खेल तो अभी शुरू ही हुआ है। अच्छा, जिन बच्चों ने गुब्बारे देखे हैं, वे हाथ उठाएँ।

[सभी हाथ उठाते हैं।]

शिक्षक : (नजमा से) नजमा, यह बताओ कि गुब्बारे किन-किन रंगों के होते हैं?

नजमा : लाल, हरे, नीले, पीले, गुलाबी, बैंगनी, बसंती- सभी रंगों के, सर।

शिक्षक : अच्छा, किसी को गुब्बारे पर कोई गीत याद है?

[सभी एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं।]

शिक्षक : अच्छा, मैं तुम्हें गुब्बारे पर एक गीत सुनाता हूँ। मैं आगे-आगे गाऊँगा और तुम सभी पीछे-पीछे।

[शिक्षक एक-एक पंक्ति गाते हैं। छात्र दोहराते हैं।]

रंग-बिरंगे ये गुब्बारे,
लगते कितने प्यारे-प्यारे!
दिखते हैं ये बड़े मनोहर,
जैसे नभ के चाँद-सितारे।
हवा भरो, खिल जाते जैसे,
चुम्मी पाकर बच्चे सारे।
इनके आगे बौने लगते,
खेल-खिलौने सभी हमारे।
सिर्फ एक तो गुब्बारा है,
और अधिक तो हैं गुब्बारे।

शिक्षक : तो बच्चो, कैसी लगी यह कविता?

छात्र : बहुत अच्छी, सर!

शिक्षक : अच्छा, तुम सभी एक-एक कर बताओ कि तुम्हें प्रकृति की कौन-सी चीज़ सबसे अच्छी लगती है?

नजमा : मुझे फूल प्यारे लगते हैं, सर।

सुधा : सर, मुझे पक्षी अच्छे लगते हैं।

रमेश : मुझको तो तितली भाती है, सर।

रहमान : नदी और पहाड़, सर।

गुड़िया : सूरज, चाँद और तारे, सर।

शिक्षक : बहुत अच्छा! मगर तुमने कभी सोचा है कि पक्षी, फूल, तितली, नदी, पहाड़, पेड़-पौधे, सूरज, चाँद क्या सिखलाते हैं? ये सभी यही कहते हैं कि हँसो-मुसकाओ और सबको प्यार बाँटते रहो। आओ, हम सबक लें। गाओ मेरे पीछे-पीछे।

चिड़ियों-से-चह-चह चहकें हम
        फूलों से मुसकाएँ,
रंग-बिरंगी तितली-से
        सपनों के पर फैलाएँ।
सरिता से सीखें बहना,
        पेड़ों से प्यार लुटाना,
शीतल चंदा से सीखें
        सबको चम-चम चमकाना।

रमेश : सर, हमारी भाषा की किताब में भी 'कोयल' और 'चंदा मामा' पर कविताएँ हैं।

शिक्षक : हाँ, वे कविताएँ तुम सभी को याद हैं न ? उन्हें ज़रूर याद कर लेना और कल सुनाना। मगर याद रखो, कविता सुनाना भी एक कला है। कविता धीमे-धीमे, लयात्मक ढंग से और हाव-भाव के साथ सुनानी चाहिए। मैं 'नामों के खेल' वाली एक कविता अभिनय के साथ सुनाता हूँ। तुमने देखा होगा- नाम कुछ और काम कुछ और! तो सुनो यह रोचक कविता-

सुंदर गोरे चेहरेवाली,
दीदी को सब कहते 'काली'!
काला अक्षर भैंस बराबर,
नाम है उनका विद्यासागर!
दौलतराम करें मजदूरी,

मजदूरी पड़ती न पूरी!

कौड़ीमल हैं पूँजीवाले,

नामों के हैं खेल निराले!

[सभी छात्र तालियाँ पीट-पीटकर हँसते हैं।]

शिक्षक : मगर बच्चो, तुम्हें नाम पर नहीं, काम पर ध्यान देना चाहिए। माँ-बाप ने जो नाम रख दिया, वही अच्छा है। है न?

सभी छात्र : जी, सर!

शिक्षक : चलते-चलते एक और बात बता दूँ। जानते हो, अपना-अपनी, मेरा-मेरी, बेटा-बेटी, भाई-बहन, माता-पिता आदि क्यों कहा जाता है? स्त्रीलिंग और पुल्लिंग के कारण। है न? तो सुनो एक गीत यह भी-

पापा जी की दाढ़ी, मूँछ,

कुत्ते, बंदर की दुम, पूँछ।

जीभ, नाक, आँखें लो गिन,

ये सब होंगी स्त्रीलिंग।

हाथ, पैर, सिर, कान औ' केश,

घर, परिवार, गाँव औ' देश,

मौसम, पर्व, महीना, दिन

कहलाते हैं ये पुल्लिंग।

शिक्षक : बच्चो, कैसे लगे ये गीत?

सभी छात्र : बहुत अच्छे, सर! बहुत मज़ा आया।

शिक्षक : तो तुम भी इन मज़ेदार गीतों को ज़रूर याद करके सुनाना। कल मैं कहानी और पहेली लेकर आऊँगा। आओ, एक बार फिर हम सभी गाएँ। *(समवेत स्वर में गाते हैं।)*

हँसी-खुशी की है अभिलाषा,
पढ़े-लिखें, सीखेंगे भाषा।
भाषा में हैं खेल-खिलौने,
जादूगर, सर्कस के बौने।
कथा-कहानी और पहेली,
संगी-साथी, सखी-सहेली।
भाषा की हम रेल चलाएँ,
गीत खुशी के हिल-मिल गाएँ।

[घंटी बजती है। बच्चे रेलगाड़ी की शक्ल में एक-एक कर कक्षा से बाहर निकलते हैं।]

[परदा गिरता है।]

अभ्यास

शब्दार्थ

ककहरा	:	'क' से 'ह' तक *वर्णमाला के अक्षर*	नभ	:	आकाश
अनबन	:	मनमुटाव	केश	:	बाल
मुखातिब	:	संबोधन करना	सरिता	:	नदी
अभिलाषा	:	इच्छा	समवेत	:	समूह
दाम	:	मूल्य	शीतल	:	ठंडा

बताओ

1. ककहरा किसे कहते हैं?
2. घड़ी क्या संदेश देती है?
3. भाषा की रेल में क्या-क्या है?
4. गुब्बारा क्यों प्यारा लगता है?
5. पेड़ों से हम क्या सीखते हैं?

6. विद्या सागर के लिए काला अक्षर भैंस बराबर क्यों है?
7. नामों के निराले खेल क्या हैं?

चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दें

1. दैनिक जीवन में भाषा का क्या महत्व है?
2. भाषा में हम क्या-क्या पढ़ते हैं?
3. गुब्बारों की क्या विशेषता है?
4. पक्षी, नदी, फूल, तितली, पेड़-पौधे हमें क्या सिखाते हैं?
5. कविता कैसे सुनानी चाहिए?
6. दूसरी भाषाओं के शब्दों से भाषा सशक्त होती है, इस पाठ में बहुत-से शब्द ऐसे आए हैं जैसे सर, गार्ड आदि। पाठ में ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखो।

लिंग बदलो

कुत्ता	कुतिया
बंदर	________
बूढ़ा	________
लोटा	________

समानार्थक शब्द लिखें

किताब	________	बंदर	________
सुधा	________	पक्षी	________
नदी	________	सूरज	________
पहाड़	________	चाँद	________
फूल	________	कोयल	________
अभिलाषा	________		

भाषा में सार्थक शब्दों के साथ कुछ निरर्थक शब्द भी अपना महत्व रखते हैं जैसे टिकट-विकट, रोटी-वोटी, ऐसे पाँच शब्द लिखो।

________ ________

________ ________

____

रेल+गाड़ी = रेलगाड़ी। यह शब्द दो अलग-अलग भाषाओं के मेल से बना है- रेल अंग्रेज़ी भाषा का शब्द है जबकि गाड़ी हिंदी भाषा का शब्द है। ऐसे शब्दों को संकर शब्द कहते हैं अध्यापक की सहायता से कोई पाँच संकर शब्द लिखो।

कुछ करने को

प्रकृति हमें बहुत कुछ सिखाती है। ऐसी ही सीख संबंधी कोई कविता याद करके कक्षा में सुनाओ।

पाठ 13

मैं भी पढ़ने जाऊँगी

बापू अम्मी, काका काकी,
मैं भी नाम कमाऊँगी।
लेकर बस्ता-पोथी तख्ती,
मैं भी पढ़ने जाऊँगी॥

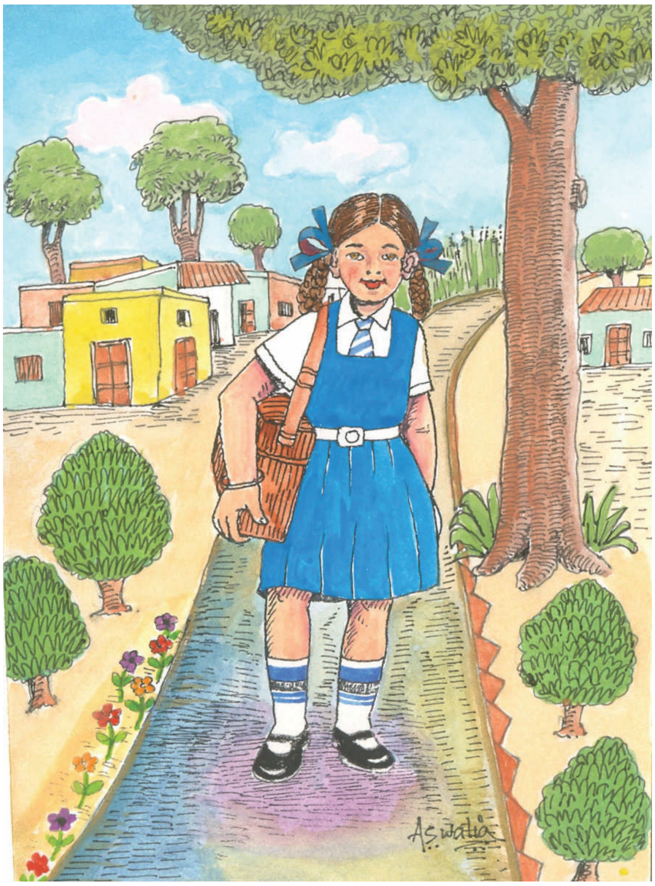

चूल्हा, चौंका और सफ़ाई
चाहे करवाना मुझसे।
गोहा, कूड़ा, जूठे बर्तन
चाहे मंजवाना मुझसे॥

पर वीरे की तरह मुझे भी,
बस ले देना इक बस्ता।
चंद किताबें और कॉपियाँ,
एक स्लेट और इक बस्ता॥

देखना इक दिन बापू तेरी,
वीरो कुछ बन जाएगी।
विद्या धन को अर्जित करके,
अफसर बनकर आएगी॥

छोड़ दे बोतल बापू मेरे,
नशा तो एक तबाही है।

इसने अपने घर आँगन की,
कितनी खुशियाँ खाई हैं॥

पलंग-पालने, बिस्तर, कपड़े,
और गहने न बनवाना।
विद्या-धन ही असली गहना,
बस, मुझको ये पहनाना॥

बनकर टीचर, डॉक्टर इक दिन,
अपना फर्ज़ निभाऊँगी।
जीवन सफल बनेगा मेरा,
तेरे सदके जाऊँगी॥

अभ्यास

शब्दार्थ

पोथी - पुस्तक

तख्ती - लकड़ी का आयताकार टुकड़ा, जिस पर पीली मिट्टी का लेप लगाकर काली स्याही से कलम के साथ लिखा जाता है।

गोहा	-	गोबर	बड़ता	-	स्लेटी
अर्जित	-	कमाया हुआ, बटोरा हुआ	तबाही	-	नाश, बरबादी
चंद	-	थोड़ी-सी, कुछ	टीचर	-	पढ़ाने वाला, गुरु

बताओ

1. 'मैं भी पढ़ने जाऊँगी' कविता किसने लिखी है?
2. इस कविता में कौन, किससे और क्या कह रहा है?
3. बालिका अपने पिता से क्या माँग करती है?
4. कविता में असली गहना किसे कहा है?
5. बालिका अपने पिता को क्या छोड़ने के लिए कहती है?

वाक्य बनाओ

नाम कमाना = सिद्धि पाना = ____

सदके जाना = वारी जाना, निछावर होना = ____________________________________

कविता की पंक्तियाँ पूरो

पर वीरे की तरह मुझे भी,
बस ले देना ________।
चंद किताबें और ________;
एक स्लेट और ________।

सरलार्थ करो

बनकर टीचर, डॉक्टर इक दिन,
अपना फर्ज़ निभाऊँगी।
जीवन सफल बनेगा मेरा,
तेरे सदके जाऊँगी।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं। पुस्तक के चित्र में से उनके समान अर्थ वाले शब्द ढूँढ़कर लिखो

बापू = ________

अम्मी = ________

विद्‌या = ________

टीचर = ________

गहना = ________

बहुवचन बनाओ

बस्ता	= बस्ते	स्लेट	= स्लेटें	पोथी	= पोथियाँ
चूल्हा	= ________	किताब	= ________	तख्ती	= ________
कपड़ा	= ________	कमीज़	= ________	कॉपी	= ________
गहना	= ________	आँख	= ________	खुशी	= ________

कविता में आये अंग्रेज़ी भाषा के शब्द लिखो

नये शब्द बनाओ

शब्द	संयुक्त व्यंजन	नया शब्द
अम्मी	= म्म	चम्मच
तख्ती	= ख्त =	________
चूल्हा	= ल्ह =	________
बस्ता	= स्त =	________
चन्द	= न्द =	________
स्लेट	= स्ल =	________

कल्पनात्मक अभिव्यक्ति

बच्चे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं? अपने विचार पाँच-सात पंक्तियों में लिखो।

____

____

____

____

____

____

____

अध्यापन निर्देश :-

अध्यापक बच्चों को बताये कि ऊपर दिये सभी शब्द खड़ी पाई (।) हटाकर बने हैं। हिंदी वर्णमाला की पुनरावृत्ति करते हुए बच्चों को खड़ी पाई वाले अक्षर लिखने के लिए कहें।

पाठ-14

भगत पूरण सिंह

डेरा साहिब गुरुद्वारे लाहौर के ग्रंथी सरदार अच्छर सिंह ने चार साल के लूले बच्चे को जब एक अविवाहित युवक को सौंपा, तो उसने उसे प्रभु की देन समझकर प्रसन्नता से अपना लिया। मनुष्य का स्वभाव भी बड़ा विचित्र है। एक ओर तो जन्म देने वाले माँ-बाप लूले बच्चे से तंग आकर उससे पीछा छुड़ाने के प्रयत्न से उसे गुरुद्वारे छोड़ आए और दूसरी ओर उसी को प्रभु की देन समझ कर अपनाने में आनंद अनुभव करने वाला युवक खड़ा है। उसने सच्चे दिल से उसे अपनाया और उसका माँ-बाप बनकर न केवल जीवन के महत्वपूर्ण चौदह वर्षों तक पीठ पर लाद कर घूमता रहा, बल्कि उसी की सेवा के प्रयत्न में जीवन की सार्थकता और सफलता समझी। यह और कोई नहीं अमृतसर में पिंगलवाड़े का संस्थापक व संचालक भगत पूरण सिंह ही था- जिसने भगवान को पाने का- भक्ति का सबसे अच्छा साधन ढूँढ़ निकाला था-भगवान के ही बनाए हुए दु:खी मनुष्यों की सेवा कर उनका दु:ख दूर करना। माँ की प्रेरणा से उसमें यह भाव जगा था।

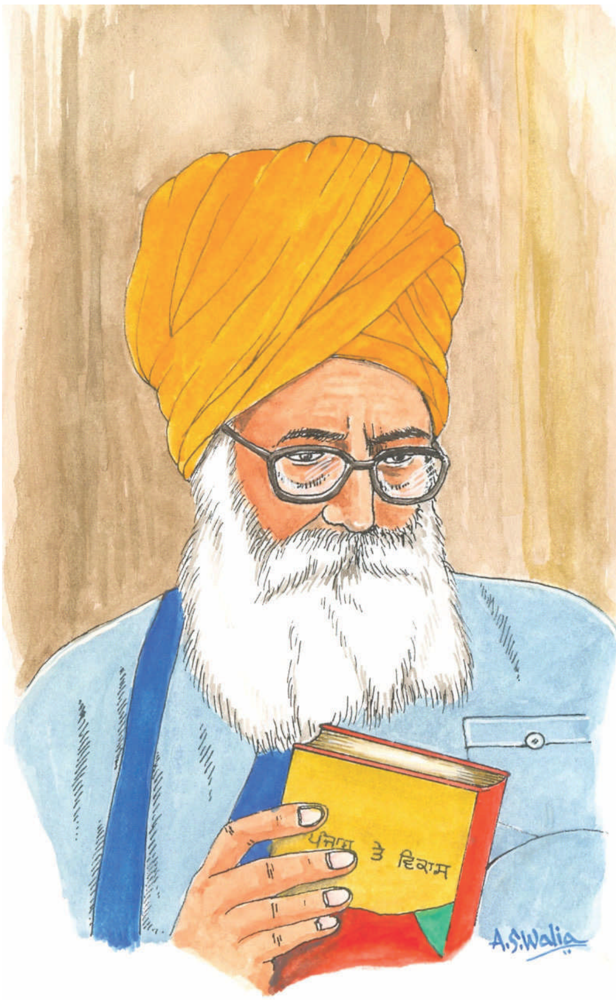

गुरुद्वारे में आने वाले दयावान, उदार, सहृदय और संवेदनशील लोगों में से ग्रंथी अच्छर सिंह जब किसी समर्थ भक्त को ढूँढ रहा था, तो विनयी, मधुर प्रिय और सेवा-परायण युवक पूरण सिंह ही मिला। उसका यह चुनाव ठीक ही सिद्ध हुआ। जब पूरण सिंह ने जीवन-भर न केवल इस लूले पिआरा सिंह की सेवा की, अपितु न जाने कितने हज़ारों लोगों को दुखियारे लोगों की सेवा करने की प्रेरणा भी दी। सेवा के लिए जिस तप, त्याग और साधना की ज़रूरत है उसे अपनाने पर ही मनुष्य त्याग करना सीखता है और यह त्याग

ही मनुष्य को ऊपर उठाता है। अच्छा मनुष्य बनाता है। यह त्याग धन का हो, कपड़ों का हो, पुस्तकों का हो, भोजन का हो या इनसे भी बढ़कर कीमती समय का हो- दुखी मनुष्यों के लिए-जो उनके कुछ दु:ख को, अभाव को दूर करता हो, तो त्याग करने वाले मनुष्य को भी शांति और संतोष देता है। त्याग वही होता है, जिसमें कोई स्वार्थ न हो। थोड़े-से पैसे देकर कमरे पर, पत्थर पर अपना नाम खुदवा कर लगवाना या अख़बार में फोटो छपवा कर बड़ी ख़बर लगवाना सच्चा त्याग नहीं कहला सकता क्योंकि उसमें यश कमाने या दानी कहलाने का भाव छिपा रहता है।

अमृतसर का यह पिंगलवाड़ा भारत का ही नहीं, अपितु संसार-भर में प्रसिद्ध स्थान बन गया है, जहाँ अब लगभग 1100 से भी अधिक लंगड़े-लूले, बहरे, गूँगे, अँधे, चोट लगने के कारण ज़ख्मी आदि केवल शारीरिक दृष्टि से ही अपंग नहीं, अपितु मानसिक दृष्टि से भी रोगी, बच्चे, जवान, बूढ़े पुरुष, लड़कियाँ और सभी आयु की स्त्रियाँ भी वहाँ रहती हैं। इनका एक महीने का खर्च लाखों रुपयों में है जो बहुतायत से लोगों के दान से आता है। इसके लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबधंक कमेटी और पंजाब सरकार भी कुछ अनुदान देती है। बहुत से सेवक बस के अड्डों पर या रेल के स्टेशनों पर भी दान इकट्ठा करते हैं। कुछ सेवक पिंगलवाड़े में रहकर दुखियों की सेवा करते हुए उनका दु:ख दूर करने या कम करने का प्रयत्न करते हैं। सच तो यह है कि भगत पूरण सिंह को जो भी कोई दुखी मिलता था, उसके दु:ख दूर करने का वह अधिक से अधिक प्रयत्न करता था। उसके इसी मानवीय गुण ने उसे महान् बना दिया। उसने अविवाहित रहकर दुखी मानवता की सेवा का व्रत ले लिया था और जीवन भर तप, त्याग, सेवा और साधना से उसे निभाता रहा और अपने जीवन को सफल बनाया। भारत सरकार द्वारा सन् 1979 में उन्हें 'पद्म श्री' से सम्मानित किया गया। महापुरुषों ने सच ही कहा है- वही पुरुष उतना महान है, जो जितने अधिक मानव समाज का जितना अधिक दु:ख दूर करता है---और भगत पूरण सिंह भी सच्चे महापुरुष थे।

अभ्यास

शब्दार्थ

पिंगलवाड़ा	=	विकलांगों के रहने की जगह	संवेदनशील	= जल्दी पसीजने वाला
सहृदय	=	कोमल हृदय वाला	उदार	= व्यापक हृदय वाला
संचालक	=	किसी संस्था को चलाने वाले	संस्थापक	= संस्था की स्थापना करने वाला
समर्थ	=	योग्य, उपयुक्त	अनुदान	= दान स्वरूप दी गई राशि

बताओ

1. लूले बच्चे के माँ-बाप ने बच्चे को कहाँ और क्यों छोड़ा?
2. किसकी प्रेरणा से भगत पूरण सिंह ने दीन-दुखियों की सेवा को अपना लक्ष्य बनाया?
3. भगत पूरण सिंह ने भगवान को पाने का सबसे अच्छा साधन क्या ढूँढ़ा?
4. लूले बच्चे का क्या नाम था?

इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखो

1. चार साल के लूले बच्चे को किसने, किसे सौंपा और क्यों?
2. पिंगवाड़े की आय का साधन क्या है?
3. 'यह त्याग ही मनुष्य को ऊपर उठाता है।' इस पंक्ति का क्या भाव है?

इन शब्दों के आगे 'अ' लगाकर विपरीत शब्द बनाओ

विवाहित	=	**अविवाहित**	प्रसन्न	=	________
समर्थ	=	________	संतोष	=	________
सफल	=	________	मानवीय	=	________
शांति	=	________			

वाक्य बनाओ

प्रसन्नता = ____

प्रेरणा = ____

सेवापरायण = ____

अभाव = ____

स्वार्थ = ____

कोष्ठक में दिए गए शब्दों में से सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

(क) लूले बच्चे को एक ________युवक को सौंपा गया। (विवाहित/अविवाहित)

(ख) पिंगवाड़े का संस्थापक व संचालक________था। (अच्छर सिंह/ भगत पूरण सिंह)

(ग) पिंगलवाड़े का महीने का खर्च ________रुपये है। (हज़ारों/लाखों)

(घ) त्याग में ________की भावना होती है। (स्वार्थ/नि:स्वार्थ)

समानार्थक लिखो

भगवान	________	विवाहित	________
आनंद	________	दयावान	________
स्वभाव	________	आयु	________

प्रयत्न	________	विचित्र	________
संतोष	________	रोगी	________

शुद्ध रूप लिखो

परसन्नता	________	विचितर	________
सस्थापक	________	शरीरिक	________
अपनग	________	पिनगलवाड़ा	________

पाठ में आए संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण के पाँच-पाँच शब्द ढूँढ़कर लिखो

	संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण
1.	लाहौर	वह	उदार
2.	________	________	________
3.	________	________	________
4.	________	________	________
5.	________	________	________

आत्मबोध

1. पूरण सिंह के चरित्र से छात्र प्रेरणा ग्रहण करें।
2. सेवा एवं त्याग की शिक्षा देने वाले महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ें ।

पिंगलवाड़े से संबंधित विशेष जानकारी

पिंगलवाड़ा एक सामाजिक संस्था है जो कि अपंग, नि:सहाय, रोगी, वृद्ध, अनाथ व अन्य उपेक्षित जनों के कल्याण हेतु नि:स्वार्थ रूप से सन् 1947 से सतत कार्य कर रही है। इसमें एक अजायबघर, औषधालय, प्रयोगशाला, भगतपूर्ण सिंह आदर्श स्कूल, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंन्द्र आदि की स्थापना की गई है। यह संस्था इसके अतिरिक्त रक्तदान शिविर, वृक्षारोपण, ग़रीबों के विवाह, आदि सामाजिक कार्य भी करती है। इस संस्था की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें कार्य करने वाले सेवादारों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया गया है जो अपना कार्य लगन व ईमानदारी से करते हैं।

पाठ 15

दो बैलों की कथा

झूरी के पास दो बैल थे- हीरा और मोती। दोनों में बहुत प्यार था। वे नाँद में एक साथ मुँह डालते और एक ही साथ हटाते। झूरी उनके चारे- पानी का बड़ा ध्यान रखता था। वह कभी भूलकर भी उन्हें मारता-पीटता नहीं था। पशु भी प्यार का भूखा होता है। वे भी झूरी को बहुत चाहते थे।

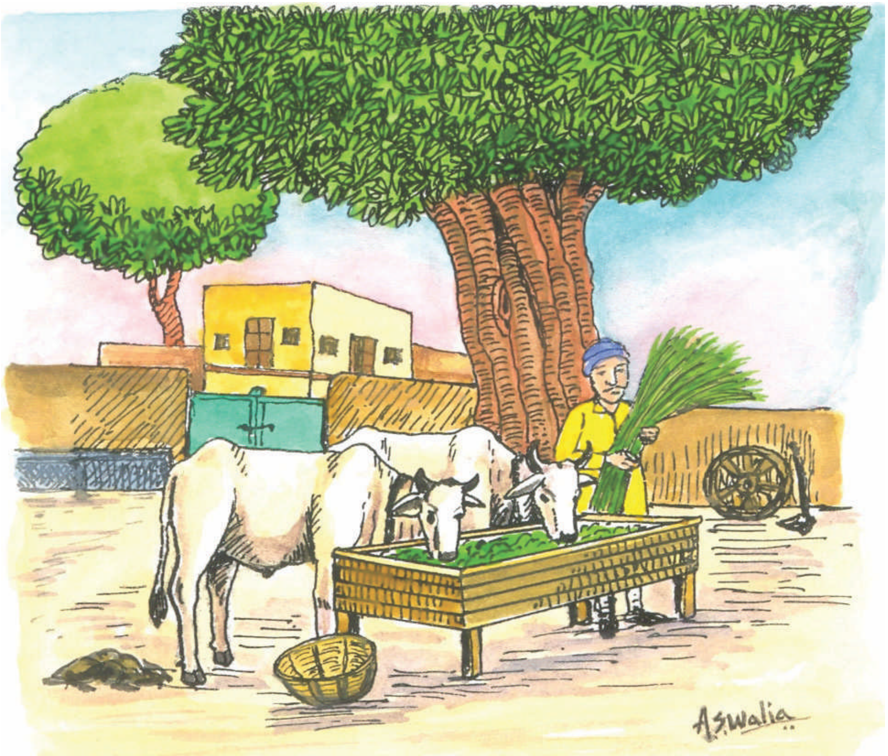

झूरी की पत्नी का भाई गया एक बार हीरा और मोती को कुछ दिन के लिए अपने गाँव ले जाने लगा। बैलों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह उन्हें क्यों और कहाँ लिए जाता है। रास्ते में उन्होंने उसे बहुत तंग किया। मोती बाएँ भागता तो हीरा दाएँ। इस पर गया ने उन्हें बहुत पीटा। घर पहुँचकर उसने उनके सामने रूखा- सूखा भूसा डाल दिया पर उन्होंने उसे सूँघा तक नहीं।

रात होने पर दोनों बैलों ने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया। उन्होंने ज़ोर लगाकर रस्सियाँ तोड़ डालीं और भाग निकले। सुबह होने पर जब झूरी ने उन्हें थान पर खड़ा देखा तो वह सब कुछ समझ गया और प्यार से उन पर हाथ फेरने लगा। परंतु झूरी की पत्नी उन्हें देखकर जल-भुन गई। उसने उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल दिया, फिर भी वे खुश थे।

अगले दिन गया फिर आया। इस बार वह उन्हें गाड़ी में जोतकर ले चला। रास्ते में मोती ने चाहा कि गाड़ी गड्ढे में धकेल दे। पर हीरा समझदार था। उसने गाड़ी संभाल ली। जैसे-तैसे गया घर पहुँचा।

अब गया ने उनसे बड़ा सख्त काम लेना शुरू किया। वह उन्हें दिनभर हल में जोतता। जब-तब उन्हें मारता-पीटता। शाम को घर लाकर मोटे-मोटे रस्सों से बाँधकर उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल देता। वे लाचार निगाहों से एक-दूसरे को देखते रहते।

गया के घर में एक छोटी-सी लड़की रहती थी। वह बैलों की दुर्दशा देखती तो उसे बुरा लगता। वह रात को चुपके से उन्हें रोटी खिलाती। दोनों बैल उसके प्यार के सामने अपनी मार और अपमान भूल जाते। एक दिन मोती रस्सी को चबाकर तोड़ने की कोशिश कर रहा था, वह लड़की आई और उसने दोनों बैलों को खोल दिया। दोनों वहाँ से भाग निकले। थोड़ी देर बाद जब गया को पता चला तो वह भी उनके पीछे दौड़ा पर उन्हें पकड़ न सका।

अब हीरा और मोती आज़ाद थे।

रास्ते में उन्हें एक साँड मिला। वह उनकी ओर लपका तो हीरा- मोती के होश उड़ गए। भागना बेकार था। इसलिए दोनों ने साहस से काम लिया। साँड ने आकर हीरा पर वार किया तो मोती ने उस पर पीछे से सींगों से चोट की। साँड घबराया। वह किसी एक को तो मार कर कचूमर निकाल देता, पर यहाँ दो थे। मिलकर काम करने में बल है। दोनों ने मिलकर साँड को भगा दिया। मोती कुछ दूर उसके पीछे दौड़ा, पर हीरा ने उसे दूर तक न जाने दिया।

दोनों अब बड़े प्रसन्न थे। आगे चले तो रास्ते में मटर का खेत दिखाई दिया। भूख तो लग ही रही थी। हरी-हरी मटर देखकर उनकी भूख और भी तेज़ हो गई। वे खेत में घुस गए और लगे मटर खाने। अभी पेट भरा भी न था कि खेत के रखवालों ने उन्हें देख लिया। उन्होंने उन दोनों को चारों ओर से घेरकर पकड़ लिया और काँजीहौस में बंद करवा दिया।

हीरा और मोती ने देखा कि काँजीहौस में और भी कई जानवर थे- भैंसें, घोड़े, घोड़ियाँ, गधे- सबके सब कमज़ोर और दुबले-पतले। वहाँ किसी के लिए न चारे का प्रबंध था न पानी का। "यहाँ कहाँ आ फँसे?" उन्होंने सोचा।

रात हुई। मोती ने हीरा से कहा कि अगर दीवार तोड़ दी जाए तो बाहर निकला जा सकता है। उसने सींगों से दीवार गिराने का प्रयत्न किया। दो-चार चोटों में ही थोड़ी-सी दीवार गिर गई। उसका उत्साह बढ़ा तो उसने और ज़ोर से चोटें लगानी शुरू कीं।

दीवार में रास्ता बनते ही पहले तो घोड़ियाँ भागीं, फिर भैंसें और बकरियाँ। मोती ने गधों को भी सींग मार-मार कर भगा दिया। उसने हीरा से भी भाग चलने को कहा, पर हीरा ने मना कर दिया।

सुबह होने पर काँजीहौस वालों ने देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने हीरा और मोती को नीलाम कर दिया। नीलाम में सबसे ऊँची बोली बोलकर एक व्यापारी ने उन्हें खरीद लिया। वह दोनों को लेकर अपने गाँव की ओर चला। मार खाते-खाते और भूख सहते-सहते हीरा-मोती बहुत कमज़ोर हो गए थे। उनकी हड्डियाँ निकल आई थीं। भूख -प्यास से व्याकुल बैलों में कुछ भी दम बाकी नहीं रहा था। वे चुपचाप व्यापारी के साथ चलने लगे। रास्ता उन्हें जाना-पहचाना लगा तो न जाने कहाँ से दम आ गया। वे दोनों तेज़ी से भागे। आगे-आगे दोनों बैल, पीछे-पीछे व्यापारी। पर जब तक वह उन्हें पकड़े तब तक दोनों बैल अपने घर पहुँच चुके थे।

बैलों को देखकर झूरी को बड़ी खुशी हुई। वह उनसे लिपट गया। इतने में व्यापारी भी वहाँ आ पहुँचा और उन्हें माँगने लगा। मोती ने आव देखा न ताव, वह व्यापारी पर झपटा। व्यापारी जान बचाकर वहाँ से भागा। झूरी की पत्नी भी भीतर से दौड़ी-दौड़ी आई। उसने दोनों बैलों के माथे चूम लिए।

अभ्यास

शब्दार्थ

नीलाम - बोली लगाकर बेचना

नाँद - पशुओं को चारा डालने का लकड़ी या लोहे का बड़ा टब, खुरली

काँजीहौस - जहाँ लावारिस व आवारा पशुओं को पकड़ कर रखा जाता है।

व्याकुल	–	बेचैन
भूसा	–	पशुओं का सूखा चारा
थान	–	वह स्थान जहाँ पशु बाँधे जाते हैं।
लाचार	–	मज़बूर, बेबस

पढ़ो और करो

पहले क्या हुआ, फिर क्या हुआ? इस क्रम से नीचे लिखे वाक्यों के सामने प्रत्येक वाक्य की क्रम संख्या लिखो

- झूरी की पत्नी का भाई बैलों को अपने घर ले गया।
- छोटी लड़की ने दोनों बैलों को खोल दिया।
- झूरी के पास हीरा और मोती नामक दो बैल थे।
- दूसरी बार गया बैलों को गाड़ी में जोतकर ले गया।
- खेत के मालिक ने दोनों बैलों को काँजीहौस में बंद करवा दिया।
- दोनों बैल रात में रस्सी तुड़ाकर घर भाग आए।
- एक व्यापारी ने दोनों बैलों को खरीद लिया।
- झूरी की पत्नी ने दोनों बैलों के माथे चूम लिए।
- दोनों बैल व्यापारी के पास भागकर घर आ गए।

बताओ

1. झूरी के पास कितने बैल थे? उनके नाम लिखो।
2. बैलों के प्रति झूरी का व्यवहार कैसा था?
3. गया बैलों के साथ कैसा व्यवहार करता था?
4. गया के घर दोनों बैल मार और अपमान कब भूल जाते थे?
5. मिलकर काम करने में बल है–यह किसने कहा?
6. काँजीहौस की दीवार सींग मारकर किसने तोड़ी?
7. काँजीहौस वालों ने बैलों को किसे नीलाम कर दिया?
8. हीरा और मोती अपने मालिक के पास किस तरह वापिस आये?
9. इस कहानी को पढ़कर हीरा और मोती के स्वभाव के बारे में लिखो।

इन प्रश्नों के उत्तर चार या पाँच वाक्यों में लिखो

1. हीरा और मोती कौन थे?
2. गया कौन था? वह बैलों को अपने घर क्यों ले गया?
3. हीरा और मोती गया के घर क्यों नहीं रहना चाहते थे?
4. हीरा और मोती अपने घर किस तरह वापिस आए?

वाक्यों में प्रयोग करो

होश उड़ जाना	=	घबरा जाना	=	________
साहस से काम लेना	=	हौसला रखना	=	________
जान बचाकर भाग जाना	=	दौड़ना	=	________
आव देखा न ताव	=	बिना सोचे-विचारे	=	________
जल भुन जाना	=	क्रोधित होना	=	________
माथा चूमना	=	प्यार करना	=	________

पढ़ो, समझोऔर लिखो

ठंडी- ठंडी	=	**बहुत ठंडी**	मारता-पीटता	=	**मारता और पीटता**
मोटे-मोटे	=	________	रूखा=सूखा	=	________
धीरे-धीरे	=	________	चारा-पानी	=	________
हँसते-हँसते	=	________	भूख-प्यास	=	________
नन्हे-नन्हे	=	________	जाना-पहचाना	=	________

विपरीत शब्द लिखो

प्रसन्न	=	________	प्यार	=	________
मान	=	________	कमज़ोर	=	________
बायें	=	________	भीतर	=	________
रात	=	________	खुशी	=	________
आज़ाद	=	________	गुण	=	________

प्रयोगात्मक व्याकरण

1. गया ने उन्हें बहुत पीटा।
2. घर पहुँचकर उसने उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल दिया।
3. उन्होंने ज़ोर लगाकर रस्सियाँ तोड़ डालीं।
4. वह रात को चुपके से उन्हें रोटी खिलाती।

उपरोक्त वाक्यों में '**पीटा**', '**डाल दिया**', **तोड़ डालीं**, तथा '**खिलाती**' से किसी काम का करना या होना प्रकट होता है। ये शब्द **क्रिया** हैं।

अतः जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाये, उसे क्रिया कहते हैं।

अन्य उदाहरण :- भागना, हटाना, सूँघना, पकड़ना, चबाना, जाना, देखना, गिरना, हँसना, मारना, उठना, बैठना आदि।

इन वाक्यों में से क्रिया शब्द छाँटिये

1. गया बैलों के पीछे दौड़ा।
2. साँड घबराया।
3. वह दोनों को लेकर अपने गाँव की ओर चला।
4. वे दोनों तेज़ी से भागे।
5. वह उनसे लिपट गया।
6. वह व्यापारी पर झपटा।
7. उसने दोनों बैलों के माथे चूम लिये।

सोचिए और लिखिए

1. पशु भी प्यार का भूखा होता है।
2. अपने पालतू पशु पर पाँच वाक्य लिखो।

____

____

____

____

____

पाठ 16

रक्षा-बंधन

बी-254, सेक्टर-14,
चंडीगढ़।

प्रिय मित्र प्रवीण

सस्नेह नमस्ते।

मित्र, आज मैं जब स्कूल से घर आया तो माँ ने मुझे पत्र देते हुए कहा कि अमेरिका से तुम्हारे मित्र प्रवीण का पत्र आया है। पत्र पढ़कर खुशी हुई कि तुम वहाँ सकुशल हो। पत्र में तुमने रक्षा-बंधन त्योहार के बारे में जानने की इच्छा की थी। जैसा कि मैंने तुम्हें अपने पिछले पत्र में बताया था कि भारत त्योहारों का देश है। जिस प्रकार दशहरा असत्य पर सत्य की विजय का, दीपावली अज्ञान पर ज्ञान का, होली प्रेम व भाईचारे का, ईद परोपकार, प्रेम, एकता व भाईचारे का त्योहार है उसी तरह रक्षा-बंधन का भी अपना विशेष महत्व है। यह एक सामाजिक त्योहार है। यह भाई-बहन के पवित्र प्रेम, कर्त्तव्य व विश्वास का त्योहार है। यह भाई- बहन के रिश्ते को सुदृढ़ करता है।

रक्षा-बंधन अर्थात रक्षा के लिए बंधन। इसे राखी (रक्षा) भी कहते हैं। बहन अपने भाई की कलाई पर धागों से बनी राखी बाँधती है और प्रार्थना करती है कि ईश्वर उसके भाई की आयु लम्बी करे तथा हर मुसीबत की घड़ी में उसकी रक्षा करे तो भाई भी अपनी बहन को वचन देता है कि वह इस राखी की लाज रखेगा और बहन की ज़िंदगी में खुशियाँ ही खुशियाँ भर देगा तथा कभी भी गम न आने देगा।

राखी बंधवाने के बाद भाई अपनी बहन को प्रेम स्वरूप कोई न कोई उपहार अवश्य देता है। तो बहन भी इस उपहार को सहर्ष स्वीकार करती है।

मित्र, यह त्योहार बहुत ही सादगी-भरा होता है किंतु फिर भी इस त्योहार से कुछ दिन पूर्व बाज़ारों में चहल-पहल बढ़ जाती है। दुकानें रंग-बिरंगी राखियों व धागों से सजी होती हैं। राखियों के साथ-साथ मिठाइयों व उपहारों की दुकानें भी सजी होती हैं। मेरी बहन ने बाज़ार से मेरी मन पसंद बर्फी खरीदी तथा अपने हाथ से बड़ी सुंदर राखी बनायी। राखी वाले दिन सुबह उसने मेरे माथे पर चावल तथा चंदन का टीका लगाया तथा मेरी कलाई पर राखी बाँधी और बर्फी से मेरा मुँह मीठा करवाया। मैंने भी उसकी रक्षा करने का वचन लिया और भेंटस्वरूप उसे घड़ी दी जिसे पाकर वह बहुत खुश हुई।

सचमुच, रक्षा-बंधन का त्योहार मुझे बहुत अच्छा लगा। जब मैं अमेरिका में था तब मुझे इन त्योहारों का महत्व नहीं पता था किंतु भारत आकर मुझे पता चला कि ये त्योहार ही भारतीय संस्कृति का आइना हैं। ये त्योहार ही हमारे जीवन में नई ताज़गी व स्फूर्ति लाते हैं तथा प्रेम व आपसी भाईचारा बढ़ाते हैं।

मित्र, तुम मुझे क्रिसमिस के बारे में ज़रूर लिखना। अंकल व आँटी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा अभिन्न मित्र,

सुनील

अभ्यास

शब्दार्थ

सुदृढ़	:	मज़बूत	उपहार	:	भेंट
सहर्ष	:	खुशी से	चहल-पहल	:	रौनक
स्फूर्ति	:	चुस्ती	मुसीबत	:	संकट

बताओ

1. लेखक ने भारत को त्योहारों का देश क्यों कहा है?
2. 'रक्षा-बंधन' त्योहार किस का प्रतीक है?
3. बहन ईश्वर से रक्षा बंधन के दिन क्या प्रार्थना करती है?
4. भाई रक्षा-बंधन पर बहन को क्या वचन देता है?
5. लेखक के अनुसार त्योहारों का क्या महत्व है?

निम्नलिखित शब्दों को उचित खाने में लिखो

घड़ी, अमेरिका, घर, बहन, प्रवीण, बर्फी, स्कूल, एकता, मिठाई, प्रेम, प्रदीप, बाज़ार, अंकल, परोपकार, राखी, सत्य

व्यक्ति	स्थान	वस्तु	भाव

विलोम शब्द पाठ में से ढूँढ़कर लिखो

नफरत	________	शाम	________
शत्रु	________	कुरूप	________
सत्य	________	अस्वीकार	________
ज्ञान	________	अपवित्र	________
खट्टा	________	उदास	________

शुद्ध शब्द पर गोला लगाओ

1. ईद/इद
2. पराथना/प्रार्थना
3. खुशियाँ/ खुशीयाँ
4. दुशहरा/ दशहरा
5. टीका/ टिका
6. स्वरुप/स्वरूप
7. चैहल-पैहल/चहल-पहल
8. त्युहार/ त्योहार
9. मीठा/मिठा
10. दुकान/दूकान

खड़ी पाई हटाकर संयुक्त व्यंजन बनाइए और प्रत्येक के लिए दो-दो शब्द लिखो

स् + न = स्न	स्नेह	स्नान
त् + र = ____	____	____
म् + ह = ____	____	____
प् + र = ____	____	____
त् + य = ____	____	____
क् + ष = **क्ष**	____	____
न् + त = ____	____	____
त् + त= ____	____	____

सोचिए और लिखिए

1. जब आपको आपकी बहन राखी बाँधती है तब आपको कैसा लगता है? तीन वाक्य लिखें ।
2. आपका मनपसंद त्योहार कौन-सा है? पाँच वाक्यों में लिखें ।
3. रक्षा-बंधन के जैसा ही त्योहार दीपावली के दो दिन बाद भाई दूज आता है। इस पर तीन वाक्य लिखें।
4. रक्षा-बंधन पर अख़बार, मैगज़ीन अथवा किसी अन्य स्रोत से कोई कविता चुनकर लिखें।

कुछ करिए

1. अपने हाथों से राखी बनायें।
2. राखी का चित्र बनायें और उसमें रंग भरें।

या

बहन द्वारा भाई को राखी बाँधी जा रही है- इस पर चित्र बनायें और उसमें मनपसंद रंग भरें।

अध्यापन निर्देश : अध्यापक बच्चों को बताये कि 'क' और 'फ' दो व्यंजन ऐसे हैं जिनमें खड़ी पाई मध्य में होती है। इन व्यंजनों को जब किसी अन्य व्यंजन से संयुक्त किया जाता है तो मध्य पाई के बाद का थोड़ा-सा हिस्सा हटा दिया जाता है जैसे मक्खी, हफ़्ता आदि।

पाठ 17

शहीद

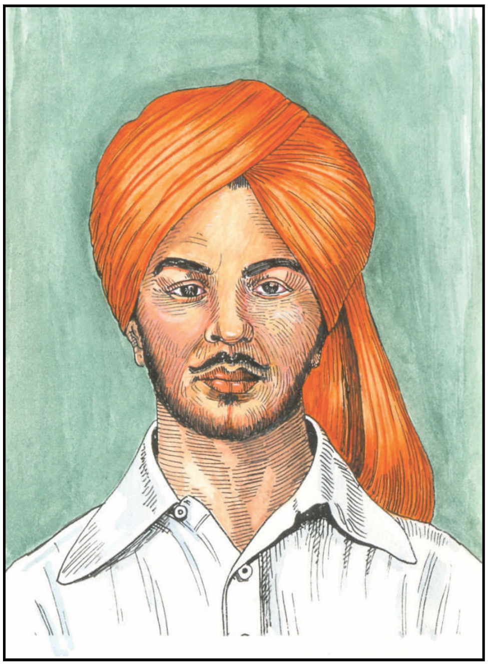

शहीद वही कहलाते हैं
जो काम देश के आते हैं।
जान देश पर लुटा गए,
वे भारत को रुशना (महका) गए।
रक्त के कतरे-कतरे से,
इतिहास नया रच जाते हैं॥
शहीद वही कहलाते हैं
लाड़ी मौत से शगन कराया
सेहरे वाला सर कटवाया।
भारत माँ की रक्षा हेतु,
बंद-बंद कटवाते हैं॥
शहीद वही कहलाते हैं,

देश प्रेम का पाठ पढ़ा गए,
आज़ादी का चमन खिला गए।
सरफ़रोशी के नगमों को,
फाँसी चढ़ते गाते हैं॥
शहीद वही कहलाते हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

शहीद	=	देश, धर्म या कर्त्तव्य के लिए अपने को कुर्बान कर देने वाला			
रुशना	=	नाम रोशन करना	रक्त	=	खून
कतरा	=	बूँद	लाड़ी	=	दुल्हन
चमन	=	क्यारी, फुलवारी, हरा-भरा स्थान	नगमा	=	गीत, राग
सरफ़रोशी	=	जान देने को तैयार होना			

बताओ

1. शहीद किसे कहते हैं?
2. अपने देश के लिए शहीद क्या-क्या करने को तत्पर रहते हैं?
3. उन शहीदों के नाम लिखो जिन्होंने देश के लिए बलिदान दिया?
4. उन शहीदों के नाम लिखो जिन्होंने धर्म की रक्षा के लिए बंद - बंद कटवाये?
5. सरफ़रोशी के नगमों को गाते-गाते उन शहीदों के नाम लिखो जिन्होंने हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूम लिया?

मुहावरों के अर्थ समझते हुए वाक्य बनाओ

देश के काम आना	=	शहीद होना	=	___________________________
जान लुटाना	=	न्योछावर होना	=	___________________________
नया इतिहास रचना	=	अद्वितीय काम करना	=	___________________________
सिर कटवाना	=	बलिदान देना	=	___________________________
बंद-बंद कटवाना	=	कुर्बान होना	=	___________________________

वाक्यों में प्रयोग करो

शहीद : ____

रुशना : ____

रक्त : ____

नगमा : ____

फाँसी : ____

इतिहास : ____

सरलार्थ करो

लाड़ी मौत से शगन कराया
सेहरे वाला सर कटवाया।
भारत माँ की रक्षा हेतु,
बंद – बंद कटवाते हैं ॥
शहीद वही कहलाते हैं।

यह नारा किसने दिया (बॉक्स में से चुनकर लिखो।)

महात्मा गाँधी, मुहम्मद इकबाल, राम प्रसाद बिस्मिल,
सुभाष चन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, जवाहर लाल नेहरू

1. तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा । ________________
2. स्वतंत्रता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। ________________
3. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा। ________________
4. सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है। ________________
5. करो या मरो। ________________
6. जय हिंद। ________________
7. आराम हराम है। ________________

पाठ 18

टेलिविज़न

शारदा और भानु ने दूरदर्शन देखने के लिए झटपट बस्ता एक तरफ रखा और रिमोट ऑन कर दिया, माँ रसोई में थी, पर यह क्या आज उनका मनपसंद कार्यक्रम नहीं आ रहा था। थके तो थे ही अतः ऊँघने लगे।

अचानक भानु के सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए सफेद वस्त्र में एक बूढ़ा पादरी बोला, ''मुझे बहुत गर्व होता है अपने आविष्कार की कल्पना पर।'' भानु चकित था, बोला, ''आप कौन?''

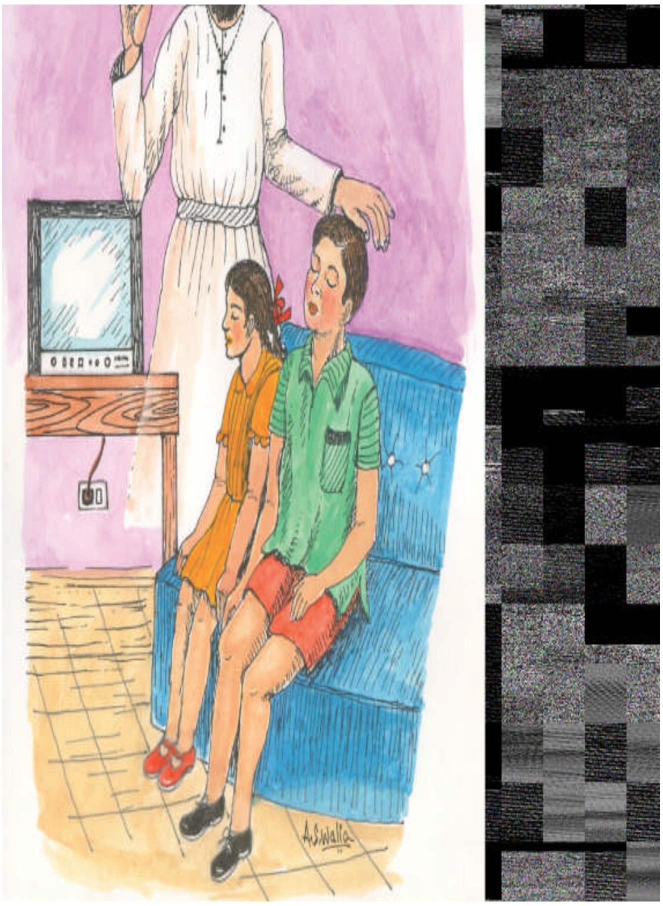

''मै मानव के मनोरंजन के लिए दूरदर्शन के आविष्कार की कल्पना करने वाला गिरिजाघर का पादरी जॉनलोगी हूँ।'' ''इटली के मारकोनी के आविष्कार रेडियो को सुनकर मेरे मन में चित्रों वाले यंत्र बनाने की इच्छा हुई थी। मैं सफल तो नहीं हुआ पर नींव डाल दी जिसे सन 1926 में इंग्लैंड के वैज्ञानिक वेयर्ड ने पूरा किया।'' तभी टेलिविज़न चहक उठा, ''तभी से वैज्ञानिक मुझे निरंतर सुधारते रहे आज नए-नए रूपों में इन सबके

सामने हूँ।'' देखो न दद्दू मैं इनका मनोरंजन करता हूँ, उपयोगी बातें सिखाता हूँ और ये हैं लड़-झगड़ कर सबका मन दु:खी करते हैं। ''सॉरी....

अच्छा दूरदर्शन का क्या अर्थ है?'' भानु ने पूछा। ''अरे दूरदर्शन, टेलिविज़न का हिंदी रूपांतर है, टेली का अर्थ दूर और विज़न का अर्थ है दर्शन दोनों मिलकर बन गए दूरदर्शन।'' अच्छा दूर-दूर से कार्यक्रम तुम तक कैसे पहुँचते हैं? भानु ने पूछा। ''मेरा प्रसारण दूरदर्शन केन्द्रों से होता है, जहाँ मूविंग कैमरे लगे होते हैं जिससे वहाँ के कार्यक्रमों के चित्र और आवाज़ रिकार्ड होकर ट्रांसमिशन द्वारा रेडियो तरंगों में परिवर्तित हो हमारे सैटों में लगे ग्रहण (रिसीविंग) यंत्र द्वारा चित्र नली (पिक्चर ट्यूब) पर प्रकट हो जाते हैं।''

''अच्छा! और देश-विदेश के कार्यक्रम, सीधा प्रसारण आदि।'' भानु ने उत्सुकता से पूछा। उपग्रहों द्वारा अरे, संचार उपग्रह जो पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं। इनकी सहायता से कार्यक्रम मुझ तक पहुँचते हैं।

मैं मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा का सशक्त आधार हूँ। प्रकृति के रहस्य, समुद्र की गहराइयों, पर्वत-शृंखलाओं, वन्य प्राणियों व मौसम की जानकारी दूर-दराज दुर्गम पहाड़ों में बसे लोगों तक पहुँचाता हूँ। दुनिया को एक सूत्र में पिरो विश्व बंधुत्व की भावना बढ़ाता हूँ। आज तो डिश टी.वी. के माध्यम से चैनलों व कार्यक्रमों की रेलमपेल है, तुम हो कि आपस में लड़ बैठते हो। जानते हो कितना बुरा लगता है मुझे। अधिक निकट से मेरे कार्यक्रम देखते हुए अपनी आँखें खराब कर लेते हो और अपनी आँखों पर मोटे-मोटे चश्मे लगवा लेते हो। ऊँची आवाज़ करके ध्वनि प्रदूषण फैलाते हो, अपना होमवर्क भूल जाते हो, खाना-पीना छोड़ स्वास्थ्य से खिलवाड़ करते हो।

''मैं तुम्हें सभ्यता-संस्कृति की बातें सिखाता हूँ तुम हो अनावश्यक चैनल की नकल कर, फैशन की ओर बढ़ जाते हो, ग़लत बातें न अपनाओ, बड़ों का सम्मान करो, समय की कद्र करो तो मैं अपने पर गर्व महसूस करूँ। उचित समय पर उचित कार्यक्रम का आनंद उठाओ। दिन रात मुझसे चिपके कुछ लोग बुद्धू की तरह बैठे रहते हैं तभी तो कुछ मुझे बुद्धू बक्सा कहने लग गए हैं जबकि मैं कितना उपयोगी वरदान हूँ, सबकी आँखों का तारा हूँ। भक्ति, विज्ञान, कृषि, व्यापार क्या-क्या गिनाऊँ? पर, तुम मेरा नाम मिट्टी में मिला देते हो। यह तो वही बात हुई करे कोई भरे कोई।''

'बस-बस मित्र हमें और शर्मिंदा मत करो। अब हम आपस में नहीं लड़ेंगे। अपने उपयोगी व मनोरंजन के कार्यक्रम ही देखेंगे वह भी उचित समय पर। माता-पिता, गुरुजनों का सम्मान करेंगे और सभी साथियों को ये बातें समझाएंगे।' ''शाबाश भानु यह हुई न बात।'' पादरी ने खुश होते हुए कहा। ''भानु....ओ.....भानु उठो भोजन कर लो।'' माँ ने

प्यार से जगाते हुए कहा। भानु के मस्तिष्क में बातें अभी गूँज रही थीं। वह आँखें मलता हुआ उठा और माँ से लिपट गया।

अभ्यास

शब्दार्थ

ऊँघना	=	नींद आना	उपग्रह	=	बड़े ग्रह की परिक्रमा करने वाला छोटा ग्रह
चकित	=	हैरान			
पादरी	=	ईसाई धर्म का पुरोहित	बंधुत्व	=	भाईचारा
आविष्कार	=	खोज	दुर्गम	=	कठिन
सशक्त	=	प्रभावशाली	गिरिजाघर	=	ईसाइयों का पूजा घर
रेलमपेल	=	भरमार			
प्रसारण	=	फैलाना	उपयोगी	=	कीमती

बताओ

1. पादरी कौन था?
2. दूरदर्शन का क्या अर्थ है?
3. दूरदर्शन का आविष्कार कब और किसने किया?
4. दूरदर्शन के कार्यक्रम कहाँ से प्रसारित होते हैं?
5. सीधा प्रसारण क्या होता है?
6. उपग्रह किसे कहते हैं और इसका क्या उपयोग है?
7. मारकोनी ने किसका आविष्कार किया?

चार या पाँच वाक्यों में उत्तर दो

1. दूरदर्शन के क्या लाभ हैं?
2. दूरदर्शन केंद्र से कार्यक्रम कैसे आप तक पहुँचते हैं?
3. दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखते समय क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए?
4. अधिक दूरदर्शन देखने से क्या हानियाँ हैं?
5. टेलिविज़न को क्या अच्छा नहीं लगता?

शुद्ध शब्द पर गोला लगाओ

विज्ञानक /वैज्ञानिक	उँघने/ऊँघने	गुरूजनों/गुरुजनों
आविश्कार/आविष्कार	रुपांतर/रूपांतर	मस्तिष्क/मस्तिश्क
विगिआनिक/वैज्ञानिक	श्रृंखला/शृंखला	व्यापार/व्यौपार

निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा व सर्वनाम शब्द चुनो

1. मैं मनोरंजन और ज्ञान का सशक्त आधार हूँ।
2. अपनी आँखों पर चश्मे लगवा लेते हो।
3. जानलोगी स्काटलैंड में गिरिजाघर का पादरी था।
4. मैं एक उपयोगी वरदान हूँ।
5. तुम मेरा नाम मिट्टी में मिला देते हो।

कोष्ठक में दिये शब्द का रूप बदलकर वाक्य पूरे करो

बेयर्ड एक **वैज्ञानिक** था।	(विज्ञान)
टेलिविज़न हमारे-----जीवन का अंग बन गया है।	(दिन)
मैं तुम्हें मनोरंजन व-----कार्यक्रम देता हूँ।	(उपयोग)
दूरदर्शन केंद्रों से कार्यक्रम -----किए जाते हैं।	(प्रसार)

इन्हें जानें

व्यक्ति का नाम	-	आविष्कार
एडीसन	-	बल्ब
माइक्रोफोन	-	ग्राहमबेल
मारकोनी	-	रेडियो
भाप का इंजन	-	स्टीफेंसन

टेलिविज़न दो शब्दों टेलि+विज़न के जोड़ से बना है। ऐसे ही कोई पाँच अन्य शब्द लिखें।

कुछ करने को :- अवसर पाकर अध्यापक के साथ नज़दीक के दूरदर्शन या रेडियो केंद्र पर जाकर वहाँ की कार्यविधि को जानें।

पाठ 19

हृदय परिवर्तन

सौरभ बारह-तेरह वर्ष का लड़का था। उसे पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक था। वह पाठ्य-पुस्तकें तो पढ़ता ही था। पुस्तकालय की पुस्तकें भी बहुत पढ़ता था। उसके लिए पुस्तकें ही ज्ञान-प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन था। वह कक्षा में सदैव प्रथम स्थान प्राप्त करता था। सभी अध्यापकों का प्रिय छात्र था और सभी छात्रों का सहयोगी था।

आज रविवार के दिन वह अपने घर में सुबह से महात्मा गाँधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' पढ़ रहा था। पुस्तक में गाँधी जी के जीवन के कुछ प्रसंगों से वह बहुत प्रभावित हुआ। वह अपने भीतर कुछ परिवर्तन अनुभव कर रहा था। रात को सोने से पूर्व उसने सोमवार की समय-सारणी के अनुसार अपना बस्ता तैयार किया और बिस्तर पर लेट गया। उसे नींद नहीं आ रही थी। वह बेचैनी में पुनः उठा और बस्ते में से सभी पाठ्य पुस्तकों को बाहर निकाल दिया। खाली बस्ते को कहानियों, उपन्यासों व ज्ञानवृद्धि की ढेर-सी किताबों से भर लिया और फिर सो गया।

सोमवार को विद्यालय की प्रार्थना-सभा के पश्चात् वह अपना बस्ता लेकर सीधा प्रधानाचार्य के ऑफिस में आ गया। प्रधानाचार्य अपने ऑफ़िस में नहीं थे। उसने जल्दी-जल्दी बस्ते में से सभी पुस्तकें निकाल कर मेज़ पर रख दी तथा अपराधी की भांति सिर झुकाए चुपचाप खड़ा हो गया। उसका हृदय धक-धक कर रहा था। उसी क्षण प्रधानाचार्य ने ऑफ़िस में प्रवेश किया। उन्होंने पुस्तकों पर विस्मित दृष्टि डालते हुए पूछा, "सौरभ, ये सब कौन-सी पुस्तकें हैं?"

सौरभ अभी साहस जुटा ही रहा था सब कुछ सत्य बताने व दंड पाने के लिए कि प्रधानाचार्य ने दुबारा पूछ लिया। वह काँपते व धीमे स्वर में बोला, " सर, ये पुस्तकें -----ये पुस्तकें-----मैंने विद्यालय के पुस्तकालय से चुराई हैं।"

"नहीं....नहीं.....ये काम तुम्हारा नहीं हो सकता।" प्रधानाचार्य ने बड़े विश्वास से कहा।

सौरभ उनसे आँखें नहीं मिला पा रहा था, नज़रें नीचे झुकाए हुए ही बोला, "सर, पिछले कुछ दिनों से ये पुस्तकें मैंने ही चुराई हैं। मेरी रुचि केवल पढ़ने में ही नहीं है बल्कि अच्छी-अच्छी पुस्तकें एकत्रित करने में भी है। मेरी इसी आदत ने मुझे लालची बना दिया और मैं पुस्तकालय से पुस्तकें चोरी करने लगा।"

"क्या तुम्हें तुम्हारे माता-पिता जी ने किताबें लौटाने के लिए प्रेरित किया है?" प्रधानाचार्य ने पूछा।

सौरभ की आँखों से आँसू बह निकले, वह लगातार बोलता गया, ''नहीं सर, उन्हें तो पता भी नहीं कि मैंने यह अनुचित कार्य किया है। कल गाँधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' पढ़ने के बाद मेरा हृदय परिवर्तित हुआ है। यदि पुस्तकें संग्रह करने के लालच ने मुझे चोरी करना सिखाया तो श्रेष्ठ पुस्तक ने मुझे ईमानदारी का पथ भी दिखाया है। मैं अब कभी चोरी नहीं करूँगा। मुझे क्षमा कर दीजिए।''

प्रधानाचार्य ने उसकी बातें ध्यानपूर्वक सुनीं। उन्होंने पुस्तकें अपनी अलमारी में रखवा ली और सौरभ को अपनी कक्षा में जाने की आज्ञा दी।

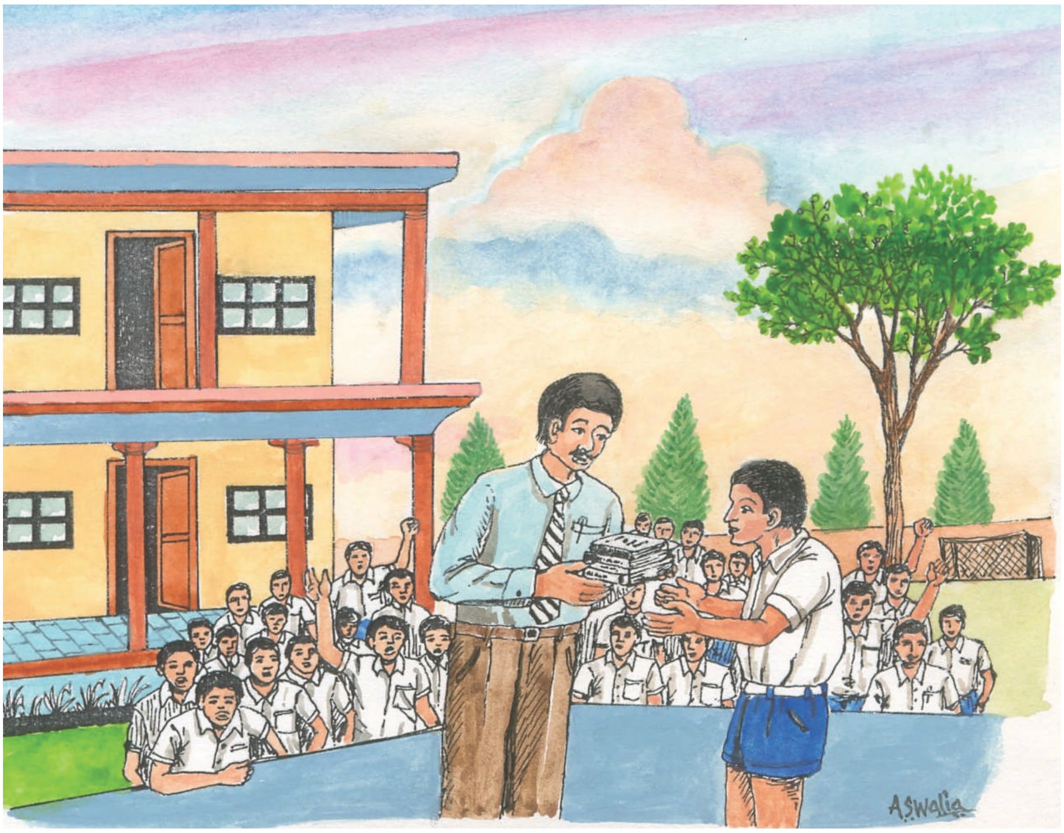

सौरभ चुपचाप अपनी कक्षा में आकर बैठ गया। उसने इस बात का ज़िक्र किसी से नहीं किया। प्रधानाचार्य द्वारा किसी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त न करने के कारण वह तनावग्रस्त था। किसी प्रकार की सज़ा न मिलने के कारण उसके मन पर बोझ था।

तभी सभी कक्षाओं को सूचित किया गया कि आज 14 नवम्बर के दिन बाल-दिवस मनाया जाएगा। इस अवसर पर आधी छुट्टी के बाद सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया जाएगा। आधी छुट्टी के बाद सभी अध्यापक व विद्यार्थी विद्यालय के प्रांगण में इकट्ठे हो गए। सभी छात्र कतारों में बैठ गए। सौरभ भी गुमसुम, उदास-सा सबसे पीछे आकर बैठ गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम आरम्भ हो गया। बच्चे प्रसन्नता से कविता, भाषण व गायन में भाग ले रहे थे। किंतु सौरभ को कुछ भी रुचिकर नहीं लग रहा था।

अचानक माइक पर सौरभ का नाम पुकारा गया और उसे मंच पर बुलाया गया। वह भयभीत हो गया कि अभी सबके सामने पुस्तक चोर सौरभ को सज़ा सुनाई जाएगी।

''सौरभ! मंच पर आओ।'' प्रधानाचार्य के इन स्वरों से सौरभ के मन में अनेक नकारात्मक विचार पनपने लगे। वह उठकर बोझिल कदमों से मंच की ओर जा ही रहा था कि माइक पर बोले जा रहे इन शब्दों ने उसकी चाल में तेज़ी ला दी, ''आज बाल दिवस के अवसर पर सबसे 'ईमानदार बालक' का पुरस्कार दिया जाता है........ सौरभ को।''

सौरभ की आँखों से अश्रु बह निकले। मंच पर पहुँचकर उसने प्रधानाचार्य के चरण स्पर्श किए तो उन्होंने उसे गले लगा लिया। सौरभ को पुरस्कार में पुस्तकें देते हुए उन्होंने धीरे से उसके कान में कहा, ''मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है क्योंकि तुम्हारी ईमानदारी और सच्चाई ने तुम्हारी बुराई पर विजय पा ली है।''

बच्चों की तालियों की आवाज़ में सौरभ के कानों में केवल यही शब्द गूँज रहे थे, तुम्हारी ईमानदारी और सच्चाई.....

अभ्यास

शब्दार्थ

पुस्तकालय = वह भवन जहाँ अध्ययन हेतु पुस्तकों का संग्रह किया जाता है।

सर्वोत्तम	= सबसे अच्छा	आत्मकथा	= अपने जीवन की कथा
समय सारणी	= समय की सूची	एकत्रित	= इकट्ठा किया हुआ
श्रेष्ठ	= अति उत्तम	ज़िक्र	= चर्चा
सांस्कृतिक समारोह	= संस्कृति संबंधी कार्यक्रम	प्रांगण	= आंगन
अश्रु	= आँसू		

बताओ

1. सौरभ को किसका शौक था?
2. वह रविवार के दिन कौन-सी पुस्तक पढ़ रहा था?
3. प्रार्थना सभा के पश्चात् सौरभ ने प्रधानाचार्य के ऑफिस में जाकर क्या किया?
4. सौरभ ने पुस्तकें कहाँ से और क्यों चुराई थीं?
5. सौरभ का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ?
6. विद्यालय में 14 नवम्बर को कौन-सा दिवस मनाया गया?
7. सौरभ का नाम माइक पर पुकारे जाने पर वह भयभीत क्यों हो गया?

8. बाल दिवस के अवसर पर सौरभ को कौन-सा पुरस्कार दिया गया?

9. सौरभ को पुरस्कार देते हुए प्रधानाचार्य ने धीरे-से उसके कान में क्या कहा?

वाक्य बनाओ

ज्ञानवृद्धि = ______________________________

अश्रु = ______________________________

अपराधी = ______________________________

संग्रह = ______________________________

श्रेष्ठ = ______________________________

पुरस्कार = ______________________________

अनुचित = ______________________________

अ के प्रयोग से विपरीत शब्द बनाओ

प्रिय = **अप्रिय**

सहयोगी = _________ सत्य = _________

ज्ञान = _________ विश्वास = _________

प्रसन्नता = _________

पर्यायवाची शब्द लिखो

रात = **निशा, रजनी**

दिन = _________

घर = _________

माता = _________

पिता = _________

पथ = _________

शब्दों के शुद्ध रूप लिखो

पुसतकालय = **पुस्तकालय**

महातमा = _________ विशवास = _________

परीवर्तन = _________ आग्या = _________

ह्रिदय = _________ अनुचीत = _________

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो

अपने जीवन की कथा = **आत्मकथा**

अपराध करने वाला = __________

सहयोग करने वाला = __________

जिसकी आत्मा महान हो = __________

जहाँ अध्ययन हेतु पुस्तकों का संग्रह किया जाता है= __________

जहाँ विद्‌यार्थी विद्‌या ग्रहण करते है= __________

करो

1. सप्ताह के दिनों के नाम लिखो।
2. विद्‌यालय में मनाए जाने वाले दिवसों के नाम लिखो।
3. महापुरुषों द्‌वारा लिखी पुस्तकों के नाम लिखो।
4. क्या आपका मन भी कभी परिवर्तित हुआ है?

इस तरह का कोई अपना अनुभव लिखें या कक्षा में बतायें।

पाठ 20

प्रिय लोक-खेलें

[खेलों की घंटी। अध्यापक ने बच्चों को खेल के मैदान में बुलाया। बच्चे आकर अध्यापक के इर्द-गिर्द बैठ गए। अध्यापक कक्षा में बच्चों से लोक-खेलों के बारे में बातें कर रहा है]

अध्यापक : बच्चो! क्या आपने कभी लोक-खेलों के बारे में सुना है?

रमेश : सर, खेलें तो होती हैं, ये लोक-खेलें क्या हैं?

अध्यापक : जिनके आगे लोक शब्द लगता है जैसे लोक-गीत, लोक-नाच, लोक संगीत, लोक-कहानियाँ, आदि इन विधाओं के सृजक नहीं होते। ये सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी सफर तय करती हैं। जिन लोगों ने इनका सृजन किया है उनके नाम समय के बीतने के साथ साथ कहीं खो गए। इसी प्रकार ये लोक-खेलें हैं। इन खेलों के बनाने वाले का भी कोई नाम नहीं है।

सुरेश : हैरानी की बात है सर, सदियों से ऐसे ही चली आ रही हैं?

अध्यापक : हाँ, हमारे बाप-दादा और उनके बाप-दादाओं के भी बाप-दादा यही खेलें खेला करते थे।

राजन : सर, फिर तो इन खेलों का बड़ा महत्व रहा होगा?

अध्यापक : हाँ राजन! आपने ठीक कहा। इन खेलों के साथ लोगों का गहरा संबंध है।

गोपाल : तब तो ये खेलें हमारी संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रही होंगी?

अध्यापक : रही होंगी नहीं, अब भी हैं। ये तो हमारी संस्कृति की धरोहर हैं। ये खेलें लोगों के स्वभाव को निखारती हैं और मनोरंजन का साधन भी रही हैं।

करण : सर, मनोरंजन का साधन! वह कैसे?

अध्यापक : हाँ, तब मनोरंजन के साधनों की बहुत कमी थी। लोग इन खेलों के माध्यम से मन को बहलाते थे। अखाड़ों में 'कुश्ती' देखने लोग दूर दूर से आते। मेले जैसा माहौल हुआ करता था।

रमेश : सर, अब हमें कुछ लोक-खेलों के नाम बताएँ।

अध्यापक : गुल्ली-डंडा। [अध्यापक के गुल्ली डंडा कहने से सभी विद्यार्थी हँस दिए]

अध्यापक : नहीं, ये हँसने वाली बात नहीं। यही, सबसे प्राचीन लोक-खेल है। इसके सृजक का कोई नाम नहीं है।

गोपाल : सर, आँख मिचौनी.......

अध्यापक : शाबाश........

करण : कोटला छपाकी.......

राजन : भंडा-भंडारिया , ऊँच-नीच.......

अध्यापक : भई वाह! आप लोग तो जानते हो लोक-खेलों के बारे में.......।

सुमन : स्टापू, समुंद्र और मछली........। सहसा सुमन बोली जैसे कुछ याद आया हो।

करण : लेकिन इस खेल का नाम तो 'हरा समुंद्र' है न सर।

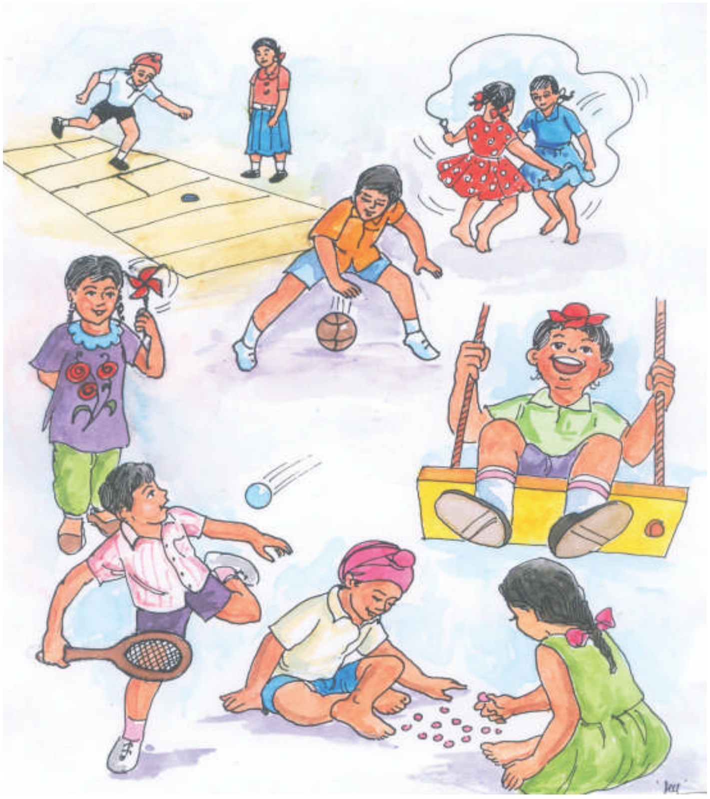

अध्यापक : क्योंकि ये खेलें क्षेत्रीय हुआ करती हैं इसलिए इनके नामों में थोड़ा-बहुत अंतर हो सकता है। इस प्रकार हर देश, हर प्रांत की अपनी-अपनी लोक-खेलें होती हैं।

रानी : क्या 'रोड़े' (गीटे) खेल को भी इन्हीं खेलों में शामिल किया जा सकता है?

अध्यापक : और नहीं तो क्या। 'पीचो बकरी', रस्सी टपणा आदि भी लोक-खेलें ही हैं।

राजन : कोटला छपाकी खेल को खेलकर बड़ा मज़ा आता है। हमें खेलाओ न सर।

गोपाल और सुरेश : सर खेलाओ न, प्लीज़!

अध्यापक : चलो ठीक है.....

रमेश : क्या हम सब खेल सकते हैं?

अध्यापक : इस खेल में खिलाड़ियों की कोई निश्चित गिनती नहीं होती। आम तौर पर दस से लेकर पच्चीस तीस तक खेलते हैं...... ऐसे करो कुछ बच्चे गोल दायरा बनाकर बैठो। अब एक चुनरी लेकर उसे मरोड़ कर एक कोटला बना लो। (करण अध्यापक के कहे अनुसार काम कर रहा है और बच्चों ने एक गोलदायरा बना लिया है अध्यापक के अनुसार करण की पहली बारी है।)

करण : ''कोटला छपाकी जुम्मे रात आई ऐ'' (करण अपने कमीज़ के अगले हिस्से में कोटला छिपा कर बच्चों के पीछे-पीछे दौड़ता है।)

सारे बच्चे : ''जेहड़ा अग्गे पिच्छे देखे उस दी शामत आई ऐ'' (सारे बच्चे पीछे-पीछे गाते हैं और करण चुपके से कोटला रमेश के पीछे रख देता है राजन

पीछे देखने लगता है तो करण उसकी पीठ पर दो-तीन कोटले जमा देता है।)

राजन : ये क्या सर! मेरे करण ने कोटले जमा दिए। (राजन करण की शिकायत करने लगा)

अध्यापक : तू पीछे देखने की कोशिश कर रहा होगा, तभी तो राजन ने ऐसा किया।

राजन : थोड़ा-सा तो देखा था सर!

करण : ''कोटला छपाकी जुम्मे रात आई ऐ''
(करण फिर से बच्चों के पीछे-पीछे गाता हुआ दौड़ता है और कोटला गोपाल के पीछे रख देता है)

सारे बैठे बच्चे : ''जेहड़ा अग्गे पीछे देखे उसदी शामत आई ऐ''
(करण चक्कर पूरा करके गोपाल के पास आता है और कोटला उसके जमाना शुरू करता है। गोपाल आगे-आगे भागता है। करण पीछे-पीछे कोटला लिए दौड़ता और भाग कर अपने स्थान पर बैठ जाता है। इस तरह एक बार करण रमेश के पीछे चुपके से रख देता है। तो रमेश झट से कोटला उठा कर करण के पीछे भागता है और उसकी पीठ पर दो-तीन कोटले जमा देता है। करण को अगर खाली जगह बैठने के लिए न मिलती तो उसे रमेश से और कोटलों की मार खानी पड़ती। करण भागकर खाली जगह में बैठ गया।)
इतने में घंटी बज जाती है। अध्यापक की आज्ञा से बच्चे खुशी-खुशी अपनी कक्षा की ओर प्रस्थान करते हैं।

अभ्यास

शब्दार्थ

प्रदान	=	देना	सृजक	-	रचने या बनाने वाला
प्लीज़	=	कृपया	धरोहर	-	अमानत
अखाड़ा	=	वह स्थान जहाँ पर कुश्ती होती है			

बताओ

1. लोक खेलें क्या होती हैं?
2. खेलें मनोरंजन के साथ-साथ और क्या करती हैं?
3. कुछ लोक-खेलों के नाम लिखो।

4. कोटला-छपाकी खेल कैसे खेला जाता है?

5. कोटला-छपाकी खेल खेलते समय कौन-सा गीत गाया जाता है?

वर्ग पहेली में कुछ लोक खेलों के नाम छिपे हैं, ढूँढ़कर लिखो

को	पी	चो	ब	क	री	क	ह
ट	गु	स्	टा	पू	ग	घ	रा
ला	ल्	ऑ	ख	मि	चौ	नी	स
घ	ली	ह	भ	ब	र	श	मु
पा	ड	ऊँ	च	नी	च	ग	न्द
की	ण	म	छ	ड	क	ह	र
भा	डा	ख	भ	ण	डा	रि	या

1. ____________________
2. ____________________
3. ____________________
4. ____________________
5. ____________________
6. ____________________
7. ____________________
8. ____________________

नये शब्द बनाओ

लोक + गीत = ________

लोक + संगीत = ________

लोक + नाच = ________

लोक + उक्तियाँ = **लोकोक्तियाँ**

लोक + कहानियाँ = ________

लोक + खेल = ________

लोक + परम्परा = ________

लोक + आचार = ________

वाक्यों में प्रयोग करो

अध्यापक ________________________

संस्कृति ________________________

बाप-दादा ________________________

सृजक ________________________

धरोहर ________________________

मनोरंजन ________________________

साधन ________________________

कोई दो लिखो

1. लोक गीत की पंक्तियाँ	1. जुत्ती कसूरी पैरी ना पूरी------	2. -----------
2. लोक नाच के नाम	-------------	-------------
3. लोकोक्तियाँ	------------	-------------

करो

1. लोक-खेलों के बारे में पता करो और चित्र चिपकाओ।
2. कक्षा में अध्यापक की अनुमति से स्टापू, कोटला छपाकी, गीटे, आँख-मिचौनी आदि लोक-खेलों को खेलें।

योग्यता विस्तार

इन लोक-नृत्यों को भी जानें।

लोक नृत्य (नाच)	प्रदेश
गिद्दा-भँगड़ा	पंजाब
स्वांग	हरियाणा
झूलन लीला- गणगौर	राजस्थान
गरबा- डांडिया	गुजरात
बिहु	असम
भरत नाट्यम	तमिलनाडु
मणिपुरी	मणिपुर
ओडिसी	उड़ीसा
कथकली	केरल
कुचिपुड़ि	आन्ध्र प्रदेश
बिदेशिया	बिहार

जागृति

आज लोक खेलों का प्रचलन सिमटता जा रहा है। इसका मुख्य कारण इक्कीसवीं सदी में मानव की बदलती जीवन शैली है। आज माता-पिता, बच्चे, अध्यापक तथा समाज के अन्य वर्ग एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ में लगे हुए हैं। जिनके कारण ये खेलें लुप्तप्राय हो रही हैं। अध्यापकों, अभिभावकों से अनुरोध है कि बच्चों को इन खेलों के प्रति प्रोत्साहित करें ताकि उनका बचपन न छिन जाये।

पाठ 21

जीवन का लक्ष्य

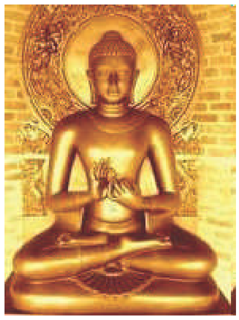

बच्चो, पहले अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ,
फिर उसे पाने के लिए जुट जाओ।
बाधाएँ बहुत आयेंगी,
तुम्हें बहुत डरायेंगी,
लक्ष्य से न नज़र हटाना।
आगे कदम बढ़ाते जाना॥

अर्जुन ने चिड़िया की आँख को लक्ष्य बनाया,
तभी आँख-भेदन कर पाया।
एकलव्य ने मिट्टी की प्रतिमा को गुरु बनाया,
तभी वीर धनुर्धर बन पाया।
महात्मा बुद्ध ने दया प्रेम को अपनाया,
और यही संदेश लोगों में पहुँचाया।
मदर टेरेसा ने समाज सेवा को लक्ष्य बनाया,
और जीवन सारा दुखियों में लगाया।

बच्चो, पहले अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ
फिर उसे पाने के लिए जुट जाओ।
बाधाएं बहुत आयेंगी,
तुम्हें बहुत डरायेंगी,
लक्ष्य से न नज़र हटाना
आगे कदम बढ़ाते जाना॥

कल्पना चावला ने अंतरिक्ष उड़ान को लक्ष्य बनाया,
विश्व में भारत का मस्तक ऊँचा उठाया।

सचिन ने क्रिकेट को मंज़िल बनाया,
जगत में राष्ट्र का नाम चमकाया।
अभिनव बिंद्रा ने निशानेबाज़ी को अपनाया,
और ओलम्पिक में भारत को स्वर्णपदक दिलाया।
बचेंद्री पाल ने पर्वतारोहण को लक्ष्य बनाया,
और एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली
प्रथम भारतीय महिला का खिताब पाया।

बच्चो, पहले अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ,
फिर उसे पाने के लिए जुट जाओ।
बाधाएँ बहुत आयेंगी,
तुम्हें बहुत डरायेंगी,
लक्ष्य से न नज़र हटाना।
आगे कदम बढ़ाते जाना॥

अभ्यास

शब्दार्थ

लक्ष्य	=	उद्देश्य	अंतरिक्ष	=	आकाश
बाधाएँ	=	रुकावटें	पर्वतारोहण	=	पर्वतों पर चढ़ना
भेदन	=	छेदन	चोटी	=	पहाड़ का सबसे ऊँचा भाग, शिखर
धनुर्धर	=	धनुष बाण चलाने वाला	स्वर्णपदक	=	सोने का तमगा
			खिताब	=	उपाधि, पदवी

बताओ

1. अर्जुन ने किसकी आँख को लक्ष्य बनाया था?
2. एकलव्य वीर धनुर्धर कैसे बना?
3. महात्मा बुद्ध ने लोगों को क्या संदेश दिया?
4. सारा जीवन दुखियों की सेवा में लगाने वाली महिला कौन थी?
5. कल्पना चावला का लक्ष्य क्या था?
6. सचिन का नाम किस खेल से जुड़ा हुआ है?

7. अभिनव बिंद्रा ने ओलम्पिक में भारत को कौन-सा पदक दिलाया है?

8. एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचने वाली प्रथम भारतीय महिला कौन है?

वाक्य बनाओ

लक्ष्य = ______________________

प्रतिमा = ______________________

संदेश = ______________________

अंतरिक्ष = ______________________

मंज़िल = ______________________

पर्वतारोहण = ______________________

विश्व = ______________________

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो

धनुष बाण चलाने वाला = **धनुर्धर**

पर्वतों पर चढ़ना = ________

निशाना लगाना = ________

आँख छेदना = ________

पर्यायवाची शब्द लिखो

आँख = **नयन, नेत्र**

गुरु = ________

प्रेम = ________

मस्तक = ________

स्वर्ण = ________

मिट्टी = ________

संयुक्त अक्षर से नया शब्द बनाओ

शब्द	संयुक्त अक्षर	नया शब्द
बुद्ध	द्ध	युद्ध
महात्मा	त्म	_____
मस्तक	स्त	_____
मिट्टी	ट्ट	_____

सही मिलान करो

कल्पना चावला	निशाने बाज़ी
बचेंद्री पाल	क्रिकेट
सचिन	अन्तरिक्ष उड़ान
अभिनव बिंद्रा	पर्वतारोहण

'र' के विभिन्न रूप के शब्द बनाओ

अर्जुन = ____ ____ ____

क्रिकेट = ____ ____ ____

राष्ट्र = ____ ____ ____

करो :

अर्जुन, एकलव्य, महात्मा बुद्ध, मदर टेरेसा, कल्पना चावला, सचिन तेंदुलकर, अभिनव बिंद्रा तथा , बजें द्री पाल, इन सबके चित्र एकत्रित करो और अपनी कॉपी में चिपकाओ। इनके बारे में अध्यापक से जानें।

अध्यापन निर्देश : अध्यापक बच्चों को बताये कि आप खड़ी पाई और मध्य पाई वाले व्यंजनों को संयुक्त करना सीख चुके हैं। इनके अतिरिक्त छ, द, ट, ठ, ड ढ, ह आदि व्यंजन ऐसे हैं, जिन्हें संयुक्त करना हो तो इनके नीचे हलन्त (्) लगाकर इनका आधा रूप दर्शाया जाता है। जैसे बुद्धि, गड्डी, चिह्न, पट्ठा आदि